

जटामसी संरक्षण कार्ययोजना

(२०८१-२०९०)



नेपाल सरकार
वन तथा वातावरण मन्त्रालय
वनस्पति विभाग
थापाथली, काठमाडौं
२०८०



जटामसी संरक्षण कार्ययोजना

(२०८१-२०९०)



नेपाल सरकार
वन तथा वातावरण मन्त्रालय
वनस्पति विभाग
थापाथली, काठमाडौं
२०८०



सम्पादन

डा. निर्मला जोशी प्रधान, वनस्पति विज्ञ
डा. राजेन्द्र के. सी., महानिर्देशक, वनस्पति विभाग
सरोज कुमार चौधरी, उप-महानिर्देशक, वनस्पति विभाग
ज्वाला श्रेष्ठ, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकृत, वनस्पति विभाग
कल्यना शर्मा (द्वकाल), वैज्ञानिक अधिकृत, वनस्पति विभाग
डा. अनन्त भण्डारी, वन तथा भू-परिधि कार्यक्रम प्रमुख, डब्लुडब्लुएफ नेपाल
अस्मिता सिंग्देल, वन सहायक, वन तथा भू-परिधि कार्यक्रम, डब्लुडब्लुएफ नेपाल

पुनरावलोकन

शिव कुमार वाग्ले, महानिर्देशक, वन तथा भू-संरक्षण विभाग
डा. विनोद प्रसाद देवकोटा, सचिव, वन, वातावरण, उद्योग तथा पर्यटन मन्त्रालय, कर्णाली प्रदेश
दिपक ज्वाली, उप-महानिर्देशक, वन तथा भू-संरक्षण विभाग
प्रा. डा. सुरेश कुमार धिमिरे, वनस्पति शास्त्र केन्द्रीय विभाग, त्रि. वि., कीर्तिपुर
डा. भिष्म प्रसाद सुवेदी, एन्साब नेपाल
पुष्प धिमिरे, एन्साब नेपाल
डा. दिपेश प्याकुरेल, वनस्पति विज्ञ

प्रकाशन

नेपाल सरकार, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, वनस्पति विभाग, काठमाडौं, नेपाल

स्वीकृत मिति

२०८०/११/०६ (वनस्पति विभाग)

उद्धरण

वनस्पति विभाग, २०८०, जटामसी संरक्षण कार्ययोजना (२०८१-२०९०), वनस्पति विभाग, वन तथा वातावरण मन्त्रालय, काठमाडौं, नेपाल

फोटो सौजन्य

आवरण पृष्ठ तस्वीर, © दिपेश प्याकुरेल

©वनस्पति विभाग, २०८०



नेपाल सरकार
वन तथा वातावरण मन्त्रालय



पो.ब.नं. : ३९८७
सिंहदरवार, काठमाडौं

पत्र संख्या :-

चलानी नं. :-

मिति :-

शब्द सुमन

नेपाल वन, वातावरण र जैविक विविधता संरक्षण सम्बन्धी विभिन्न महासचिवहरुको पक्ष राष्ट्र भै राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा प्रतिवद्धता व्यक्त गरे अनुरूप आफ्नो दायित्व पूरा गर्न क्रियाशील छ। यसै सन्दर्भमा अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा बढ्दो माग रहेको र संरक्षणको दृष्टिले अति संवेदनशील जटामसी जस्तो महत्वपूर्ण प्रजातिको संरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापन गर्न वनस्पति विभागले दश वर्षीय जटामसी संरक्षण कार्ययोजना तयार गरेकोमा अत्यन्त खुशी लागेको छ। नेपालको आर्थिक विकासमा टेवा पुर्याउने क्षेत्रहरु मध्ये जडीबुटी पनि एक प्रमुख क्षेत्र रहेकोमा यस किसिमको कार्ययोजनाले जडीबुटीको दिगो संकलन, सदुपयोग, संरक्षण र समग्र व्यवस्थापनमा प्रभावकारी भूमिका खेल्ने विश्वास छ।

जटामसी औषधीय गुण भएको तथा स्थानीयको जीविकोपार्जनमा प्रत्यक्ष रूपमा प्रभाव पार्न सक्ने एक महत्वपूर्ण वनस्पति हो। यसको दिगो व्यापारले देशको अर्थतन्त्रमा टेवा पुर्याउन मद्दत गर्दछ। समुन्द्री सतहबाट करीब ३२०० मिटर भन्दा माथिको उचाइमा पाइने यो वनस्पतिको फैलावट नेपाल, भारत, पाकिस्तान, भूटान, चीन र म्यानमारमा रहेको छ। नेपालको करीब ३० जिल्लामा पाइने यस वनस्पति कर्णाली प्रदेशको उच्च हिमाली जिल्लामा उल्लेख्य मात्रामा पाइन्छ। नेपालमा यस वनस्पतिको अव्यवस्थित सङ्कुलन तथा हालसम्म असल खेती प्रविधिको विकास हुन नसक्नु यसको संरक्षण र दिगो व्यवस्थापनको चुनौतीको रूपमा रहेको छ भने यस वनस्पतिलाई व्यवसायीकरणमा लैजानु आजको आवश्यकता पनि बनेको छ। अत्याधिक दोहनको कारण प्राकृतिक अवस्थामा यस वनस्पतिको संख्यामा कमी आएकोले यो वनस्पति सार्विटिसको अनुसूची-२ मा समेत रहेको अवस्था छ। यी सबै चुनौतीहरुलाई हृदयंगम गर्दै वनस्पति विभागले यस वनस्पतिको असल खेती प्रविधि समेत विकास गर्ने लक्ष्यका साथ जटामसी संरक्षण कार्ययोजना तयार गरेको छ। यस कार्यको लागि म वनस्पति विभाग, यसका महानिर्देशक डा. राजेन्द्र के. सी., उप-महानिर्देशक सरोज कुमार चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकृत ज्वाला श्रेष्ठ र वैज्ञानिक अधिकृत कल्पना शर्मा (ठकाल) लगायत सम्बद्ध सबैलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु।



वर्तमान अवस्थामा विभिन्न क्षेत्रमा कार्ययोजनाहरु निर्माण भई रहँदा ती कार्ययोजनाहरुको प्रभावकारी कार्यान्वयन मुख्य चुनौतीको विषय रहेकोले वनस्पति विभागले पनि यस कार्ययोजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयनतर्फ ध्यान दिन जरुरी छ।

यस कार्ययोजनालाई संघीय संरचना बमोजिम कार्यान्वयनमा लैजानमा तीनै तहका सरकारको उत्ति नै भूमिका रहन्छ। सबैले तत् तत् क्षेत्रबाट आफ्नो जिम्मेवारी बहन गरेमा यस कार्ययोजनाले मूर्त रूप पाउने विश्वास मैले लिएको छु। यस कार्ययोजनालाई प्रभावकारी रूपमा अधिक बढाउन वन तथा भू-संरक्षण विभाग, गैरसरकारी निकाय, वन उपभोक्ता समूहहरु, डिभिजन वन कार्यालय र प्रदेश सरकारको समेत ठूलो भूमिका रहने हुनाले विभागले सहकार्य गरी अधिक बढन नितान्त आवश्यक देख्छु। त्यस्तै यस कार्ययोजनाबाट प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूपमा लाभान्वित हुने सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह तथा निजी क्षेत्रहरूले पनि आफ्नो तर्फबाट पुर्याउन सक्ने योगदान प्रति सचेत हुन सकेमा जडीबुटीबाट नेपालको अर्थतन्त्रलाई दरिलो बनाउन सक्ने प्रचुर सम्भावना देखिन्छ। अनुगमन तथा मूल्याङ्कनबाट नै कुनै पनि कार्यको प्रभावकारिता दर्शने हुनाले यस कार्ययोजनाको पनि नियमित अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको पाठोलाई विशेष ध्यान दिन आवश्यक छ।

यति भन्दै म यस कार्ययोजना तयारीमा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूपमा संलग्न सम्पूर्ण वनस्पति विभाग परिवार, प्राविधिक रूपमा सहयोग पुर्याउने WWF Nepal लगायत विभिन्न संघ/संस्था, वनस्पति विज्ञहरुलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु र यस कार्ययोजनाको सफलताको पनि कामना गर्दछु।

डा. दीपक कुमार खराल
सचिव

फोन नं. :- ४२११७०३, ४२११७३७, ४२११५९९, ४२११८६४, फ्याक्स नं. :- ४२११८६८

संक्षेपीकरण

| | |
|------------|---|
| गापा | गाउँपालिका |
| गैसस | गैर सरकारी संस्था |
| नपा | नगरपालिका |
| नेविप्रप्र | नेपाल विज्ञान तथा प्रविधि प्रतिष्ठान |
| प्रका | प्रहरी कार्यालय |
| प्रब्रम | प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय |
| प्रानि | प्राज्ञिक निकाय |
| भका | भन्सार कार्यालय |
| त्रिवि | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| वअके | वनस्पति अनुसन्धान केन्द्र |
| वअप्रके | वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र |
| वउस | वन उपभोक्ता समिति |
| वभूवि | वन तथा भू-संरक्षण विभाग |
| ववि | वनस्पति विभाग |
| राकृअके | राष्ट्रिय कृषि अनुसन्धान केन्द्र |
| रावउ | राष्ट्रिय वनस्पति उद्यान |
| रानिका | राष्ट्रिय निकुञ्ज कार्यालय |
| स्थास | स्थानीय समुदाय |
| स्थात | स्थानीय तह |
| संक्षेका | संरक्षण क्षेत्र कार्यालय |
| सावउस | सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति |
| ANSAB | Asia Network for Sustainable Agriculture and Bioresources |
| APG | Angiosperm Phylogeny Group |
| CAMP | Conservation Assessment and Management Plan |
| CITES | Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora |
| DoFSC | Department of Forests and Soil Conservation |
| DoF | Department of Forests |
| DPR | Department of Plant Resources |
| GC-MS | Gas Chromatography and Mass Spectrometry |
| GoN | Government of Nepal |
| IPA | Important Plant Area |
| IUCN | International Union for Conservation of Nature |
| KATH | National Herbarium and Plant Laboratories |
| NDF | Non-Detriment Finding |
| NPRL | Natural Products Research Laboratory |
| NWFPs | Non-Wood Forest Products |
| pH | Potential of Hydrogen |
| RT | Retention Time |
| TIC | Total Ion Count |
| T.S. | Transverse Section |
| V.S. | Vertical Section |
| WHO | World Health Organization |

विषयसूची

| | |
|---|-----------|
| प्राक्कथन | क |
| संक्षेपिकरण | ख |
| सारांश | ग |
| परिच्छेद १ : सन्दर्भ | १ |
| १. परिचय | १ |
| १.१ कार्ययोजनाको सान्दर्भिकता | १ |
| १.२ कार्ययोजना निर्माण प्रक्रिया र विधि | २ |
| परिच्छेद २ : पृष्ठभूमि | ३ |
| २.१ जटामसी: परिचय | ३ |
| २.२ भौगोलिक वितरण र फैलावट | ४ |
| २.३ वानस्पतिक विवरण | ७ |
| २.४ जटामसीको सुगन्धित तेलको विश्लेषण | १३ |
| २.५ परिस्थितिकी र वातावरण | १६ |
| २.६ प्रजनन र जीवन चक्र | १७ |
| २.७ उपयोगिता | १७ |
| २.८ जटामसी संरक्षणको अवस्था | १८ |
| २.९ प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको सांख्यिक स्थिति | १८ |
| २.१० काण्ड सङ्ग्रहन गर्ने उपयुक्त समय र परिमाण | १९ |
| २.११ सङ्ग्रहन पश्चातको प्रविधि | २० |
| २.१२ बजारको अवस्था | २० |
| २.१३ साईटिस (CITES) र जटामसी | २२ |
| परिच्छेद ३ : चुनौती र अवसर | २४ |
| ३.१ चुनौतीहरु | २४ |
| ३.२ अवसरहरु | २४ |
| ३.३ कानूनी तथा नीतिगत दस्तावेज | २५ |
| परिच्छेद ४ : संरक्षणका प्रयासहरु | २६ |
| ४.१ राष्ट्रिय तथा स्थानीयस्तरबाट भए गरेका संरक्षणका प्रयासहरु | २६ |
| ४.२ अन्तर्राष्ट्रियस्तरबाट भए गरेका संरक्षणका प्रयासहरु | २७ |
| परिच्छेद ५ : संरक्षण कार्ययोजना | २८ |
| ५.१ लक्ष्य | २८ |
| ५.२ उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति | २८ |
| ५.३ प्रस्तावित बजेट तथा कार्यक्रम | ३४ |
| परिच्छेद ६ : कार्यान्वयन व्यवस्था | ४३ |
| ६.१ कार्यान्वयन | ४३ |
| ६.२ वित्तीय व्यवस्था | ४३ |
| ६.३ कार्ययोजना अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा समीक्षा | ४३ |
| सन्दर्भ सामग्री | ४४ |
| अनुसूचीहरु | ४६ |
| अनुसूची-१ जटामसीको दिगो सङ्ग्रहन तथा व्यवस्थापनका उपायहरु | ४६ |
| अनुसूची-२ जटामसी संरक्षण कार्ययोजना कार्यान्वयनको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन योजना | ४८ |

फोटोहरू

- फोटो १ : प्राकृतिक वासस्थानमा फुलेको जटामसी
- फोटो २ : विश्वमा जटामसी पाइने देशहरु
- फोटो ३ : विश्व मानचित्रमा जटामसीको फैलावट
- फोटो ४ : KATH मा रहेको जटामसीको दैलेख (वायाँ) र सोलुखुम्बु (दायाँ) बाट सङ्गलन गरिएको हर्वेरियमको नमूनाहरु
- फोटो ५ : प्रदेश अनुसार नेपालको प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको वृद्धि मौज्दातका आधारमा जटामसी पाइने जिल्लाहरु तथा सम्भावित जिल्लाहरु
- फोटो ६ : (क) जटामसीको विरुवा (ख) जटामसीको विभिन्न आकारको काण्ड
- फोटो ७ : जटामसीका विभिन्न आकार र लम्बाईका हरिया पातहरु
- फोटो ८ : (क) जटामसीको फूल (ख) जटामसीको सुकेको फूल काटे पश्चात् सूक्ष्मदर्शक यन्त्रबाट हेर्दा देखिने दृश्य
- फोटो ९ : जटामसीको फल (एकीन)
- फोटो १० : जटामसीको फल (एकीन) तथा बीउ
- फोटो ११ : जटामसीको काण्डको आन्तरिक संरचना (T.S. of rhizome of *Nardostachys jatamansi*)
- फोटो १२ : जटामसीको काण्डको धुलोको विश्लेषण (Powder analysis of rhizome of *Nardostachys jatamansi*)
- फोटो १३ : जटामसीको पातको आन्तरिक संरचना
- फोटो १४ : जटामसीको फल तथा बीउको संरचना
- फोटो १५ : (क) जटामसीको तेल (ख) जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एस (GC-MS) कोमाटोग्राम Chromatogram
- फोटो १६ : भयाउमा भरेको जटामसीको बीउ अंकुरण हुँदै
- फोटो १७ : जटामसीको जीवन चक्र
- फोटो १८ : स्थानीयहरुले जटामसी सङ्गलन गर्दै
- फोटो १९ : स्थानीय सङ्गलकले जटामसी सङ्गलन पश्चात् भण्डारणको लागि सुकाउँदै

चित्रहरू

- चित्र १ : जटामसीको रेखाचित्र
- चित्र २ : जटामसीको पुष्प चित्र तथा पुष्प सूत्र

तालिकाहरू

- तालिका १ : प्रदेश अनुसार नेपालको प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको फैलावट भएका र पाइने सम्भावित जिल्लाहरु
- तालिका २ (क) : जटामसीको तेलको भौतिक-रसायनिक विशेषता
- तालिका २ (ख) : जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एस (GC-MS) बाट गुणात्मक विश्लेषण
- तालिका २ (ग) : जटामसीको सुगन्धित तेलको मुख्य मुख्य रसायनहरुको सूत्र
- तालिका ३ : प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको कुल वृद्धि मौज्दात
- तालिका ४ : सन् २०१२ देखि २०२३ सम्म नेपालबाट जटामसीको छोका (मार्क) निर्यातको परिमाण (किलोग्राम)
- तालिका ५ : सन् २०१२ देखि २०२३ सम्म नेपालबाट जटामसीको सुगन्धित तेल निर्यातको परिमाण (किलोग्राम)
- तालिका ६ : प्रस्तावित बजेट तथा कार्यक्रम

सन्दर्भ

१. परिचय

१.१ कार्ययोजनाको सान्दर्भिकता

जैविक विविधता, जडीबुटी एवं सुगन्धित वानस्पतिक प्रजातिहरु पाइने क्षेत्रको दिगो संरक्षण र व्यवस्थापनका लागि नेपाल सरकार, वन तथा वातावरण मन्त्रालयले जडीबुटी एवं गैरकाष्ठ वन पैदावार विकास नीति, २०६१; वन क्षेत्रको रणनीति, २०७२; राष्ट्रिय वन नीति, २०७५; राष्ट्रिय वातावरण नीति, २०७६; वन ऐन, २०७६; वन नियमावली, २०७९; वातावरण संरक्षण ऐन, २०७६; वातावरण संरक्षण नियमावली, २०७९; सङ्गठापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण ऐन, २०७३ र सङ्गठापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण नियमावली, २०७६ तथा जैविक विविधता सम्बन्धी महासंचित, १९९२ अन्तर्गत नेपालले राष्ट्रिय जैविक विविधता रणनीति तथा कार्ययोजना (२०७१-२०७७) आदि कार्यान्वयनमा ल्याएको छ। पन्थौं योजना (आ. व. २०७६/०७७-२०८०/०८१) ले वन्यजन्तु र तिनको वासस्थान तथा दुर्लभ, लोपोन्मुख वनस्पतिहरुको संरक्षणलाई स्व-स्थानीय र पर-स्थानीय आवश्यकताको आधारमा निरन्तरता दिइने नीति लिएको छ भने सोहौं योजनाको आधारपत्रले तीव्र र दिगो आर्थिक प्रगतिको माध्यमको रूपमा वन, वनस्पति, जैविक विविधता संरक्षण र जडीबुटी व्यवस्थापनलाई समेत प्रस्तावित गरेको छ।

वन क्षेत्रको रणनीति, २०७२ ले प्राथमिकतामा परेका वनस्पति प्रजातिहरुको संरक्षण योजनाको तर्जुमा गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने कार्यक्रमहरू प्रस्ताव गरेको छ। राष्ट्रिय वन नीति, २०७५ ले जडीबुटी एवं गैरकाष्ठ वन पैदावारको संरक्षण, खेती विस्तार, सङ्गलन, प्रशोधन, प्रमाणीकरण, व्यवसायीकरण र निर्यात प्रवर्द्धन गर्ने व्यवस्था गरेको छ भने दुर्लभ, लोपोन्मुख र संरक्षित लगायतका वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको स्व-स्थानीय र पर-स्थानीय संरक्षण र व्यवस्थापन, अध्ययन, अनुसन्धान गरी प्रविधिको विकास तथा दिगो उपयोग गरी नेपालका कुनै पनि जैविक विविधता र जैविक स्रोतहरू नष्ट हुन नदिने नीति अवलम्बन गरेको छ।

जैविक विविधता सम्बन्धी महासंचित, १९९२ को उद्देश्यहरु अनुरूप जैविक विविधता संरक्षण, यसको दिगो उपयोग र जैविक स्रोतको उपयोगवाट हुन सक्ने लाभको समन्वयिक बाँडफाँड गर्ने प्रतिबद्धतामा नेपालले हस्ताक्षर गरिसकेको छ र यस महासंचितको मुख्य लक्ष्य मानवीय क्रियाकलापद्वारा जैविक स्रोतमा पर्ने नकारात्मक प्रभावलाई सम्बोधन गर्नु समेत रहेको छ। यस महासंचित अन्तर्गतको Aichi Biodiversity Targets Strategic Plan 2011-2020, Global Strategy for Plant Conservation 2011-2020 को लक्ष्य अनुरूप नेपालले राष्ट्रिय जैविक विविधता रणनीति तथा कार्ययोजना

(२०७१-२०७७) तयार गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको थियो। उक्त रणनीति तथा कार्ययोजनाले पनि संरक्षणका दृष्टिकोणले महत्वपूर्ण वनस्पतिका प्रजातिहरू पहिचान गरी प्राथमिकतामा परेका प्रजातिहरूको संरक्षण योजना तयार गरी कार्यान्वयन गर्ने प्रस्ताव गरेको पाईन्छ र नेपाल सरकार संकटापन्न वनस्पति तथा वन्यजन्तुको संरक्षण गर्न कटिबद्ध रहेको छ। राष्ट्रिय जैविक विविधता रणनीति तथा कार्ययोजना (२०७१-२०७७) ले सन् २०२० अर्थात् वि. सं. २०७७ सम्ममा दुर्लभ, लोपोन्मुख १० वनस्पति प्रजातिको संरक्षण कार्ययोजना बनाई कार्यान्वयन गर्न दिशानिर्देश गरेकोमा हाल यो कार्ययोजना तयार गरिएको हो।

जटामसीको संरक्षण, सम्वर्द्धन र व्यवस्थापन नेपालको वन नीति तथा ऐनहरूबाट निर्देशित विभिन्न वन व्यवस्थापन प्रणाली अन्तर्गतका वन व्यवस्थापन योजना अनुरूप गरिन्छ। विभिन्न किसिमका वन व्यवस्थापन प्रणालीको कार्ययोजना तयार गर्न जटामसीको स्रोतको पहिचान, स्रोत सर्वेक्षण, वार्षिक वृद्धि परिमाण, मौज्दात आदि बारे जानकारी आवश्यक पर्दछ। जटामसीको संरक्षण र व्यवस्थापनका लागि चुनौतीका रूपमा रहेका विभिन्न तत्वहरूमध्ये व्यापारिक चापका कारणले गरिने अत्याधिक दोहनलाई संरक्षणको मुख्य चुनौतीको रूपमा लिइन्छ। अर्कोतप्त जटामसीको खेती अझै परीक्षणको अवस्थामै रहेको हुँदा यसको सङ्गलन प्राकृतिक वासस्थानबाटे गर्ने गरिन्छ। प्राकृतिक अवस्थामा रहेको जटामसीको पारिस्थितिकीय अवस्था, सञ्चिति र दिगो सङ्गलनको सम्भावनाका बारेमा ठोस वैज्ञानिक ज्ञानको अभाव रहेको छ। जटामसीको दिगो सङ्गलनलाई परिणाममुखी बनाउन र यसको यथार्थ मौज्दात पत्ता लगाई व्यापारका लागि गरिने सङ्गलनलाई नियमन गर्न जटामसीको राष्ट्रियस्तरको स्रोत सर्वेक्षण गर्नुपर्ने देखिन्छ।

IUCN Redlist अनुसार जटामसीलाई अति सङ्गठापन्न (critically endangered) वर्गमा सूचीकृत गरिएको छ। यस वनस्पतिको दिगो संरक्षणको लागि राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा गरिएका प्रतिबद्धता अनुरूप नीति र कार्यहरूलाई प्राथमिकतामा राखी यो जटामसी संरक्षण कार्ययोजना तयार गरिएको छ। वनस्पति विभाग साईटिसमा सूचीकृत वनस्पतिको सम्बन्धमा नेपालको वैज्ञानिक निकायको रूपमा रहेको छ। सङ्गठापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण ऐन, २०७३ र सङ्गठापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण नियमावली, २०७६ बमोजिम वनस्पति विभागले साईटिसको अनुसूचीमा रहेका सङ्गठापन वनस्पति प्रजातिहरुको अध्ययन, अनुसन्धान तथा प्रतिवेदन तयार गर्ने सन्दर्भमा जटामसीको संरक्षण कार्ययोजना तयार गरेको छ।

१.२ कार्ययोजना निर्माण प्रक्रिया र विधि

जटामसी संरक्षण कार्ययोजना (२०८१-२०९०) वनस्पति विभागले वर्षांदेखि गरेको अध्ययन, अनुसन्धान र उपलब्ध तथ्याङ्कहरूको आधारमा तयार गरिएको छ। यो कार्ययोजना तयारीको क्रममा सम्बन्धित नीति, रणनीति, सम्बद्ध राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय जैविक विविधता संरक्षण सम्बन्धी प्रकाशित र अप्रकाशित लेख, पुस्तक, विभिन्न डिभिजन वन कार्यालयहरूको स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना, डिभिजन वन कार्यालय, वन तथा भू-संरक्षण विभाग तथा वनस्पति विभागका विभिन्न अर्थिक वर्षका कार्यक्रम र प्रगतिहरूको प्रतिवेदन, वनस्पति विभागबाट सञ्चालित कार्यक्रमहरू, जटामसीको पर्यावरण (ecology), स्थानीय उपयोगिता र व्यापारिक अवस्था (trade status) अध्ययन तथा निजी क्षेत्रसँग अन्तरक्रिया, वन तथा भू-संरक्षण विभाग र राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण विभागबाट प्रकाशन गरिएका विभिन्न संरक्षण कार्ययोजना र नेपालका विभिन्न स्थानहरूबाट सङ्ग्रहित गरी राष्ट्रिय हर्वेरियम तथा वनस्पति प्रयोगशालामा संग्रहित गरिएको जटामसीको हर्वेरियम नमूनाहरूको समेत अध्ययन गरिएको थियो। यसैगरी, नेपाल भित्र तथा बाहिर यस प्रजातिको फैलावटको अध्ययनको लागि Global Biodiversity Information Facility डाटाबेसको मद्दत लिइएको थियो। यस कार्ययोजनाको मस्यौदा

तयार गरेपछि जटामसी संरक्षण र व्यवस्थापनमा संलग्न विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी संघ संस्थाहरू, जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावार सङ्गतन, प्रशोधन तथा व्यापारमा संलग्न निकायहरू र व्यक्तिहरूसँग छलफल तथा अन्तरक्रिया गर्नुका साथै प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय, जटामसी संरक्षण र व्यवस्थापनमा आबद्ध अन्य निकायलाई राय सुभावकोलागि पत्राचार गरिएको थियो। साथै कार्ययोजनाका मस्यौदालाई यस विभागको वेबसाईटमा समेत राय प्रतिक्रियाको लागि राखिएको थियो। जटामसी संरक्षण कार्ययोजनाको मस्यौदालाई जडीबुटी व्यापारको लागि मुख्य केन्द्रको रूपमा चिनिएको नेपालगञ्जमा डिभिजन वन कार्यालयका कर्मचारीहरू, नेपाल जडीबुटी व्यवसायी संघका पदाधिकारीहरू, जडीबुटी उद्यमी तथा व्यवसायीहरू तथा अन्य सरोकारवालाहरू माझ प्रस्तुति र अन्तरक्रिया गरी प्राप्त भएका सल्लाह र सुभावहरू सङ्गतन गरिएको थियो।

उक्त छलफल, अन्तरक्रिया र पत्राचारबाट प्राप्त राय सुभावको आधारमा कार्ययोजना परिमार्जन गरी सो परिमार्जित कार्ययोजनाको मस्यौदालाई विज्ञहरूबाट पुनरावलोकन गर्न लगाई विज्ञहरूबाट प्राप्त सुभावहरूलाई समेत समावेश गरी अन्तिम रूप दिईएको छ।



पृष्ठभूमि

२.१ जटामसी : परिचय

जटामसीको वैज्ञानिक नाम *Nardostachys jatamansi* (D. Don) DC. हो । जटामसी एक बास्नादार, परम्परागत रूपमा प्रयोग गरिने बहुमूल्य, बहुवर्षीय जडीबुटी हो । यस वनस्पतिलाई पहिले भ्यालेरियानेसी (valerianaceae) वानस्पतिक परिवार अन्तर्गत समावेश गरिएकोमा हाल वनस्पति वर्गीकरणको एन्जीओस्पर्म फाईलोजेनी ग्रुपिङ पद्धति (Angiosperm Phylogeny Group System) अनुसार क्याप्रिफोलियसी (caprifoliaceae) परिवारमा राखिएको छ । हाल क्याप्रिफोलियसी परिवारमा विश्वभरमा २८ जाति (genus) रहेका छन् जसमध्ये *Nardostachys* एक प्रमुख जाति हो (Christenhusz & Byng, 2016) । Powo.science.kew.org अनुसार संसारमा *Nardostachys* जातिको एउटा मात्र प्रजाति *Nardostachys jatamansi* (D. Don) DC. पाइन्छ । *Nardostachys* ग्रीक भाषाको 'nardus' र 'stachus' दुईवटा शब्द मिलेर बनेको जाति हो । यसको अर्थ spicanardi हुन्छ । यही spicanardi बाट यसको अंग्रेजी नाम spikenard भएको हो । 'जटामसी' को अर्थ संस्कृत भाषामा "जटा" हुन्छ, जसको अर्थ कपाल धेरै घुम्पिएर जटा पर्ने भन्ने बुझिन्छ र यस वनस्पतिको जरा जटा परेको कपाल जस्तो देखिने भएकोले यस प्रजातिको नाम *jatamansi* रहेको देखिन्छ । *Nardostachys chinensis* Batalin, *Nardostachys gracilis* Kitam, *Nardostachys grandiflora* DC. र *Patrinia jatamansi* D. Don यसका पर्यायवाची नामहरू (synonyms) हुन् जसमध्ये *Patrinia jatamansi* D. Don यसको basionym पनि हो । सबैभन्दा पहिले यस वनस्पतिको सङ्कलन सन् १८२४/०९/०९ मा नेपालको रसुवा जिल्लाको गोसाइथानबाट गरिएको थियो (www.plants.jstor.org) । यस वनस्पतिको हर्वेरियम *Patrinia jatamansi* D. Don को नाममा जर्मनीमा अवस्थित Botanische Staatssammlung Muenchen(M) नामक हर्वेरियममा संरक्षण गरी M0189594 मा राखिएको छ । यस प्रजातिको पहिलो पटक व्याख्या (Protologue), David Don को Prodomus Florae Nepalensis किताबको पेज १५९ मा *Patrinia jatamansi* D. Don नाममा सन् १८२५ मा प्रकाशित गरिएको पाइन्छ (Don, 1825) । नेपालमा विशेषतः जटामसी उच्च हिमाली क्षेत्रमा अवस्थित वन, भाडी, घाँसे पाटन (grassland) तथा ढुङ्गा चट्टान भएका क्षेत्रहरूमा प्राकृतिक रूपमा पाइन्छ । नेपालको उच्च हिमाली भागमा मात्र पाइने जटामसीको खेती प्रविधिको विकास भैनसकेको र समुचित प्रविधि तथा साधन



© T.R.Pandey

फोटो १ : प्राकृतिक वासस्थानमा फुलेको जटामसी

| TAXONOMIC CLASSIFICATION | |
|--------------------------|---|
| Kingdom | Plantae |
| Clade | Tracheophytes |
| Clade | Angiosperms |
| Clade | Eudicots |
| Clade | Asterids |
| Order | Dipsacales |
| Family | Caprifoliaceae |
| Genus | <i>Nardostachys</i> |
| Species | <i>Nardostachys jatamansi</i> (D.Don) |
| Synonym | <i>N. grandiflora</i> DC. <i>N. chinensis</i> Batalin <i>Patrinia jatamansi</i> D.Don |

स्रोतको अभावले यसको खेती त्यति सहज देखिदैन । फलस्वरूप नेपालमा हालसम्म यस प्रजातिको व्यावसायिक खेती गरेको पाइदैन । यद्यपि, वनस्पति अनुसन्धान केन्द्र जुम्लाले यसको खेती प्रविधि विकास गर्नको लागि अनुसन्धान गर्ने कार्यको शुरुवात गरेतापनि हालसम्म सफलता प्राप्त गर्न सकेको छैन । तथापि वनस्पति विभागले कर्णाली प्रदेशका केही जिल्लाहरूमा जटामसीको दिग्गो सङ्कलनको लागि पकेट क्षेत्र निर्धारण गरेको छ ।

अंग्रेजी नाम : Spikenard, Indian Spikenard, Nard, Indian Nard, Nardin, Nardus root, Muskroot

स्थानीय नाम : जटामसी, भुल्ते, भुल्ले, भुलत्या, बालुचन, बालछड (नेपाली); तपस्विनी, जटा, भ्यताजटा, भिलोमासा (संस्कृत); नस्वा (नेवा); जरमसी, पाङ्गवे (गुरुङ); पे, पोई (तामाङ्ग); पाङ्गवु, पाङ्गपोई, जाप्यो (शेर्पा); पाङ्गबोन, पाङ्गबो, पाङ्गब्बान; बालछार, जताजतिला, जटामांसी (हिन्दी); गानसोङ्ग, कुमिच (चाइनिज)

व्यापारिक नाम : जटामसी, बालच्छाद, बालछड, भुतकेसी, भुल्ते

व्यापारको लागि प्रयोग हुने भाग : जमिनमुनिको काण्ड (rhizome)

जमिनमुनिको काण्डको तौल : एउटा स्वस्थ जटामसीको विरुवाको जमिनमुनिको सुख्खा काण्डको औसत तौल करिब १.०६-३ ग्राम (DoF 2017; DPR, 2017) र औसत तेल प्रतिशत ०.८-२% (DPR, 2020) हुन्छ।

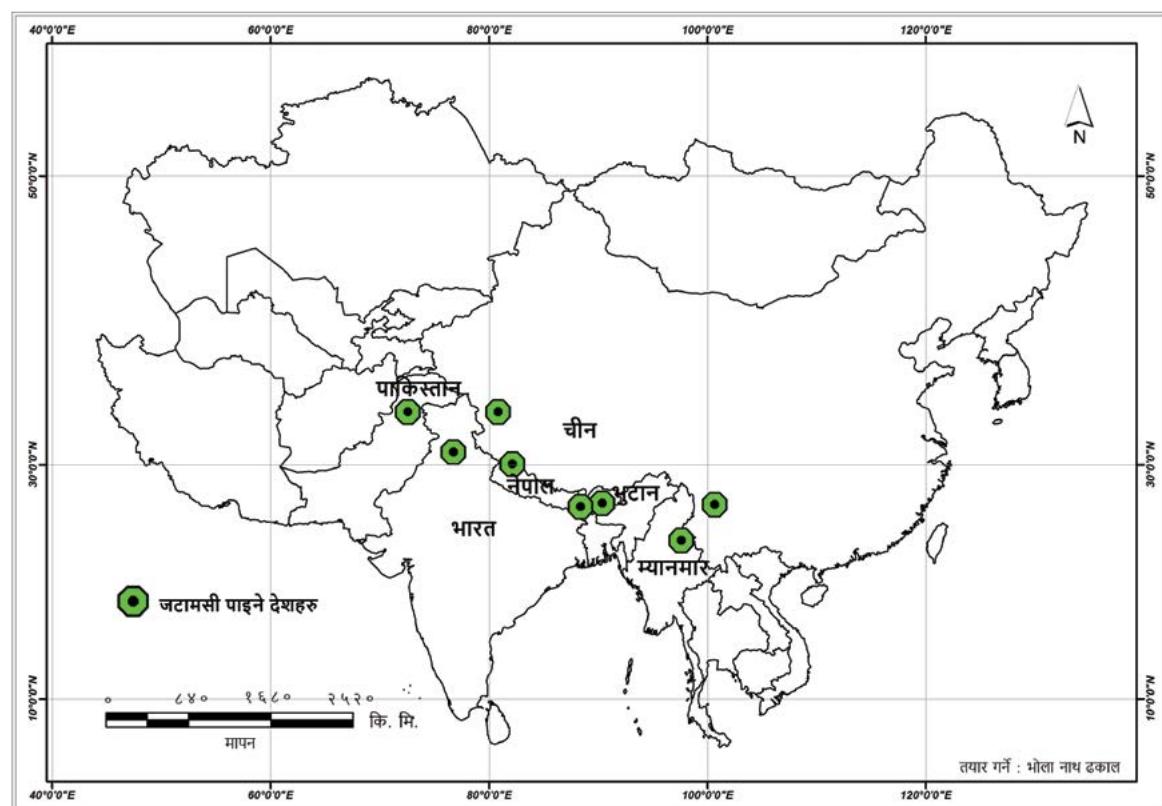
व्यापारमा जाने वस्तु : सुगन्धित तेल (essential oil) र तेल निकालेर बाँकी रहेको छोक्रा अर्थात मार्क (Marc)।

जटामसीमा पाइने प्रमुख रसायनिक तत्वहरु : Valerenone, Spirojatamol, Gleenol, Aristolone, Viridiflorol, Cadin-4-en-10-ol.



२.२ भौगोलिक वितरण र फैलावट

विश्वमा फैलावट : जटामसी पश्चिमदेखि पूर्वी हिमालय (पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भुटान), चीनको तिब्बती पठारदेखि हेङ्गदुवान पर्वत र म्यानमारसम्म पाइन्छ (फोटो २)। भारतमा यो प्रजाति अरुणाञ्चल प्रदेश, हिमाञ्चल प्रदेश, सिक्किम र उत्तराखण्डमा पाइन्छ (Ved et al., 2015)।



फोटो २ : विश्वमा जटामसी पाइने देशहरु



फोटो ३ : विश्व मानचित्रमा जटामसीको फैलावट (स्रोत : जीविआईएफ, २०२३)

नेपालमा भौगोलिक फैलावट

Press et al. (2000) अनुसार जटामसी नेपालको पूर्व, मध्य तथा पश्चिममा समुद्री सतहबाट ३,२०० देखि ५,००० मिटरसम्मको उचाइमा पाइन्छ। Ghimire et al. (2008) का अनुसार उच्च हिमाली क्षेत्रका ठूला भीर तथा भिरालो चट्टान, भिरालो घाँसे मैदान, सेपिलो र ओसिलो क्षेत्रहरु जटामसी पाइने स्थानहरु हुन्। समुद्री सतहबाट ३,२०० देखि ५,००० मिटरसम्मको उचाइमा जटामसीको फैलावट रहे तापनि मूलतः यसको उपलब्धता ३५०० मिटर भन्दा माथिको उचाइमा रहेको देखिन्छ। यो वनस्पति नेपालको अन्य प्रदेशको तुलनामा कर्णाली प्रदेशको हिमाली क्षेत्रमा बढी मात्रामा पाइन्छ। वन व्यवस्थापन योजना अनुसार नेपालका २७ वटा हिमाली जिल्लाहरूमा जटामसीको फैलावट रहेको पाइन्छ। नेपालको २२ वटा जिल्लाहरूबाट सङ्गलन गरिएको

जटामसीको हर्वेरियम नमूना (specimen) हरु अध्ययन र अनुसन्धानका लागि राष्ट्रिय हर्वेरियम तथा वनस्पति प्रयोगशाला, गोदावरी, लिलितपुरमा संरक्षण गरी राखिएको छ (फोटो ४)। नेपालका केही जिल्लाहरु जस्तै मुस्ताङ, कास्की, दोलखा, संखुवासभा र पाँचथरबाट जटामसीको हर्वेरियम नमूनाहरु सङ्गलन भएको भएता पनि सो जिल्लाहरुको वन व्यवस्थापन योजनामा जटामसी समावेश नभएको हुँदा सो जिल्लाका साथै समुद्री सतहबाट ३,२०० मिटर भन्दा माथि उचाइ रहेका जिल्लाहरुलाई जटामसी पाइने सम्भावित जिल्लाहरु मानिएको छ (फोटो ५)। प्रदेश अनुसार नेपालको प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसी पाइने सम्भावित जिल्लाहरु तालिका १ मा उल्लेख भए बमोजिम रहेको छ।

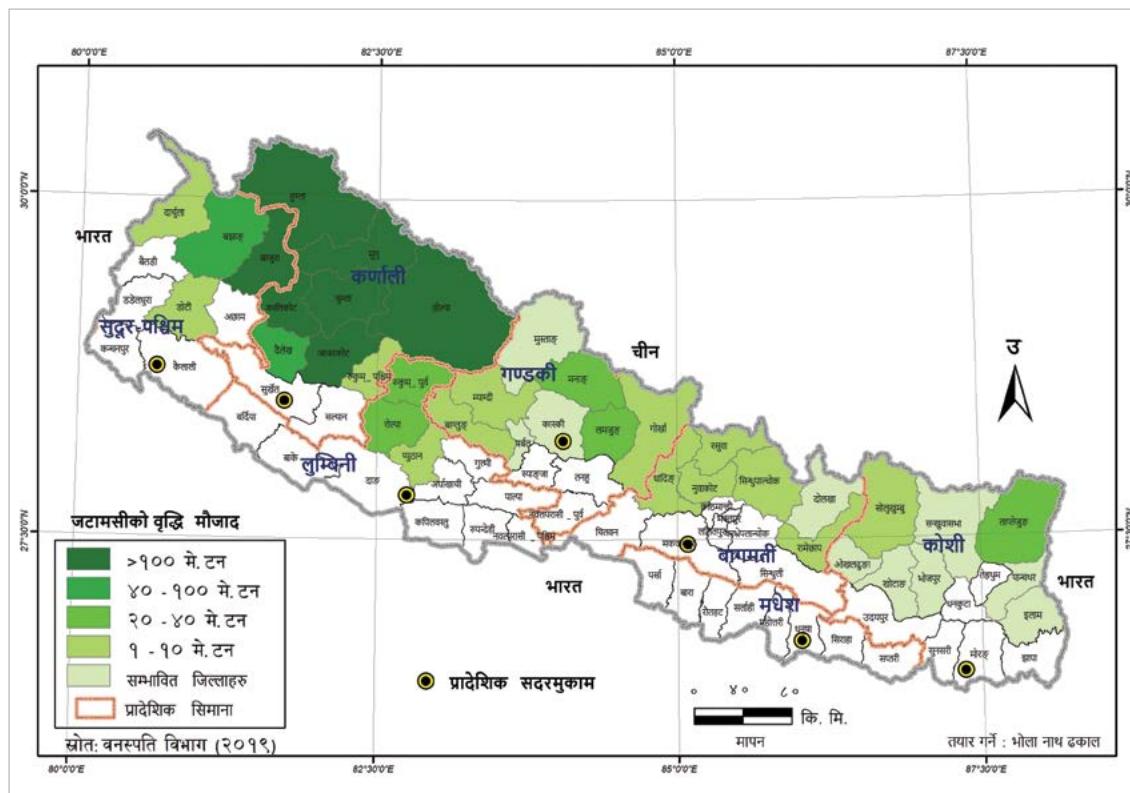


फोटो ४ : KATH मा रहेको जटामसीको दैलेख (बायाँ) र सोलुखुम्बु (दायाँ) बाट सङ्गलन गरिएको हर्वेरियमको नमूनाहरु

तालिका १ : प्रदेश अनुसार नेपालको प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको फैलावट भएका र पाइने सम्भावित जिल्लाहरु

| प्रदेश | जिल्ला | कैफियत |
|-------------|---|---|
| कोशी | भोजपुर, खोटाङ्ग, ओखलढुङ्गा, पाँचथर, संखुवासभा, सोलुखुम्बु, ताप्लेजुङ्ग र इलाम (८ जिल्लाहरु) | न्यून परिमाणमा उपलब्धता |
| बागमती | दोलखा, सिन्धुपाल्चोक, नुवाकोट, रसुवा, धादिङ र रामेछाप (६ जिल्लाहरु) | न्यून परिमाणमा उपलब्धता |
| गण्डकी | गोरखा, कास्की, लमजुङ्ग, मनाङ, मुस्ताङ, बागलुङ्ग, पर्वत, म्याग्दी (८ जिल्लाहरु) | न्यून परिमाणमा उपलब्धता |
| लुम्बिनी | रोल्पा, पूर्वी रुकुम र प्यूठान (३ जिल्लाहरु) | न्यून परिमाणमा उपलब्धता |
| कर्णाली | हुम्ला, जुम्ला, डोल्पा, जाजरकोट, कालिकोट, मुगु, दैलेख र पश्चिम रुकुम (८ जिल्लाहरु) | दैलेखमा मध्यम परिमाण र पश्चिम रुकुममा न्यून परिमाणमा उपलब्धता |
| सुदूरपश्चिम | दार्चुला, बझाङ्ग, बाजुरा र डोटी (४ जिल्लाहरु) | डोटीमा न्यून परिमाणमा उपलब्धता |

स्रोत: सम्बन्धित डिभिजन वन कार्यालयहरुको स्वीकृत पञ्चवर्षीय कार्ययोजनाहरु

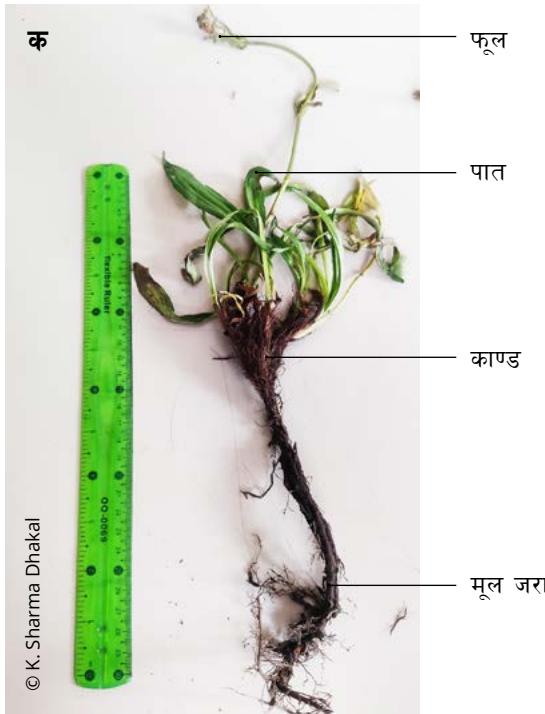


फोटो ५ : प्रदेश अनुसार नेपालको प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको वृद्धि मौज्दातका आधारमा जटामसी पाइने जिल्लाहरु तथा सम्भावित जिल्लाहरु

२.३ वनस्पतिक विवरण

जटामसी एक शाकीय प्रकृतिको (herbaceous) जमिनमुनि काण्ड हुने बहुवर्षीय वनस्पति हो । यस वनस्पतिको विभिन्न भागहरूको विस्तृत विवरण निम्न बमोजिम रहेको छ ।

जरा : जटामसीको मूल जराको लम्बाई २-३० से.मी. हुन्छ । मूल जरावाट सेता, मसिना रौं जस्ता साना साना जराहरू निस्कन्छन् ।



फोटो ६ (क) : जटामसीको विवरण

पात : जटामसीको काण्डको एकै स्थानबाट धेरै पातहरु निस्किएर जमिन माथि भुण्डमा देखिन्छन् । जटामसीको पातहरुको यस्तो विन्यास (arrangement) लाई रोजेट (rosette) भनिन्छ । सामान्यतया: पातहरु भाला आकारको लाम्चो (lanceolate) देखि अण्डवृत्ताकार (ovate-elliptic) हुन्छन् तथा यसको लम्बाई ५ देखि २५ से.मी. र चौडाई १ देखि ३.५ से.मी. हुन्छ । यसको किनारा अविछिन्न (entire) हुन्छ । यस वनस्पतिमा radical र caulinic गरी दुई प्रकारको पातहरु हुन्छन् । जमिनमाथि रोजेट विन्यासमा रहेका पातहरुलाई radical पात भनिन्छ । जटामसीको यस्तो पातमा भेट्नो (petiole) हुन्छ जसलाई पेटिवोलेट (petiolate) पात भनिन्छ । पातहरुको रोजेट भुण्डको बीचबाट ठाडो डाँठ निस्किएको हुन्छ जसको प्रत्येक आँखाहरूबाट दुईवटा पातहरु (opposite leaves) पलाएका हुन्छन् यस्ता पातलाई caulinic पात भनिन्छ । जटामसीको यस्ता पातहरुमा भेट्नो हुँदैन जसलाई सेसाइल (sessile) पात भनिन्छ । यी सेसाइल पातहरु पेटिवोलेट पातहरुभन्दा साना हुन्छन् । पातहरुको माथिको भाग गाढा हरियो र तल्लो भाग हल्का हरियो हुन्छ भने यो सुक्तन थालेपछि पहेलो र खैरो देखिन्छ । जटामसीको पातहरु कार्तिक-मंसिरतिर सुक्छ र यस समयमा काण्डबाट बढी वास्ता आउँछ ।

जमिनमुनिको काण्ड : जटामसीको काण्ड खैरो रङ्गको हुन्छ र यो वास्तादार हुन्छ । काण्ड जमिनमुनि रहन्छ र काण्डमुनि जरा हुन्छ । काण्ड मूल जरावाट सिधा ठाडो भएर बस्छ । यसलाई रौं जस्तो भुलाले ढाकेको हुन्छ त्यसैले जटामसीलाई भुल्ले पनि भनिन्छ । यसको लम्बाई ४ देखि २० से.मी. हुन्छ भने चौडाई ३ से.मी. सम्म हुन्छ । मुख्य काण्डबाट २० वटासम्म सहायक काण्डहरु (ramets) निस्कन्छन् [फोटो ६ (क)] ।



फोटो ६ (ख) : जटामसीको विभिन्न आकारको काण्ड



फोटो ७ : जटामसीका विभिन्न आकार र लम्बाईका हरिया पातहरु

पुष्पक्रम : रोजेट झुण्डको बीचबाट निस्किएको १० देखि ६० से.मी. लामो फूल फुल्ने डाँठ (peduncle) को टुप्पोमा स-साना सेता, गुलाफी वा हल्का प्याजी रङ्गका ४ देखि १० वटासम्म बास्नादार फूलहरु पुष्पछत्र (umbel) मा फुलेका हुन्छन् । यस्तो फूल फुल्ने डाँठ र पुष्पछत्र समग्रलाई नै पुष्पक्रम भनिन्छ । पुष्पक्रममा रहेका फूलहरुलाई क्रमशः ब्राक्ट (bracts) र ब्राक्टियोल (bracteole) हरूसे घेरेका हुन्छन् ।

फूल : यस बनस्पतिको फूलमा क्रमशः पत्रदल (calyx), पुष्पदल (corolla), पुडेशरदल (androecium) र स्त्रीकेशर (gynoecium) हुन्छ । पत्रदल जम्मा पाँचवटा पत्रहरु मिलेर बनेको हुन्छ जसमा दुईवटा पत्रहरु एक अर्कासँग टाँसिएका (fused) हुन्छन् भने बाँकी तीनवटा पत्रहरु एक अर्कासँग टाँसिएका हुन्नैनन् (free) । पत्रदलमा रहेका पत्रहरु दीर्घस्थायी (persistent) हुन्छन् । पुष्पदल जम्मा पाँचवटा पुष्पपत्रहरु मिलेर बनेको हुन्छ जसमा सबै पुष्पपत्रहरु एक अर्कासँग टाँसिएर पुष्पदल नली (corolla tube) को रूपमा रहन्छ । पुष्पपत्रको रङ्ग सेतो, गुलाफी वा हल्का प्याजी हुन्छ । पुडेशरदल जम्मा चारवटा पुडेशर (stamen) मिलेर बनेको हुन्छ । प्रत्येक पुडेशरमा माथिपटि पराग थैली (anther) हुने गर्दछ भने तलपटि पराग नली (filament) हुने गर्दछ । पराग थैली



फोटो ५ : (क) जटामसीको फूल

कालो वा बैजनी (purple) रङ्गको हुन्छ भने पराग नली सेतो रङ्गको हुन्छ । सबै पराग नलीहरुको तल्लो भागमा सेतो रङ्गका मसिना भुवाहरु हुन्छन् । पराग नलीहरुको तल्लो भागहरु पुष्पदलहरुसँग टाँसिएका हुन्छन् । यस्तो विन्यास भएका पुडेशरहरुलाई एपिपेटलस पुडेशर (epipetalous stamen) भनिन्छ । फूलहरुको सबैभन्दा भित्रपटि स्त्रीकेशर हुन्छ जसमा एउटा कार्पेल (carpel) हुन्छ । कार्पेल स्टिग्मा (stigma), कार्पेल नली (style) र अण्डाशय (ovary) मिलेर बनेको हुन्छ । अण्डाशयको बीच भागलाई चौडाई (transverse section) बाट कारदा प्रत्येक अण्डाशय तीनवटा कक्षहरूले बनेको हुन्छ । यस्तो अण्डाशयलाई ट्राइलोकुलर अण्डाशय (trilocular ovary) भनिन्छ । एउटा अण्डाशयमा एकमात्र अण्डा (ovule) हुन्छ तसर्थ एउटा अण्डाशयबाट एउटा मात्र फल बन्ने गर्दछ । जटामसीको फूललाई लम्बाईबाट काटे पश्चात् सूक्ष्मदर्शक यन्त्र (microscope) बाट पत्रदल, पुष्पदल, पुडेशर र स्त्रीकेशर देखिएको फोटो द (ख) मा दिइएको छ । जटामसीको फूल असारदेखि भाद्रसम्म फुल्छ तर फूल फुल्ने समय प्राकृतिक वासस्थान र हावापानी अनुसार फरक हुन सक्छ ।



फोटो ६ : (ख) जटामसीको सुकेको फूल लम्बाईबाट काटे पश्चात् सूक्ष्मदर्शक यन्त्रबाट हेर्दा देखिने दृश्य

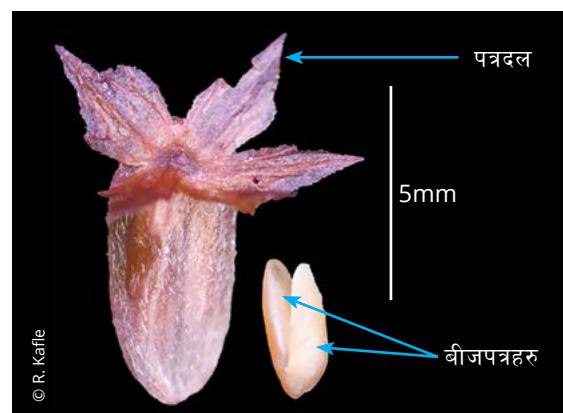
फल : जटामसीको फल सुख्खा, एक बीजीय (one-seeded), अस्फुटनशील (indehiscent) हुन्छ । यस्तो फललाई सिपसेला (cypsela) वा एकीन (achene) भनिन्छ । सामान्यतया: एकीन २-५ मी.मी. लम्बाई र २-३ मी.मी. चौडाईको चेप्टो, अण्डाकार परेको हुन्छ र यसको बाहिरी सतहमा मसिना, सेता रौं हुन्छन् । प्रत्येक एकीनको टुप्पोमा पत्रदलका दीर्घस्थायी



फोटो ९ : जटामसीको फल (एकीन)

पत्रहरूले मुकुटको जस्तो आवरण बनाएका हुन्छन् (फोटो ९) । फल परिपक्व भएपछि जटामसीको पातहरु सुक्न थाल्छन् र असोजदेखि मसिरसम्ममा यसको फल पाक्छ ।

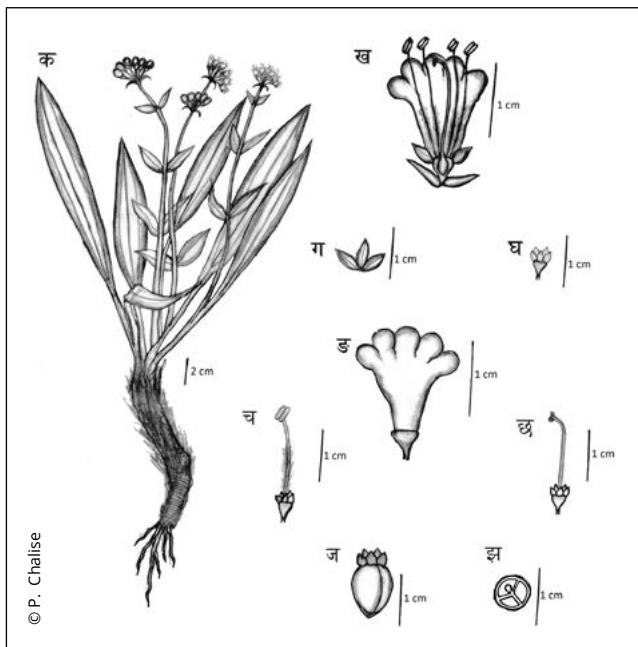
बीज : जटामसीको बीउ सानो र सेतो रङ्गको हुन्छ । यो भट्ट हेर्दा चामलको दाना जस्तै देखिएतापनि चामलको दाना भन्दा मसिनो र सानो हुन्छ (फोटो १०) ।



फोटो १० : जटामसीको फल (एकीन) तथा बीउ

पुष्प चित्र (Floral Diagram) :

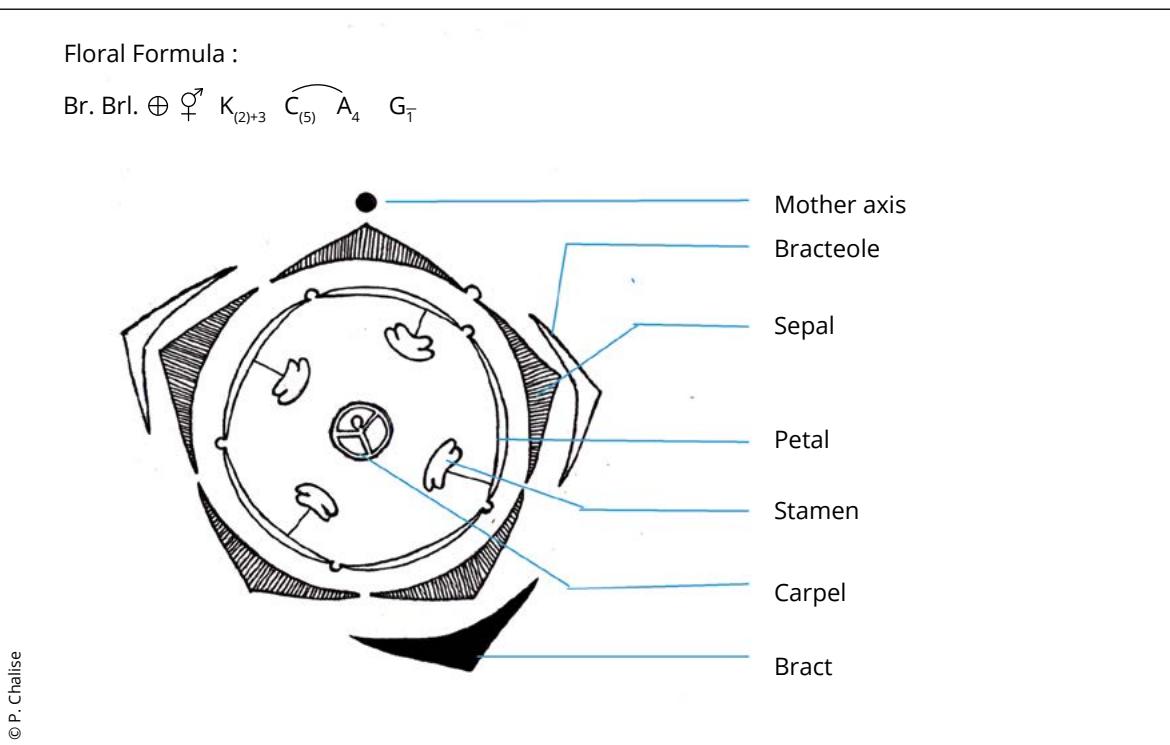
फूलको विभिन्न भागहरु (ब्राक्ट, ब्राक्टियोल, पत्रदल, पुष्पदल, पुड्डेशर र स्त्रीकेशर) को फूलको डाँठ (mother axis) मा रहेको विन्यास (arrangement) लाई पुष्प चित्र भनिन्छ । जटामसीको पुष्प चित्र, चित्र २ मा रहेको छ ।



चित्र १: जटामसीको रेखाचित्र; क. समग्र विरुवा, ख. फूल (खोलिएको), ग. ब्राक्ट र ब्राक्टियोल, घ. पत्रदल (खोलिएको), ङ. पुष्पदल नली (खोलिएको), च. पुड्डेशर (पत्रदलबाट अलगयाएर निकालिएको), झ. स्त्रीकेशर, ज. एकीन, झा. अण्डाशय (वीचबाट काटिएको) । (KATH125966, Ikeda, H., Kawahara, T., Yano, O., Yamamoto, N., Watson, M.F., Li, Z.H., Subedi, M.N. & Acharya, S.K. 20811180-रेखाचित्र (Illustration): प्रतिक्षा चालिसे)

पुष्प सूत्र (Floral Formula) :

फूलको डाँठमा रहेको फूलको विभिन्न भागहरुको विन्यासलाई प्रतीक (symbol) मा देखाईने सूत्रलाई पुष्प सूत्र भनिन्छ । जटामसीको पुष्प सूत्र, चित्र २ मा रहेको छ ।



चित्र २: जटामसीको पुष्प चित्र तथा पुष्प सूत्र । (KATH125966, Ikeda, H., Kawahara, T., Yano, O., Yamamoto, N., Watson, M.F., Li, Z.H., Subedi, M.N. & Acharya, S.K. 20811180 - चित्र (Floral diagram): प्रतिक्षा चालिसे)



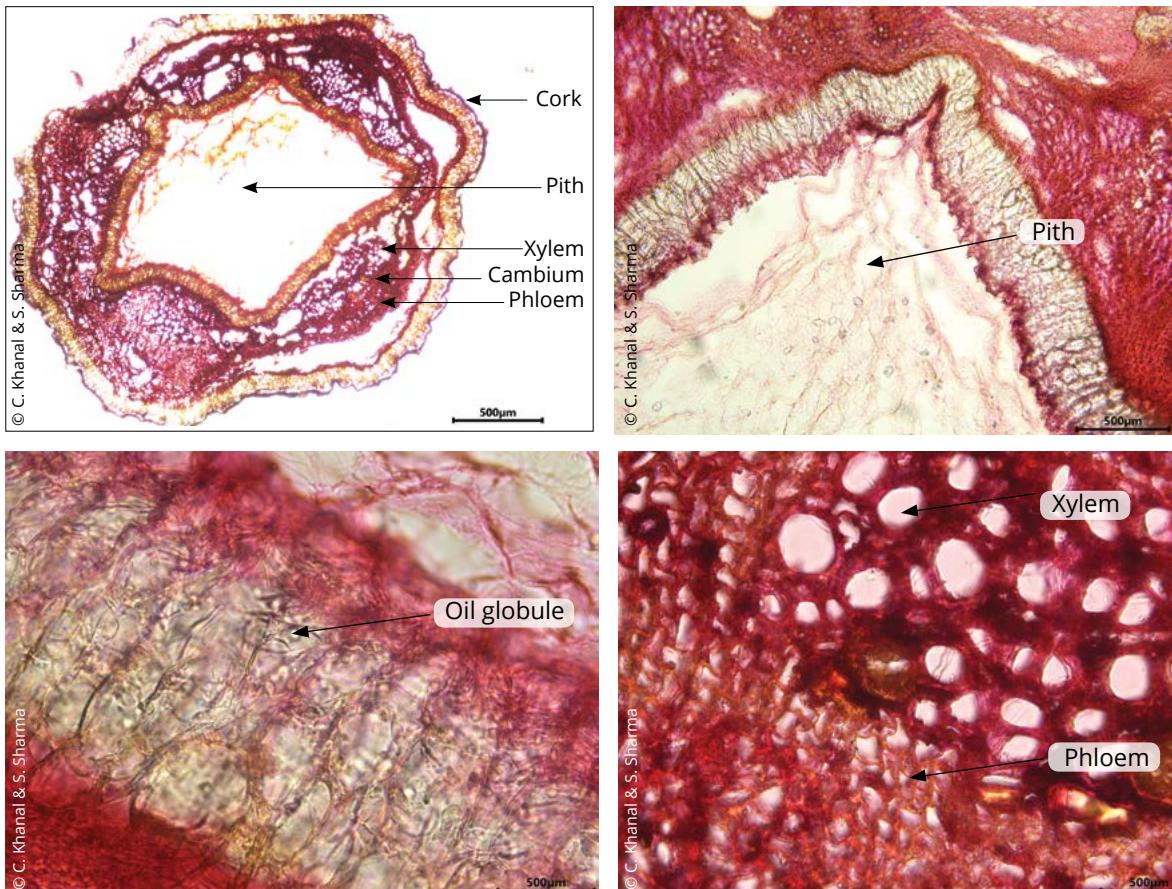
Nardostachys jatamansi (D. Don) DC. : 1-Habit Sketch; 2-Single leaf (ventral side); 3-Single flower; 4-Calyx with young fruit; 5-Bract; 6-Calyx with mature fruit (back view); 7-Calyx (birds eye view); 8-T.S. of fruit; 9-Seed

जटामसीको विभिन्न भागको आन्तरिक संरचना (Anatomical structure)

जमिनमुनिको काण्डको आन्तरिक संरचना :

जटामसीको जमिनमुनि रहने काण्डलाई चौडाइबाट काटेर सूक्ष्मदर्शक यन्त्रको सहायताले आन्तरिक संरचना हेदा गोलो वा अण्डा आकारको देखिन्छ र यसको घेरा अनियमित हुन्छ। यसको बाहिरी भाग गाढा खेरो रङ्गको बहुभुज आकारका कोषहरूले बनेको हुन्छ जसलाई कर्क भनिन्छ। यो भाग तेलका कोषहरूले भरिएको हुन्छ। यस भागको मुनि ३ देखि ५ तहसम्म कोलेनकाइमाटस (collenchymatous) कोषहरू रहेका हुन्छन्।

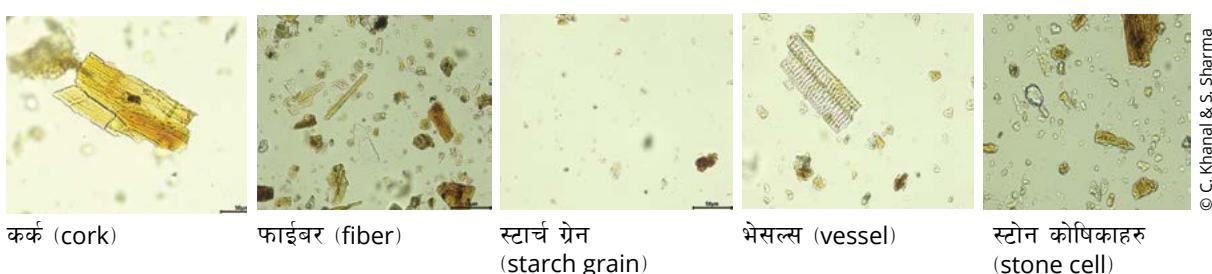
कोलेनकाइमाटस (collenchymatous) कोषहरू भन्दा भित्रपट्टि प्यारेन्काइमाटस (parenchymatous) कोषले बनेको कर्टेक्स (cortex) को भाग रहेको हुन्छ। कर्टेक्स भन्दा मुनि संवहनी बन्डल (vascular bundle) को भाग रहेको हुन्छ। संवहनी बन्डल जाइलम (xylem), फ्लोइम (phloem) र क्यामियम (cambium) ले बनेको हुन्छ। सबैभन्दा भित्रपट्टिको भागलाई पिथ (pith) भनिन्छ जुन प्यारेन्काइमाटस (parenchymatous) कोषले बनेको हुन्छ (फोटो ११)।



फोटो ११ : जटामसीको काण्डको आन्तरिक संरचना (T.S. of rhizome of *Nardostachys jatamansi*)

काण्डको धुलोको विश्लेषण :

जमिनमुनिको काण्डको धुलोलाई सूक्ष्मदर्शक यन्त्रबाट हेदा कर्क कोषिकाहरू (cork cells), फाईबर (fiber), स्टार्च ग्रेन (starch grain), भेसल्स (vessels) र स्टोन कोषिकाहरू (stone cells) देखिन्नन् (फोटो १२)।



फोटो १२ : जटामसीको काण्डको धुलोको विश्लेषण (Powder analysis of rhizome of *Nardostachys jatamansi*)

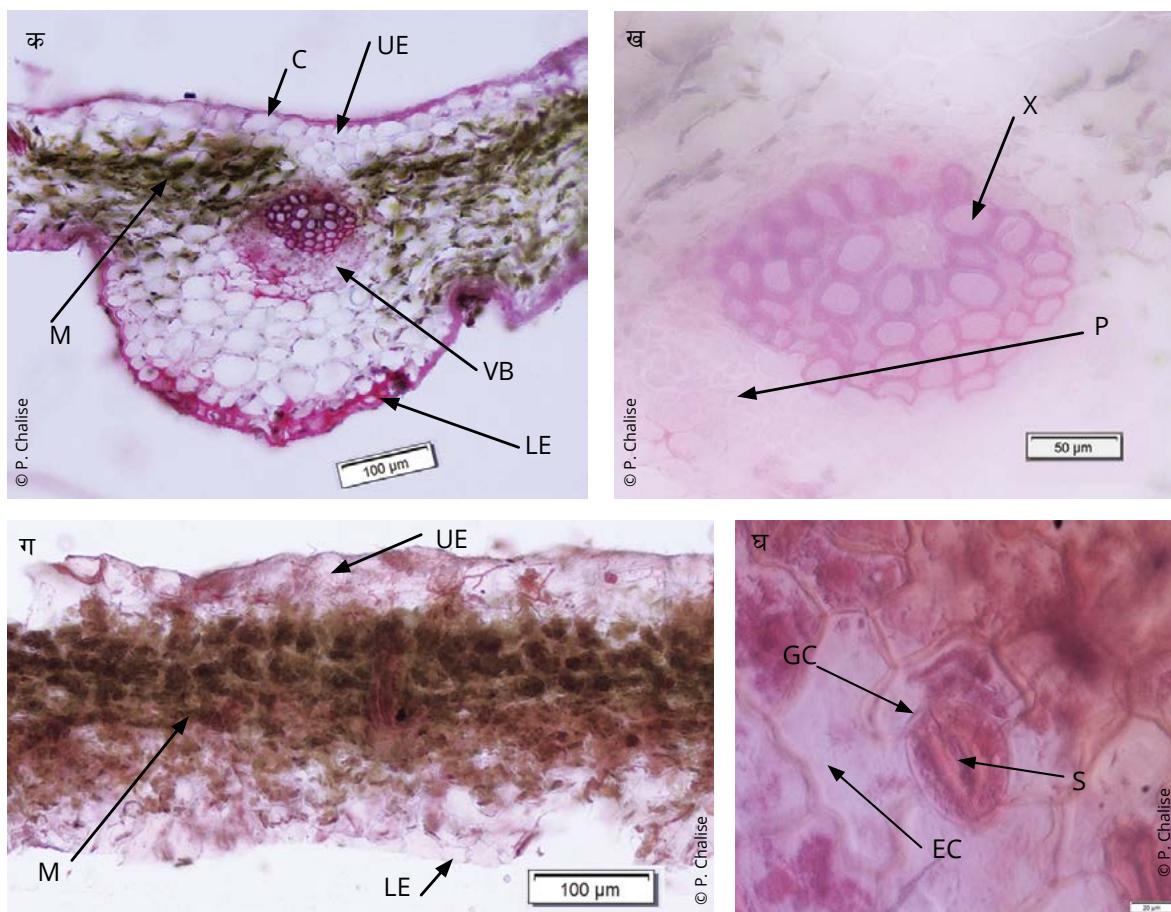
जटामसीको पातको आन्तरिक संरचना

जटामसीका पातहरु चेप्टा (dorsiventrally flattened) हुन्छन् । प्रत्येक पातहरुलाई ठाडो गरी काटेर (vertical section) सूक्ष्म अध्ययन गर्दा पातहरुको तल्लो र माथिल्लो दुवै सतहमा जीवित कोषिकाहरु, प्यारेन्काइमा (parenchyma) ले मिलेर बनेको एकल तह हुने गर्दछ, जसलाई एपिडर्मिस (epidermis) भनिन्छ । पातहरुको माथिल्लो सतहमा रहेको एपिडर्मिसलाई माथिल्लो एपिडर्मिस (upper epidermis) अथवा माथिल्लो एपिडर्मल तह (upper epidermal layer) भनिन्छ, भने पातहरुको तल्लो सतहमा रहेको एपिडर्मिसलाई तल्लो एपिडर्मिस (lower epidermis) अथवा तल्लो एपिडर्मल तह (lower epidermal layer) भनिन्छ । दुवै एपिडर्मल तहको बाहिरी सतहमा बाक्लो छल्ली (cuticle) ले ढाकेको हुन्छ [फोटो १३ (क) र (ग)] ।

सामान्यतया, पातहरुमा ग्यास एक्सचेन्ज (gaseous exchange) को काम गर्ने स-साना द्वारहरु हुन्छन् । पातहरुमा हुने यस्ता स-साना द्वारहरुलाई स्टोमाटा (stomata) भनिन्छ । जटामसीका पातहरुको तल्लो सतहमा/तल्लो एपिडर्मिसमा मात्र स्टोमाटा हुने गर्दछ [फोटो १३ (घ)] । पातहरुको तल्लो एपिडर्मिसमा मात्र स्टोमाटा हुने पातहरुलाई

हाइपो-स्टोमेटिक पातहरु (hypostomatic leaves) भनिन्छ । प्रत्येक स्टोमाटाहरुमा मृगौला आकारका दुईवटा गार्ड कोषिकाहरु (guard cells) हुने गर्दछन् तर गार्ड कोषिकाहरुका बरिपरि सहायक कोषिकाहरु (subsidiary cells) हुन्नेन् । गार्ड कोषिकाहरुका बरिपरि सहायक कोषिकाहरु नहुने स्टोमाटाहरुलाई एनोमोसाइटिक स्टोमाटा (anomocytic stomata) भनिन्छ ।

माथिल्लो एपिडर्मल तह भन्दा ठीक भित्रपटि जीवित कोषिकाहरुले मिलेर बनेको बहु-स्तरित (multilayered) मेजोफिल तह (mesophyll tissue) हुन्छ । मेजोफिल तह प्यारेन्काइमा (parenchyma) ले बनेको हुन्छ र यस तहमा रहेका कोषिकाहरुमा क्लोरोप्लास्ट (chloroplast) हरु हुन्छन् । प्रत्येक पातहरुलाई पातको मध्य शिरा (mid vein) बाट ठाडो गरी काटदा, मध्य शिरामा एउटा संवहनी बन्डल (vascular bundle) देखिन्छ । प्रत्येक संवहनी बन्डलभित्र माथिपटि जाइलम (xylem) तथा तलपटि फ्लोइम (phloem) रहेका हुन्छन् [फोटो १३ (ख)] । जाइलम (xylem) ले विरुवाहरुमा पानी र खनिजकोपरिवहनको काम गर्दछ भने फ्लोइम (phloem) ले खाद्य सामग्री स्थानान्तरण गर्ने काम गर्दछ ।



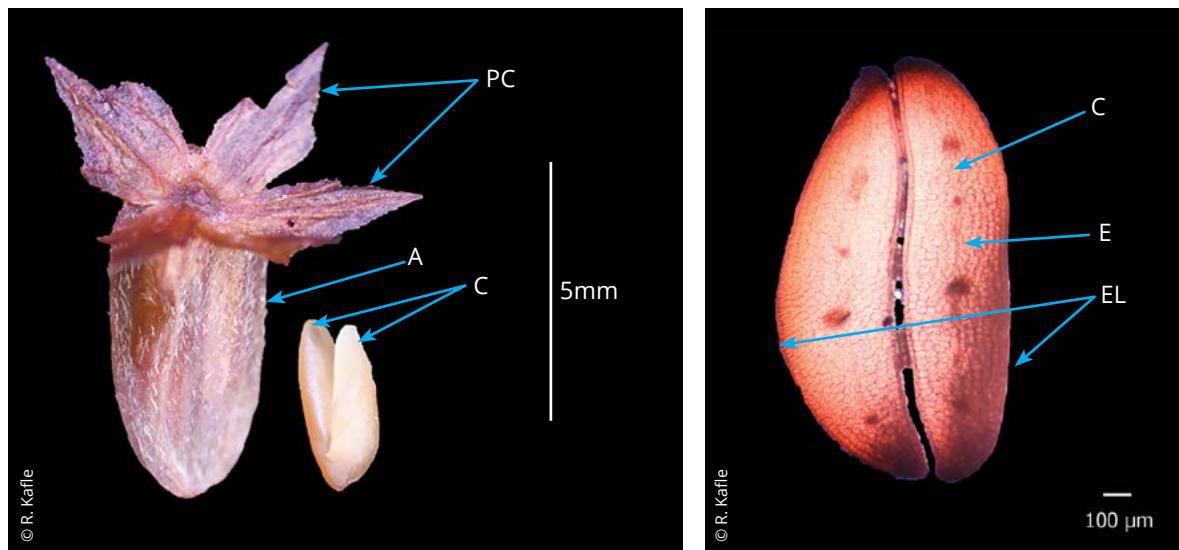
फोटो १३ : जटामसीको पातको आन्तरिक संरचना; (क) पातको मध्य शिराबाट ठाडो गरी काटिएको (V.S. of leaf through mid-vein), (ख) पातको मध्य शिरामा भएको संवहनी बन्डल (vascular bundle), (ग) पातको ब्लेडबाट ठाडो गरी काटिएको (V.S. of leaf through leaf blade), (घ) पातको तल्लो सतहमा रहेको एनोमोसाइटिक स्टोमाटा (anomocytic stomata) । माथिका सबै photomicrograph हरु Olympus CX43 माइक्रोस्कोपमा Olympus LC30 क्यामराबाट लिइएका हुन् । Magnification: (क), (ग) (10X±0=5x), (ख) (40X±0=5x), र (ग) (100X±0=5x) ।

[Abbreviations: UE (Upper Epidermis), LE (Lower Epidermis), C (Cuticle), M (Mesophyll layer), VB (Vascular bundle), X (Xylem), P (Phloem), GC (Guard cells), S (Stomatal pore), EC (Epidermal cells)]

जटामसीको फल/एकीन तथा बीउको संरचना :

एकीनको सूक्ष्मदर्शक यन्त्रबाट अध्ययन गर्दा प्रत्येक एकीनमा ऐटा मात्र बीउ (seed) हुन्छ । बीउलाई ठाडो गरी काटदा प्रत्येक बीउमा दुईवटा बीजपत्रहरू/कटिलेडन (cotyledons) देखिन्छन् [फोटो १४ (क)] । प्रत्येक बीजपत्र/कटिलेडनहरूमा

बाहिरबाट प्यारेन्काइमा कोषिका (parenchymatous cell) ले बनेको एकल तह हुने गर्दछ जसलाई एपिडर्मिस (epidermis) वा एपिडर्मल तह (epidermal layer) भनिन्छ । एपिडर्मल तहको भित्री भागमा इन्डोस्पर्म (endosperm) रहेको हुन्छ [फोटो १४ (ख)] ।



फोटो १४ : जटामसीको फल तथा बीउको संरचना; (क) एकीन तथा बीउ, (ख) बीउको आन्तरिक संरचना (ठाडो गरी काटिएको L.S.) । Photomicrograph (ख) Olympus CX43 सूक्ष्मदर्शक यन्त्रमा Olympus LC30 क्यामराबाट लिइएको हो । Magnification: क, ख ($10X \pm 0 = 5x$)

[Abbreviations: PC (Persistent calyx), A (Achenes), C (Cotyledons), S (Seed), E (Endosperm of seed), EL (Epidermal layer of cotyledons)]

२.४ जटामसीको सुगन्धित तेलको विश्लेषण :

जटामसीको तेल :

जटामसीको काण्डबाट निस्कने सुगन्धित तेल फिक्का पहेलो, हरियो-पहेलो वा खैरो रङ्गको हुन्छ [फोटो १५ (क)] । यो केही

मात्रामा लेसाईलो (viscous) हुन्छ र पानी भन्दा हलुका हुन्छ । यसको भौतिक-रसायनिक विशेषता तालिका २ (क) मा दिइएको छ ।

तालिका २ (क) : जटामसीको तेलको भौतिक-रसायनिक विशेषता

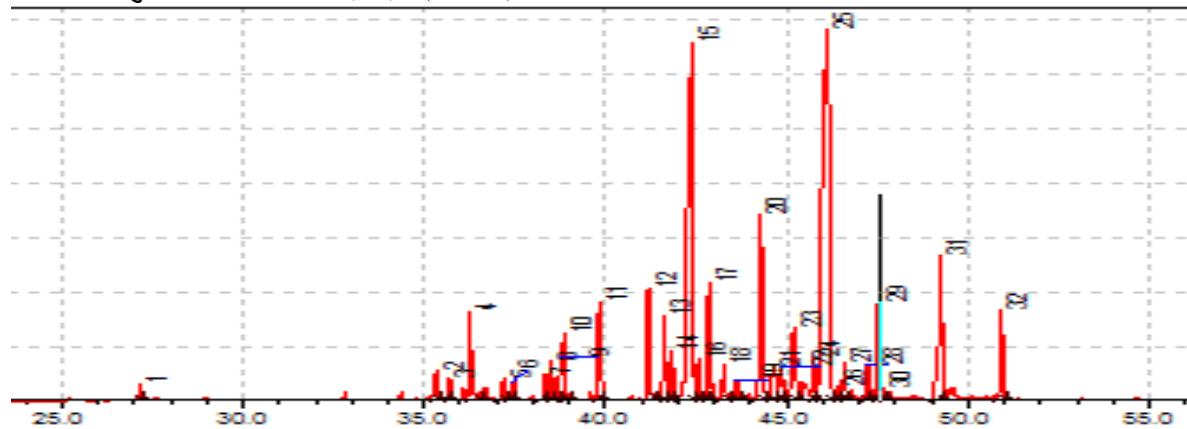
| PARAMETERS | REFERENCE VALUE |
|--|---------------------------------------|
| विशिष्ट गुरुत्वाकर्षण (Specific gravity) | 0.9300 to 0.9586 at 23°C |
| अपवर्तनी सूचकाङ्क (Refractive index) | 1.5055 to 1.5446 at 23°C |
| अम्लीय परिमाण (Acid value) | 1.86 to 5 |
| एस्टर परिमाण (Ester value) | 15 to 45 |
| एसिटाईलेसन पश्चातको एस्टर परिमाण (Ester value after acetylation) | 40 to 65 |
| घुलनशीलता (Solubility) | Soluble in 1:2 volumes of 90% alcohol |

(स्रोत: DPR, 2018)



फोटो १५ : (क) जटामसीको तेल

जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एस (GC-MS) विश्लेषण



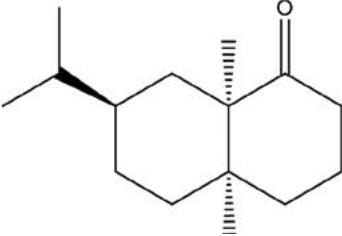
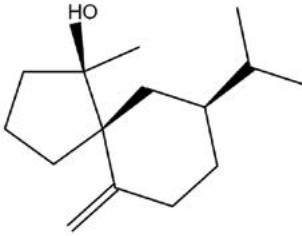
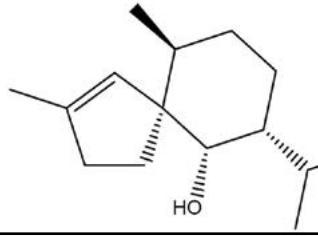
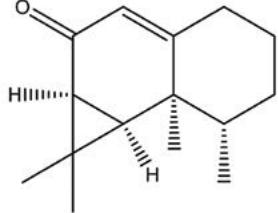
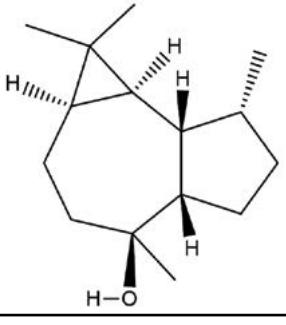
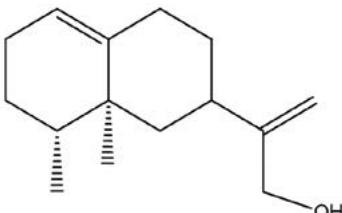
फोटो १५ : (ख) जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एस (GC-MS) क्रोमाटोग्राम (Chromatogram)

जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एसवाट गुणात्मक विश्लेषण गर्दा जटामसीको सुगन्धित तेलमा तीसवटा भन्दा बढी रसायनहरू (compounds) रहेको देखिन्छ। यी रसायनहरू मध्ये मुख्य रसायनहरूमा Valerenone (२६.२%), Spirojatamol (२१.४%), Gleenol (५.९४%), Aristolone (५.८६%), Viridiflorol (३.०३%), र Cadin-4-en-10-ol (२.८८%) रहेका छन् [तालिका २ (ख)]। जटामसीको सुगन्धित तेलमा पाइने रसायनहरू जटामसीको विरुवाको परिपक्वता, पाइने स्थान र सङ्गलन समयको आधारमा फरक फरक हन सक्छ।

तालिका २ (ख) : जटामसीको सुगन्धित तेलको जी.सी.एम.एस. (GC-MS) वाट गुणात्मक विश्लेषण

| PEAK | RT | Area | Area % | Name |
|------|--------|-----------|--------------|------------------------------|
| 1 | 27.142 | 2851890 | 0.35 | Thymol methyl ether |
| 2 | 35.327 | 7534983 | 0.92 | Maaliene <beta-> |
| 3 | 35.688 | 3934484 | 0.48 | (-)Aristolene |
| 4 | 36.265 | 21431385 | 2.62 | Calarene |
| 5 | 37.19 | 6196077 | 0.76 | Valerenone-4,7(11)-diene |
| 6 | 37.458 | 3595425 | 0.44 | Caryophyllene <9-epi-(E)-> |
| 7 | 38.339 | 5939746 | 0.73 | Ionone <(E)-, beta-> |
| 8 | 38.51 | 7627658 | 0.93 | Selinene <beta-> |
| 9 | 38.761 | 8200471 | 1 | Muurolene <gamma-> |
| 10 | 38.847 | 15587772 | 1.9 | Selinene <alpha-> |
| 11 | 39.82 | 24570496 | 3 | Maaliene <alpha-> |
| 12 | 41.173 | 23979492 | 2.93 | Sulfuryl decanoate |
| 13 | 41.625 | 17615557 | 2.15 | Patchouli alcohol |
| 14 | 41.835 | 10462555 | 1.28 | Intermedeol |
| 15 | 42.393 | 175326771 | 21.42 | Spirojatamol |
| 16 | 42.549 | 7641909 | 0.93 | Selina-3,7(11)-diene |
| 17 | 42.844 | 24781541 | 3.03 | Viridiflorol |
| 18 | 43.265 | 9158940 | 1.12 | Valencene <13-hydroxy-> |
| 19 | 43.604 | 4275066 | 0.52 | Neointermedeol |
| 20 | 44.284 | 48591305 | 5.94 | Gleenol |
| 21 | 44.662 | 13378011 | 1.63 | Muurolol <alpha-, epi-> |
| 22 | 44.852 | 9724285 | 1.19 | Globulol |
| 23 | 45.193 | 23529591 | 2.88 | Cadin-4-en-10-ol |
| 24 | 45.744 | 13043599 | 1.59 | Isovalencenol <(E)-> |
| 25 | 46.131 | 214433516 | 26.2 | Valerenone |
| 26 | 46.384 | 4048491 | 0.49 | Manool <7-alpha-hydroxy-> |
| 27 | 46.589 | 9322001 | 1.14 | Isogermacrene D |
| 28 | 47.226 | 8734263 | 1.07 | Atlantol <beta-> |
| 29 | 47.528 | 22905911 | 2.8 | Guaiene <alpha-> |
| 30 | 47.678 | 2755476 | 0.34 | Khusinol |
| 31 | 49.255 | 47974524 | 5.86 | Aristolone |
| 32 | 50.923 | 19249874 | 2.35 | Valerenic acid, methyl ester |

तालिका २ (ग) : जटामसीको सुगन्धित तेलको मुख्य मुख्य रसायनहरूको सूत्र

| रसायनको नाम | आणविक सूत्र (Molecular formula) | संरचनात्मक सूत्र (Structural formula) | उपयोग |
|--|------------------------------------|--|--|
| Valerenone | C15H26O |  | <ul style="list-style-type: none"> • उच्च रक्तचाप नियन्त्रण गर्न, • अनिन्द्रा, • चिन्ता तथा स्नायु रोगको उपचारमा प्रयोग |
| Spirojatamol | C15H26O |  | |
| Gleenol | C15H26O |  | <ul style="list-style-type: none"> • स्वाद र सुगन्धको लागि प्रयोग |
| Aristolone | C15H22O |  | <ul style="list-style-type: none"> • उच्च रक्तचाप नियन्त्रण गर्न |
| Viridiflorol | C15H26O |  | <ul style="list-style-type: none"> • विरुवाको मेटाबोलाइट, • एन्टमाइक्रोबियल ड्रग, • एन्ट-इन्फ्लेमेटरी एजेन्ट र एन्टिफिडेन्टको रूपमा काम गर्ने |
| Cadinol <alpha> (Cadin-4-en-10-ol) | C15H26O |  | <ul style="list-style-type: none"> • एन्टी-फंगल र हेपाटोप्रोटेक्टिभ (कलेजो सुरक्षा) को रूपमा काम गर्ने |

रिटेनसन टाईम (RT) :

रिटेनसन टाईम (RT) भन्नाले कुनै पनि रसायनले ग्यास क्रोमाटोग्राफिको कोलुममा विताएको समय भन्ने बुझिन्छ । रसायनले ग्यास क्रोमाटोग्राफिको कोलुममा विताएको समय

रसायन र स्थिर चरण (stationary phase) बीचको अन्तरक्रियामा भर पर्दछ । रसायन र स्थिर चरण बीचको अन्तरक्रिया बढौदै जाँदा रसायनको रिटेनसन टाईम पनि बढौदै जान्छ । फरक फरक रसायनको रिटेनसन टाईम फरक फरक हुन्छ ।

२.५ परिस्थितिकी र वातावरण

हावापानी : जटामसीको लागि समशीतोष्ण र शीतोष्ण हावापानी उपयुक्त हुन्छ । नेपालको पूर्व, मध्य तथा पश्चिमी उच्च पहाडी र हिमाली भेगमा जटामसी पाइन्छ । यो वनस्पति ओसिलो, आंशिक छाहारी भएको स्थान र चट्टानको कापमा पाइन्छ । धेरै जाडो मौसममा यसको जमिनमुनिको काण्ड सुषुप्त अवस्थामा रहन्छ, भने हिमाली भेगमा हिउँ परलन थालेपछि काण्डबाट पात पलाउन थाल्छ । वर्षातको मौसममा जटामसीसँगै हुक्ने भयाउहरुमा भरेको जटामसीको बीउहरु पनि अंकुरण हुन थाल्छन् (फोटो १६) ।

माटो : जटामसी धेरै प्राङ्गारिक पदार्थहरु भएको स्थानमा हुकिन्छ । यसलाई खोल्सा, पाखा, चिस्यान भएको स्थान, कुहाइको पात, बाक्को भयाउ र घाँस प्रजातिका वनस्पतिले ढोपेको माटो, बलौटे खुकुलो माटो, माटोको ढिस्को र भयाउले ढाकेको ठूला ठूला चट्टान उपयुक्त हुन्छ । यो वनस्पति प्राकृतिक वासस्थानमा थोरै फोस्फेटयुक्त (phosphate), हल्का अम्लीय माटो र उचित प्राङ्गारिक मल भएको स्थानमा पाइन्छ (Amatya et al., 1995) । मुख्यतया: यसलाई ५.६ देखि ६.६ pH भएको माटो उपयुक्त हुन्छ (Gautam & Raina, 2013) ।

तापक्रम : जटामसीको बीउहरु सामान्यतया १५ °C तापक्रममा अंकुरण हुन्छ र राम्रोसँग हुकिन्छ भने ३० °C भन्दा बढी तापक्रम भएको स्थानमा बीउको अंकुरण कम हुन्छ (Chauhan & Nautiyal, 2007) । कार्तिक महिनादेखि जाडो मौसममा यसको पात सुक्न थाल्छ, साथै काण्डपनि धेरै चिसोमा सुषुप्त

भएर बस्छ । तापक्रम अनुकूल भएपछि काण्डबाट पात पलाउन थाल्छ । काण्ड प्रायः जमिनमुनि रहने भएकोले अत्यधिक तथा न्यूनतम तापक्रममा पनि विग्रिदैन तर कहिलेकाहीं काण्ड जमिन माथि हुँदा प्रतिकूल तापक्रममा सुक्न थाल्छ र टुसा पलाउन सक्दैन । प्रकाशको तीव्रता बढी भएको स्थानमा भन्दा प्रकाशको तीव्रता कम भएको स्थानमा रहेको काण्डबाट स्वस्थ र बलियो टुसा पलाउँछ ।



© NJOS

फोटो १६ : भयाउमा भरेको जटामसीको बीउ अंकुरण हुँदै

जटामसीको प्राकृतिक वासस्थानमा पाइने अन्य वनस्पति प्रजातिहरु : जटामसीको प्राकृतिक वासस्थान वरपर पाइने अन्य भार, बुट्यान र रुख वर्गका वनस्पतिहरु देहाय बमोजिम रहेका छन् ।

भार : विष (*Aconitum spicatum*), बुकी फूल (*Anaphalis contorta*), बुकी फूल (*Anaphalis nepalensis*), म्याकुरी (*Bistorta affinis*), टुकी फूल (*Taraxacum sp.*), बुकी घाँस (*Carex sp.*), पाखनबेद (*Bergenia purpurascens*), ग्लागेन गागा (*Gentiana depressa*), दुधे भार (*Euphorbia stracheyi*), वन लसुन (*Fritillaria cirrhosa*), खिरौला / सेतक चिनी (*Polygonatum spp.*), कुट्की (*Neopicrorhiza scrophulariiflora*) आदि ।

बुट्यान : भाले सुनपाती (*Rhododendron lepidotum*), चिमाल (*Rhododendron campanulatum*), सुनपाती (*Rhododendron anthopogon*), भुसे सुनपाती (*Rhododendron setosum*), धुपी (*Juniperus indica*) आदि ।

रुख : भोजपत्र (*Betula utilis*), तालिसपत्र (*Abies spectabilis*) आदि ।

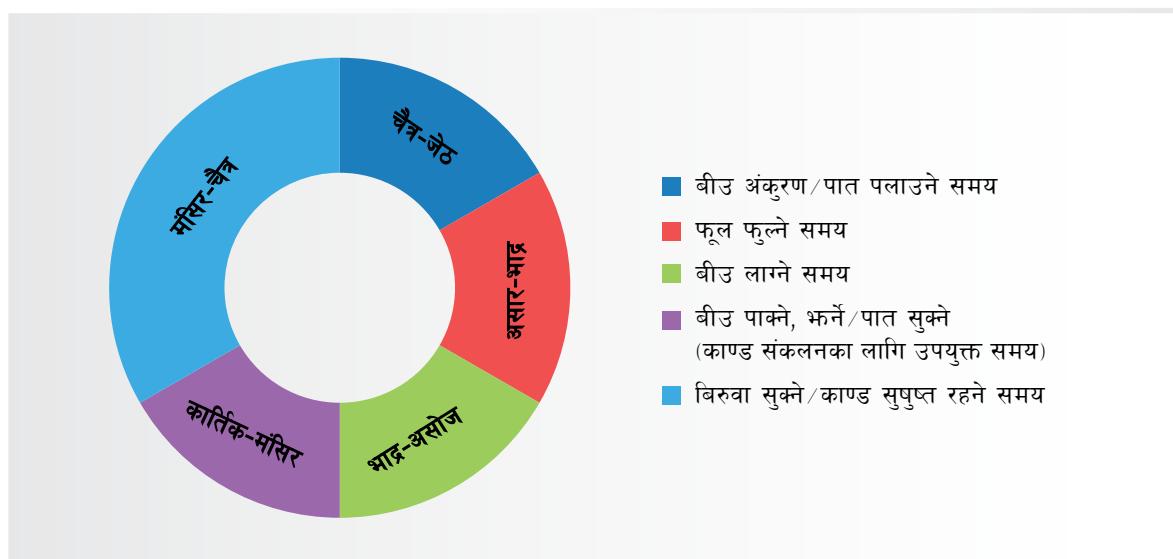


२.६ प्रजनन र जीवन चक्र

जटामसीको जीवन चक्र फोटो १७ मा देखाइएको छ । जटामसीको विरुवा वैशाखदेखि कार्तिकसम्म प्राकृतिक वासस्थानमा देखिन्छ । कार्तिकदेखि मसिरसम्ममा यसका पातहरु सुक्न थालेपछि बीउहरु परिपक्व भै भर्न थाल्छन् । तसरथ यो समय जटामसीको काण्ड सङ्गलनको लागि पनि उपयुक्त मानिन्छ । यद्यपि कठिपय स्थानमा यस समयमा हिँड़ परी जमिन ढाकिएको हुनाले सङ्गलन कार्य अत्यन्ते जटिल र अव्यवहारिक हुने गरेको जटामसीको सङ्गलन कार्यमा सलग्न मानिसहरुको अनुभव रहेको छ । भरेको परिपक्व बीउहरु प्रायः जमिनमा रहेको भयाउसँग मिसिएर बस्छन् । यसरी बीउ भरिसकेपछि कमितमा ४ देखि ५ महिनासम्म (मसिर-चैत्र) सुषुप्त अवस्थामा रहन्छ र त्यसपछि बीउहरु अंकुरण हुन थाल्छन् । प्राकृतिक वासस्थानको अनुकूल मौसम अनुसार चैत्र महिनामा बाक्तो भयाउमा बीउहरु अंकुरण हुन शुरु भई वैशाखदेखि जेठ महिनामा मसिना पातहरु निस्कन्छन् । अनुकूल मौसममा हरेक सहायक काण्डबाट पातहरु पलाउँछन् । बीउको उम्रने क्षमता १० देखि ८० प्रतिशतसम्म हुन्छ (Regmi et al., 2000; Nautiyal et al., 2003; Nautiyal & Nautiyal, 2004)

तथापि विरुवाको हुर्कने क्षमता त्यस स्थानको माटो, चिस्यान, तापकम, प्रकाश आदिले निर्धारण गर्दछ । यसका साथै हुङ्गा वा चट्टानमा भन्दा भयाउले छोपेको स्थानमा तुलनात्मक रूपमा विरुवा छिटो हुर्कन्छ (Ghimire et al., 2008) । सामान्यतया, जटामसी ढिलो बढ्ने र प्राकृतिक रूपमा पुनरोत्पादन हुन गाह्ने हुने वनस्पति मानिन्छ ।

बीउबाट उम्रेका विरुवाहरुमा फूल फुल्न कमितमा ३ देखि ४ वर्ष लाग्छ (Nautiyal et al., 2003) । असार महिनादेखि भाद्रसम्म फूल फुल्दछन् र भाद्रदेखि असोजसम्म बीउ लाग्दछ । बीउबाट उम्रने विरुवामा भन्दा जमिनमुनिको काण्डबाट निस्किएको विरुवाहरुमा छिटो फूल फुल्छ । प्राकृतिक वासस्थानमा बीउ र काण्ड दुवै भागबाट पुनरोत्पादन र पुनरुत्पादन हुन्छ । यसको बीउबाट भन्दा काण्डबाट पुनरोत्पादन सफल र धेरै भएको पाइन्छ । Purohit et al. (2012) का अनुसार यस वनस्पतिको बीउ र काण्डको टुसालाई Murashige and Skoog Media मा तन्तु प्रविधिबाट प्रयोगशालामा हुकाएर *in-vitro* संरक्षण र हारित गृहमा $25^\circ\text{C} \pm 20^\circ\text{C}$ तापकममा पर-स्थानीय संरक्षण गरी पुनरुत्पादन गर्न सकिन्छ ।



फोटो १७ : जटामसीको जीवन चक्र

२.७ उपयोगिता

औषधी : जटामसी चिनिया, तिब्बती, भारतीय, नेपाली, भुटानी तथा जापानी परम्परागत औषधी निर्माण तथा उपचारमा प्रयोग गरिन्छ (Dhiman & Bhattacharya, 2020) । यसको जमिनमुनिको काण्ड पेट सफा गर्न, पेटको विकार हटाउन, श्वास प्रश्वास सम्बन्धी रोग, छारे रोग, हैजा, उच्च रक्तचाप, रुधाखोकी, स्नायु, पिसाव सम्बन्धी रोगको उपचार गर्न तथा पाचन र प्रजनन सम्बन्धी विकारहरुको उपचार गर्न प्रयोग गरिन्छ । काण्डबाट निस्कने सुगन्धित तेल टाउको दुखाई कम गर्न प्रयोग गरिन्छ । यसको तेल दुखाईमा प्रयोग गर्नुका साथै सुगन्ध चिकित्सा (aromatherapy) का लागि बढी प्रयोग गरिन्छ ।

डोल्पा क्षेत्रका आम्चीहरुले काण्डबाट बनेको औषधी धाउ, रुधाखोकी, उच्च रक्तचाप, छारे रोगको लागि प्रयोग गर्दछन् (Ghimire et al., 2005) । काण्डबाट निस्कने तेल अनिद्राको समस्यामा प्रयोग गरिन्छ । यसको काण्ड पाइल्स र छाला चिलाउँदा प्रयोग गरिन्छ (Joshi & Siwakoti, 2020) । लेक लागेर विरामी हुँदा र कपाल दुखेमा यसको पातको प्रयोग गरिन्छ (Lama et al., 2001) । गोरखा आयुर्वेदिक कम्पनीले जटामसीको जरा/काण्ड “टेन्सारिन” नामको औषधीमा प्रयोग गरेको पाईएको छ ।

धार्मिक : जटामसीको काण्डबाट तेल निकाली सकेपछि छोका बाँकी रहन्छ, जसलाई मार्क भनिन्छ । मार्कको धूलो बास्नादार धूप तथा उच्च मूल्यको अगरबत्ती बनाउन प्रयोग

गरिन्छ। यो धूप पूजामा प्रयोग गरिन्छ (Ghimire et al., 2005)। उच्चस्तरको धूप बनाउन नेपालबाट विशेषतः भारत, बंगलादेश, पाकिस्तान र मध्यपूर्वका देशहरुमा यसको निकासी हुने गरेको छ। हिमाली क्षेत्रमा प्रशोधन नगरिकनै पनि धूप बनाउन स्थानीय बासिन्दाहरुले जटामसीको काण्डलाई ध्रयोग गर्ने गरेको पाइन्छ।

सांस्कृतिक प्रयोग : नेवार जातिले श्राद्ध गर्ने समयमा पिण्ड राख्ने ठाउँ अगाडी जटामसीको काण्ड धिउमा मुछेर बाल्ने गरेको पाइन्छ (Joshi & Joshi, 2019)। काण्ड बास्नादार हुने हुनाले विवाहमा अत्तरको रुपमा दुलहीलाई दिने चलन छ र देवरथारोहण गर्दा होममा पनि बालिन्छ।

सौन्दर्य सामग्री : काण्डबाट निस्कने सुगन्धित तेलबाट साबुन, अत्तर लगायतका सौन्दर्य सामग्री बनाइन्छ (Subedi & Shrestha, 1999)। कपाललाई कालो बनाउन र झर्न नदिन यसको तेल टर्निक (hair tonic) को रुपमा पनि प्रयोग गरिन्छ। जटामसीको तेल उच्च मूल्यका सौन्दर्य प्रसाधन बनाउने उद्योगहरुमा बढी प्रयोग हुन्छ (Mulliken, 2000)।

किटनाशक प्रयोग : जटामसीको बास्नादार काण्ड बालेर किराहरु धपाउन प्रयोग गरिन्छ (Subedi & Shrestha, 1999) भने लुगालाई किराबाट बचाउन लुगा राख्ने दराजमा जटामसीको सुकेको काण्ड राख्ने गरिन्छ।

२.८ जटामसी संरक्षणको अवस्था

अन्तर्राष्ट्रिय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ले जटामसीलाई अति सङ्खाटपन्न (critically endangered) सूचीमा राखेको छ। जटामसीलाई IUCN Red Data List को अति सङ्खाटपन्न सूचीको पनि A2cd वर्गमा राखिएको छ। विगत १० वर्ष वा प्रजातिको ३ पुस्ताको अवधिमा कुनै पनि प्रजातिको प्राकृतिक अवस्थामा पाइने संख्या ८० प्रतिशत भन्दा बढी मात्राले घटेको पाइएमा तथा सो प्रजातिको फैलावट, अवस्थिति र वासस्थानको गुणस्तर घटेको र चरम दोहन भएको पाइएमा IUCN Red Data List को A2cd वर्गमा प्रजातिलाई राखिन्छ (Chauhan, 2021)।

CAMP (2001) ले यस वनस्पतिलाई संवेदनशील संरक्षण सूचीमा समावेश गरेको छ, भने Shrestha and Joshi

(1996) ले संवेदनशील (vulnerable), Shrestha and Shrestha (2012) को लाङ्गोलाङ्ग राष्ट्रिय निकुञ्जको अध्ययन र Lama et al. (2001) को डोल्पाको अध्ययनले यसलाई अति संवेदनशील (highly vulnerable) सूचीमा उल्लेख गरेको छ। सन् १९९७ देखि जटामसीलाई दुर्लभ वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार महासंघ CITES (Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora) को अनुसूची-२ मा समावेश गरिएको छ (Joshi et al., 2017)। वन नियमावली, २०७९ अनुसार जटामसी प्रशोधन नगरी विदेश निर्यात गर्न नपाइने व्यवस्था रहेको छ, तर प्रशोधन गरेर विदेश निर्यात गर्नु परेमा निर्यातकताले सङ्खाटपन्न वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण नियमावली, २०७६ को प्रावधान बमोजिम सम्बन्धित निकायबाट अनुमति लिनुपर्छ।

२.९ प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको साधिक स्थिति

नेपालका केही जिल्लाहरुमा प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको संख्यात्मक स्थिति (frequency, density, average density, productivity potential and distribution areas) बारे अध्ययन भएको छ (Ghimire et al., 1999; Shrestha & Shrestha, 2012; ANSAB, 2015; Chhetri & Gautam, 2015; DoF, 2017; DPR, 2018; Dhakal et al., 2021)। जटामसीको औसत उपलब्ध आवृत्ति (Frequency) हुम्लाको मेलछाममा ०.९% र रसुवामा ४०% रहेको अध्ययनहरुले देखाएको छ। सन् २०१७ र सन् २०१८ मा वनस्पति विभागबाट गरिएको अध्ययन अनुसार प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको आवृत्ति गोरखाको पाप्लेलेकमा ८६.६%, सिन्धुपाल्चोकको ड्रयांगडुङ्गे डाँडामा ९३.३% र जुम्लाको भुर्चुलालेकमा ९०% पाइएको छ भने डिभिजन वन कार्यालयको स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना अनुसार जटामसीको कुल वृद्धि मौज्दातमध्ये सबैभन्दा कम (१.२ मेरिटिक टन) सोलुखुम्बुमा र सबैभन्दा बढी (१७००० मेरिटिक टन) हुम्लामा पाइएको छ (तालिका ३)।

तालिका ३ : प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको कुल वृद्धि मौज्दात

| सि.नं. | जिल्ला | कुल वृद्धि मौज्दात (मे.ट.) |
|--------|--------------|----------------------------|
| १ | जुम्ला | १५० |
| २ | हुम्ला | १७००० |
| ३ | मुगु | २२३.२ |
| ४ | बझाङ्ग | ४७.८ |
| ५ | बाजुरा | १५८.१ |
| ६ | डोल्पा | ४४०.० |
| ७ | कालिकोट | ५९४.२ |
| ८ | पूर्वी रुकुम | २२.० |
| ९ | पश्चिम रुकुम | ८.० |
| १० | रोल्पा | २०.५ |

| | | |
|------------------|---|------------------|
| ११ | जाजरकोट | ३०६.७ |
| १२ | दैलेख | ४९.७३६ |
| १३ | डोटी | ५.० |
| १४ | प्यूठान | ३.० |
| १५ | मनाङ | ३६.५ |
| १६ | बागलुङ्ग | ५.२ |
| १७ | म्याग्दी | ५.७ |
| १८ | लमजुङ्ग | २७.८ |
| १९ | गोरखा | ४.९ |
| २० | धादिङ्ग | २.० |
| २१ | नुवाकोट | १.० |
| २२ | रसुवा | ९.६२ |
| २३ | सिन्धुपाल्चोक | २.२५ |
| २४ | रामेछाप | १.५ |
| २५ | ताप्चेजुङ्ग | २५.० |
| २६ | सोलुखुम्बु | १.२ |
| २७ | अपि नम्पा संरक्षण क्षेत्र, दार्चुला | १.७ |
| २८ | शे-फोक्सुण्डो राष्ट्रिय निकुञ्ज, डोल्पा (मध्यवर्ती क्षेत्र) | ५०.० |
| कुल जम्मा | | १९,२०३.०३ |

स्रोत: DPR, 2019 (NDF)

२.१० काण्ड सङ्गलन गर्ने उपयुक्त समय र परिमाण

जटामसीको सङ्गलन गरिने भाग जमिनमुनिको काण्ड हो । ताजा काण्डलाई हल्का पहेलो रौं जस्तो रेशाले ढाकेको हुन्छ भने काण्ड सुकेपछि रेशाको रङ खैरो वा गाढा खैरो देखिन्छ । सामान्यतः कर्तिक-मसिर महिनामा पातहरु सुक्न थालेपछि यसको बीउहरु पनि परिपक्व भएर भर्न थाल्दछन् र दिगो सङ्गलनको दृष्टिकोणबाट सोही समयमा जमिनमुनिको परिपक्व काण्ड खनेर सङ्गलन गर्ने उपयुक्त हुन्छ । उच्च हिमाली क्षेत्रमा जटामसी पाइने तथा कुनै कुनै स्थानमा मसिर महिनामा नै हिँउ पर्न शुरु भइसक्ने हुनाले ती स्थानहरुमा व्यवहारिक रूपमा सो समयमा काण्ड सङ्गलन गर्न कठीन हुने सङ्गलकहरुको अनुभव छ ।

काण्ड सङ्गलन गर्दा सङ्गलन क्षेत्रको भौगोलिक अवस्था हेरी कुल उपलब्ध परिपक्व विरुवाहरू मध्ये भिर तथा भिरालो चट्टान (rocky outcrop) बाट १० प्रतिशत भन्दा कम र घाँसे मैदान (meadow) बाट २५ प्रतिशत भन्दा कम विरुवाबाट मात्र काण्ड सङ्गलन गर्नुपर्छ (Ghimire et al., 2008) । प्रत्येक जटामसीको भुण्डबाट काण्ड सङ्गलन गर्ने क्रममा २० देखि २५ प्रतिशत काण्ड पुनरूत्थानको लागि छाइन उपयुक्त हुन्छ । साथै एउटा क्षेत्रबाट एक पटक जटामसीको काण्ड सङ्गलन गरेको पाँच वर्ष पछि मात्र अवस्था हेरी अर्को पटक सङ्गलन गर्ने उपयुक्त हुन्छ ।

(जटामसीको दिगो सङ्गलन तथा व्यवस्थापनका उपायहरु विस्तृत रूपमा अनुसूची-१ मा दिइएको छ ।)



फोटो १८ : स्थानीयहरुले जटामसी सङ्गलन गर्दै (सौजन्य: एन्साब नेपाल)

२.११ सङ्गलन पश्चातको प्रविधि

जटामसी सुगन्धित बनस्पति भएकोले यसको सङ्गलन पछिको भण्डारण र प्रशोधनमा विशेष ध्यान दिनुपर्दछ । जमिनसुनिको काण्ड सङ्गलन गरी सकेपछि सङ्गलित काण्डबाट माटो लगायतका अन्य अनावश्यक वस्तु भारी, पानीले सफा गरेर तत्कालै छायाँमा वा मधुरो घाममा सुकाउनु पर्दछ । राम्रोसँग सुकेको काण्डलाई श्रेणीकरण (grading) गरेर सफा सुख्खा

बोरामा राखी विस्तृत लेबल (नाम, मिति, तौल, व्याच नम्बर आदि) सहित किरा वा मुसा नआउने र हावा लाने कोठामा भण्डारण गर्नुपर्दछ । सङ्गलन गरिएको काण्डको परिपक्वता, प्रशोधन गर्ने तरिका र भण्डारण समय आदिले जटामसीको तेलको परिमाण र गुणस्तरमा असर पर्दछ । त्यसैले काण्डको असल सङ्गलन अभ्यास र प्रशोधनले बढी मूल्य पाउनुको साथै मूल्य अभिवृद्धिमा टेवा पुर्दछ ।



फोटो १९ : स्थानीय सङ्गलकले जटामसी सङ्गलन पश्चात् भण्डारणको लागि सुकाउदै (सौजन्य: एन्साब नेपाल)



© D. Regmi

२.१२ बजारको अवस्था

जटामसी नेपालको हिमाली तथा पहाडी क्षेत्रमा बसोबास गर्ने समुदायको लागि जीविकोपार्जनमा टेवा पुऱ्याउने प्रमुख सुगन्धित जडीबुटी हो । विगत २-३ दशकदेखि विश्वको विकसित र विकासोन्मुख राष्ट्रहरूमा परम्परागत औषधीय पद्धति, आधुनिक र आयुर्वेदिक औषधीय उत्पादन, सुगन्ध चिकित्सामा, शृङ्गारको सामग्री बनाउन र सुगन्धित धूपहरू बनाउन जटामसीको प्रयोग हुँदै आईरहेको छ । हाल यसको माग राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा बढ्दो छ । स्थानीय व्यापारीवर्ग र अन्य सरोकारबालासँगको सर्वेक्षण अनुसार २० देखि ३० प्रतिशत जटामसी अप्रशोधित रूपमा स्थानीय बजारमा विक्री वितरण हुने अनुमान छ । विगत लामो समयदेखि जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार हुने गरेको भएतापनि साईटिस ट्रेड डाटाबेश अनुसार सन् २००८ देखि नेपालबाट जटामसीको निर्यात भएको वैज्ञानिक अभिलेख भेटिन्छ ।

नेपाल सरकारले आर्थिक विकासका लागि सूचीकृत ३३ प्रजातिका बनस्पतिहरू मध्ये १९ प्रजातिका बनस्पतिबाट उत्पादित वस्तुहरू विदेशमा निर्यात गर्दै आईरहेको छ । यसरी निर्यात गरिने वस्तुमा जटामसीको तेल र मार्कको पनि महत्वपूर्ण स्थान रहेको छ (GoN/MoC, 2016) । जटामसीको तेल निकाल्दा प्राप्त हुने हाईड्रोसोल पनि विदेश निकासी हुने सम्भावना भएकाले प्रशोधनकर्ताले यसको निकासीको पनि माग गर्ने गरेका छन् । लुम्बिनी प्रदेशको नेपालगञ्ज र कपिलवस्तु जिल्लामा मुख्य गरी जटामसी प्रशोधनका लागि ठूला र मझौला किसिमका उद्योगहरू समेत स्थापना भई सञ्चालनमा रहेका छन् ।

बन तथा भू-संरक्षण विभागको सन् २०१२ देखि २०२३ सम्मको CITES Export Permit Record अनुसार विभिन्न देशमा जटामसीको मार्क र तेल निर्यात भएको देखिन्छ (तालिका ४ र ५) ।

तालिका ४ : सन् २०१२ देखि २०२३ सम्म नेपालबाट जटामसीको छोका (मार्क) निर्यातको परिमाण (फिलोग्राम)

| देश | २०१२ | २०१३ | २०१४ | २०१५ | २०१६ | २०१७ | २०१८ | २०१९ | २०२० | २०२१ | २०२२ | २०२३ |
|----------------------|-----------------|-----------------|-----------------|----------------|-----------------|-----------------|----------|----------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| भारत | ३९,९०९ | १,०३,९२८ | २०११,६२२ | १९,३,३४७ | २,२६,०५९ | २,१०,४३३ | ० | ० | १,७२,७७० | ३,११,१५६ | १,७५,२२५ | १,७९,३७९ |
| पाकिस्तान | ६८,७५९ | २४,५०७ | ६४,४०० | ४४,६० | ९,७४० | ८,९३४ | ० | ० | १,५१,०६५ | ३८,२६० | १,९०,५८० | ० |
| बंगलादेश | ० | ० | २,८५० | ० | ५,३६० | ० | ० | ० | ४,९३० | ५,००० | ० | १,५०० |
| संयुक्त अरब ईमिरेट्स | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३६,७०० | ० | ७,००० | ० |
| जम्मा | १,०५,६२० | १,२८,४३५ | २,७८,८७२ | २३७,९५७ | ३,३०,२५९ | २,९३,६९७ | ० | ० | ३,६५,४६५ | ३,६०,४९६ | ३,७५,७०५ | १,८०,८७६ |

योतः: DoFSC, CITES Export Permit Record; तोटः सन् २०१८ र २०१९ मा CITES सचिवालयबाट कोटा नपाई निर्यातमा रोक तथा सन् २०२३ को डिसेम्बर १७ सम्मको तथ्याङ्क ।

तालिका ५ : सन् २०१२ देखि २०२३ सम्म नेपालबाट जटामसीको सुनान्धित तेल निर्यातको परिमाण (फिलोग्राम)

| देश | २०१२ | २०१३ | २०१४ | २०१५ | २०१६ | २०१७ | २०१८ | २०१९ | २०२० | २०२१ | २०२२ | २०२३ |
|-----------------------|----------------|--------------|--------------|----------------|--------------|--------------|----------|----------|----------------|--------------|--------------|------|
| भारत | ८३३ | २,४०४ | ३,११७ | २,६५१ | ४,०५७ | ३,९४६ | ० | ० | २,८१५ | ३,२२३ | २५७५ | २८१८ |
| पाकिस्तान | ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| संयुक्त राज्य अमेरिका | ५ | २५ | १३५ | १० | १,४८६ | ८१८ | ० | ० | २४५ | ५९३ | ३१० | ३६० |
| फ्रान्स | ४१ | ० | ८ | १५ | ० | ५० | ० | ० | ६ | १ | १० | |
| वेलियम | ११९ | ० | २० | २१६,५ | ४०४ | ० | ० | ० | १ | ० | १० | |
| बेलायत | ० | ० | १० | १६८ | २५ | ० | ० | ० | ० | ५ | ० | |
| स्वीटजरल्ड | ० | १८० | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५० | ५ | |
| जर्मनी | ० | ० | ४० | २० | १० | १० | ० | ० | ० | ११ | ० | |
| संयुक्त अरब ईमिरेट्स | ० | ० | ५० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ६७ | १०० | १०० |
| दक्षिण कोरिया | ० | ० | ० | ३२ | १ | ० | ० | ० | ० | ५ | ० | |
| चीन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ४ |
| जापान | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ | २ | |
| चाइनिज ताईवान | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ११ | ५ | ० | ० | २ |
| क्यानडा | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० | ० | |
| हाटाली | | | | | | | | | | | | ५ |
| जम्मा | १,०३६,७ | २,६०९ | ३,५५६ | ३,१६३,५ | ५,९७३ | ४,८२४ | ० | ० | ३,९५६,५ | ३,०२२ | ३,२८४ | |

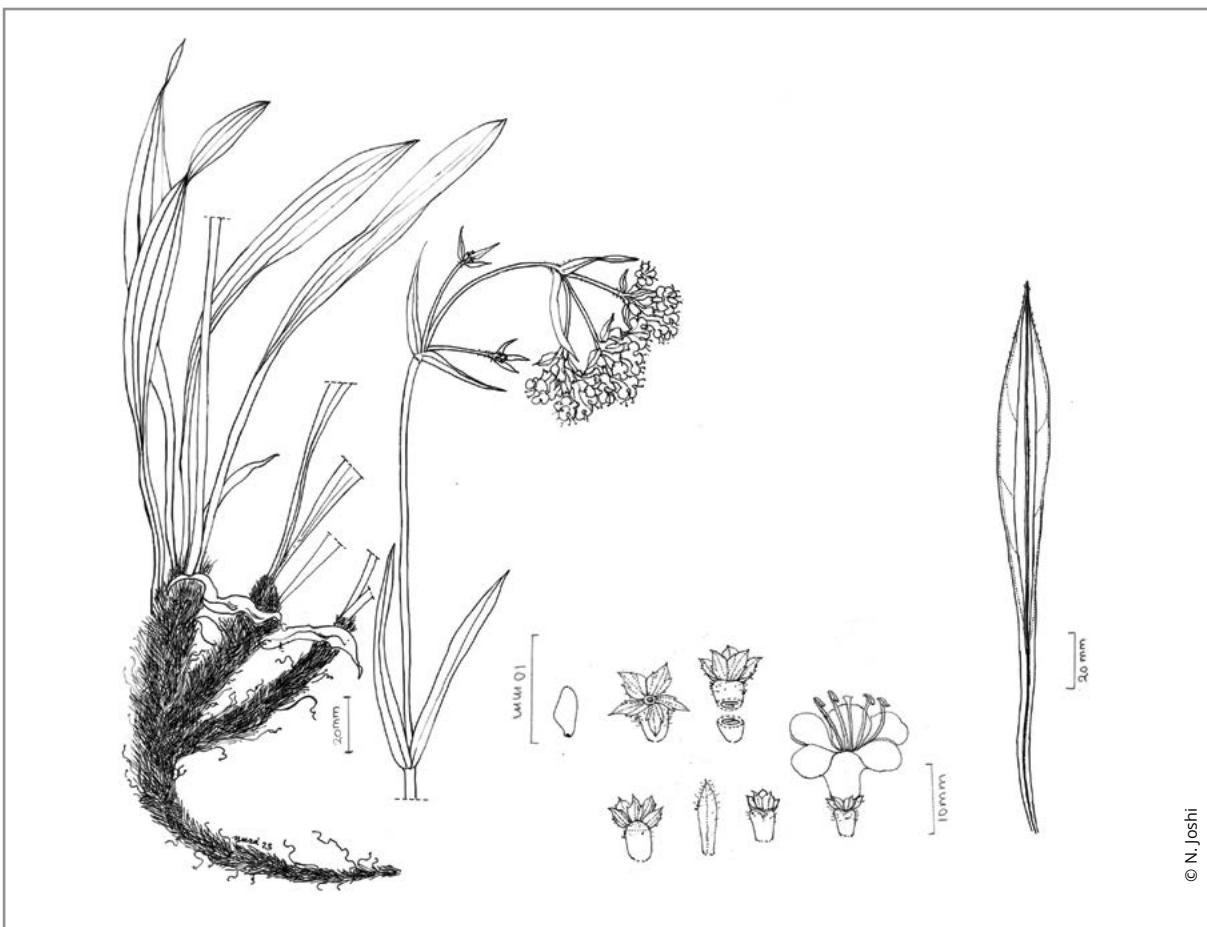
योतः: DoFSC, CITES Export Permit Record; तोटः सन् २०१८ र २०१९ मा CITES सचिवालयबाट कोटा नपाई निर्यातमा रोक तथा सन् २०२३ को डिसेम्बर १७ सम्मको तथ्याङ्क ।

को दररेट बमोजिम कोटा अनुसारको परिमाणको राजश्व बुझाउनु पर्दछ ।

- प्राप्त कोटा र स्वीकृत व्यवस्थापन योजनाको स्वीकृत वार्षिक सङ्गलन परिमाणको आधारमा डिभिजन वन कार्यालयले चार किला तोकी सङ्गलनपूर्ण प्रदान गर्दछ । सङ्गलन पश्चात् नापतौल मुचुल्का गरी सङ्गलन इजाजत दिने डिभिजन वन कार्यालयले नेपालभित्र ओसारपसार गर्न छोडपूर्ण प्रदान गर्दछ ।
- जटामसी लगायत साईटिसको अनुसूची-२ र ३ मा परेका लोपोन्मुख वा संरक्षित वनस्पति वा सोको नमूना मुलुकभित्र ओसारपसारका लागि व्यवस्थापन निकायले दिने अनुमतिपत्रको अवधि बढीमा २१ (एकाइस) दिनको हुनेछ ।
- वन नियमावली, २०७९ बमोजिम वनस्पति विभाग वा जडीबुटी उत्पादन तथा प्रशोधन कम्पनी लिमिटेडको सिफारिसमा (आफ्नो उत्पादनको हकमा बाहेक) वन तथा भू-संरक्षण विभागको स्वीकृति लिएर नेपालभित्र प्रशोधन गरी सारतत्व निकासी गर्न अनुमति पाएको अवस्थामा मात्र जटामसी विदेश निकासी गर्न पाउने हुनाले व्यापारीवर्गले विदेश निकासी गर्नुपर्व सङ्गलनकर्तावाट प्राप्त गरेको जटामसीको जमिनमुनिको काण्ड (rhizome) प्रशोधन गरी निकालिएको तेल र छोक्रा (मार्क) मध्येबाट थोरै नमूना प्रयोगशालामा परीक्षण गराउने प्रयोजनको लागि छुट्याइ बाँकीलाई डिभिजन वन कार्यालयबाट सिलबन्धी गराउनु पर्दछ ।

प्रयोगशालामा परीक्षण गर्नको लागि छुट्याइएको नमूना साईटिसको वनस्पतिको वैज्ञानिक निकाय वनस्पति विभागमा परीक्षण गरी उक्त विभागबाट सिफारिस प्राप्त गरे पश्चात् साईटिसको वनस्पतिको व्यवस्थापन निकाय वन तथा भू-संरक्षण विभागले विदेश नियातको लागि व्यापारीवर्गलाई साईटिस प्रमाणपत्र सहित निकासी अनुमतिपत्र प्रदान गर्दछ । निकासी अनुमतिपत्रको म्याद बढीमा ६ (छ) महिनाको हुनेछ । अनुमतिपत्रको अवधिभित्र सो अनुमतिपत्र बमोजिमको काम हुन नसकेमा सम्बन्धित व्यक्ति, संस्था वा निकायले म्याद थपको लागि व्यवस्थापन निकाय समक्ष माग गरेमा मुनासिब माफिकको कारण भएमा व्यवस्थापन निकायले बढीमा ७ (सात) दिनको अवधि थप गर्न सक्नेछ ।

- जटामसीको निकासी/पुनः निकासी अनुमतिपत्रको लागि रूपैयाँ १,००० (एक हजार) र पैठारीको लागि रूपैयाँ २,००० (दुई हजार) दस्तुर तिर्नुपर्दछ ।
- व्यवस्थापन निकायको रूपमा रहेको वन तथा भू-संरक्षण विभागले जटामसी लगायत साईटिस अनुसूचीमा उल्लेखित वनस्पतिहरूको व्यापारको अवस्थिति भलिक्ने गरी साईटिस सचिवालयलाई वार्षिक प्रतिवेदन अनिवार्य रूपमा पेश गर्नु पर्दछ ।
- वैज्ञानिक निकायको रूपमा रहेको वनस्पति विभागले जटामसीको अहानिकारक निष्कर्षको प्रतिवेदन आवधिक रूपमा साईटिस सचिवालयमा पेश गर्नुपर्दछ ।



चुनौती र अवसर

३.१ चुनौतीहरू

जटामसी पाइने उच्च पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रमा अत्याधिक चिसोपन, कृषि उपजको न्यून उत्पादन आदिले गर्दा स्थानीय समुदाय जीविकोपार्जनका लागि जटामसी सङ्घलन र बेचखिनमा संलग्न भएको पाइन्छ । जटामसीको राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा बढ्दो माग रहेको तर जटामसीको असल खेती अभ्यास नहुनाले यसको अत्याधिक र अव्यवस्थित सङ्घलन एक प्रमुख चुनौतीको रूपमा रहेको छ । स्व-स्थानीय र पर-स्थानीय संरक्षण सम्बन्धी कार्यक्रमको अभाव, न्यून अध्ययन, अनुसन्धान, कठिन भौगोलिक अवस्थाका कारण जटामसीको राष्ट्रिय स्रोत सर्वेक्षण तथा यस वनस्पति पाइने सबै स्थानहरूमा जटामसीको विस्तृत सांख्यिक रिस्ट्रिक्शन (population status) अध्ययन हुन नसक्नु यसको चुनौती रहेको छ ।

यसका साथै स्थानीय समुदायको वन माथि अधिक निर्भरता, प्राकृतिक वासस्थानको क्षीकरण, चोरी निकासी, अति तथा अपरिपक्व सङ्घलन, वन विनाश, वन डेढलो, भूक्षय र जलवायु परिवर्तनको प्रभाव आदि पनि जटामसीको संरक्षणमा चुनौतीका रूपमा रहेका छन् । पछिल्तो समयमा हिमाली क्षेत्रको बढ्दो तापक्रम र जलवायु परिवर्तनका कारण सिर्जित विपत्तिहरू पनि जटामसी संरक्षणको तडकारो चुनौतीको रूपमा देखिएको छ । जटामसी अनुचित समयमा सङ्घलन गर्ने तथा सङ्घलनको समयमा डिभिजन वन कार्यालय र नियामक निकायहरूबाट अनुगमन मूल्याङ्कन नहुने हुँदा यसको अवैज्ञानिक सङ्घलन बढ्दो छ । स्थानीय समुदायहरूलाई जटामसी सङ्घलन, प्रशोधन, ओसारपसार तथा विदेश निकासीका सम्बन्धमा कानूनी विषयमा ज्ञान नहुँदा जटामसीको अत्याधिक सङ्घलन र चोरी निकासीका घटनाहरू हुने गरेको पाइन्छ तथा विभिन्न स्थानीय समुदाय र व्यापारीहरू कानूनी भमेला र मुद्दा मामिलामा फस्ने गरेको पाइन्छ । विभिन्न जिल्लाहरूको आवधिक वन व्यवस्थापन योजना समयमा स्वीकृत हुन सकेको पाइदैन । यसरी समयमा नै जिल्लाको आवधिक वन व्यवस्थापन योजना स्वीकृत वा नवीकरण नहुँदा जिल्लामा जटामसीको संकलन तथा ओसार पसारको इजाजत डिभिजन वन कार्यालयहरूले उपलब्ध गराउन सक्दैन । यसबाट यसमा आश्रित समुदायको जीविकोपार्जनमा नकारात्मक असर पर्ने र लुकीछिपी चोरी निकासी बढ्ने सम्भावना हुन्छ ।

जटामसीको राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय मागमा एकरुपता नहुनु, बजार मूल्यमा अत्याधिक घटबढ हुनु जस्ता घटनाहरू पनि यसको संरक्षणमा चुनौतीको रूपमा देखिएका छन् जसले गर्दा सङ्घलक समुदायले समुचित आर्थिक फाइदा लिन सकेका छैनन् ।

जटामसीको संरक्षण, सम्बद्धन र विकासका साथै यसको प्रशोधन र उत्पादन वृद्धिमा लगानीको अभाव रहेको छ । यसका लागि सरकारी, गैरसरकारी तथा निजी क्षेत्रबाट उल्लेखनीय लगानी जुटाउन सकिएको छैन ।

३.२ अवसरहरू

विश्वभरमै सबैभन्दा बढी र उच्च गुणस्तरको जटामसीको भण्डार नेपालमा रहेको छ । नेपालमा यसको उत्पादन पूर्ण रूपमा प्राङ्गारिक रहेको छ । नेपालको उच्च पहाडी र हिमाली भेगमा तथा मानव वस्ती भन्दा टाढा रहेको प्राकृतिक वन जङ्गलमा रहेको जटामसीमा कुनै किसिमको रसायनिक पदार्थ, मलखाद तथा कीटनाशक विषादीहरू प्रयोग भएको छैन । जसले गर्दा यसको अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा ठूलो माग र उच्च मूल्य रहेको पाइन्छ । त्यसैले यसको प्राङ्गारिक प्रमाणीकरण (organic certification), दिगो वन प्रमाणीकरण (forest certification), न्यायसँगत व्यापार प्रमाणीकरण (fair trade certification) जस्ता अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा महत्वपूर्ण प्रमाणीकरणहरू प्राप्त गरी अत्याधिक विदेशी रकम देशले प्राप्त गर्ने प्रशस्त सम्भावना र अवसर रहेको छ ।

विश्वमै अत्याधिक माग रहेको यस जडीबुटीको स्थानीयस्तरमै वस्तु निर्माण गरी निर्यात गर्न सकेमा स्थानीय समुदायमा रोजगारी सिर्जना हुनुका साथै जडीबुटीको उचित मूल्य प्राप्त गर्न सकिने अवसर रहेको छ । त्यसै स्थानीयस्तरमा उद्योग धन्दा स्थापना हुँदा बाटोधाटो पनि निर्माण हुने हुनाले हिमाली क्षेत्रमा पर्यटन प्रवर्द्धनमा सहयोग पुरन सक्ने देखिन्छ ।

स्थानीय समुदायमा अन्तर्निहित जटामसी सम्बन्धी परम्परागत ज्ञान र सीपको जग्नी गर्न सकिएमा अन्तरपुस्ता ज्ञान हस्तान्तरण गर्न सकिन्छ । यसैरी स्थानीयको समन्वयमा स्व-स्थानीय संरक्षण, गुणस्तरीय बीउ उत्पादन, असल खेती प्रविधि विकास गरी प्राकृतिक वासस्थानमा पाइने जटामसी लोप हुनबाट जोगाउन सकिन्छ र समुदायमा आधारित नसरी स्थापना मार्फत पर-स्थानीय संरक्षण गरी रोजगारी सिर्जना गर्न सकिन्छ ।

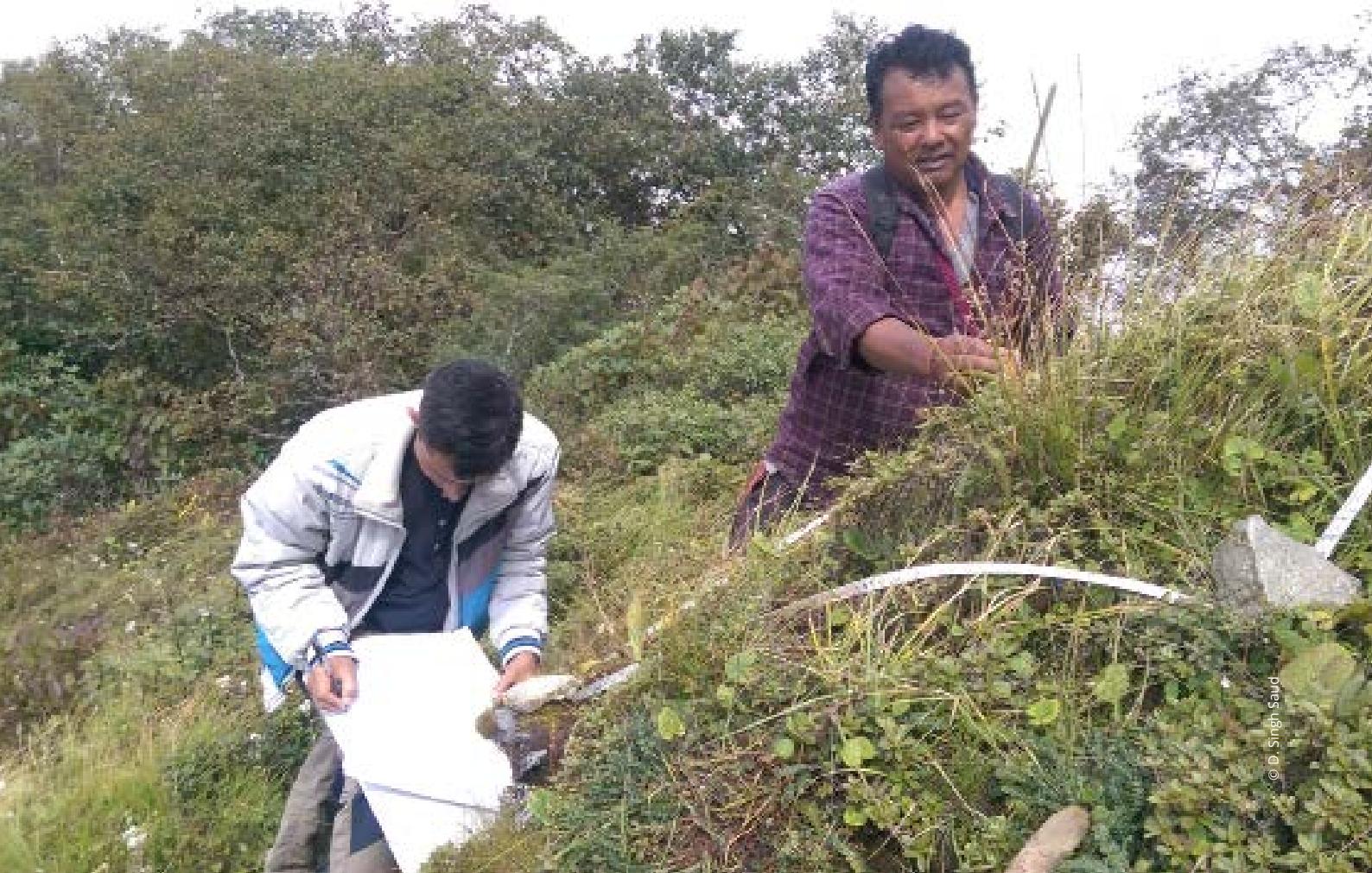
जटामसीको दिगो संरक्षणबाट राष्ट्रको आर्थिक समृद्धि तथा स्थानीय समुदायको जीविकोपार्जनमा ठूलो योगदान पुरने देखिन्छ । उच्च पहाडी तथा हिमाली क्षेत्रका विभिन्न स्थानहरूमा पाइने जटामसीको दिगो संरक्षणको कार्ययोजना राष्ट्रको आर्थिक उन्नतिको लागि अवसर हुनेछ ।

३.३ कानूनी तथा नीतिगत दस्तावेज

यस कार्ययोजना तयारीको क्रममा पुनरावलोकन गरिएका र जटामसीको संरक्षणमा सधाउ पुऱ्याउने कानूनी तथा नीतिगत दस्तावेजहरू देहाय बमोजिम रहेका छन्।

- नेपालको संविधान
- राष्ट्रिय वन नीति, २०७५
- राष्ट्रिय वातावरण नीति, २०७६
- राष्ट्रिय जलवायु परिवर्तन नीति, २०७८
- जडीबुटी एवं गैरकाष्ठ वन पैदावार विकास नीति, २०६१
- वन क्षेत्र रणनीति, २०७२-२०८६
- निकासी पैठारी (नियन्त्रण) ऐन, २०१३
- राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण ऐन, २०२९
- राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण नियमावली, २०३०
- हिमाली राष्ट्रिय निकुञ्ज नियमावली, २०३६
- स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४
- वन ऐन, २०७६ तथा वन नियमावली, २०७९
- वातावरण संरक्षण ऐन, २०७६ तथा वातावरण संरक्षण नियमावली, २०७७
- सङ्कटापन्न वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण ऐन, २०७३
- सङ्कटापन्न वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण नियमावली, २०७६
- कर्णाली प्रदेशमा जडीबुटीहरूको दिगो सङ्कलन क्षेत्र र खेती सम्भाव्यता क्षेत्र घोषणा सम्बन्धी अवधारणापत्र, २०७५

- जडीबुटी विकासका लागि अनुदान सम्बन्धी कार्यविधि, २०७५
- वनस्पति स्रोतको अनुसन्धान कार्यविधि, २०७० (पहिलो संशोधन, २०७३)
- विभिन्न प्रदेशका वन ऐन तथा नियमावलीहरू
- विभिन्न प्रदेशका वातावरण संरक्षण ऐन तथा नियमावलीहरू
- Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora (CITES), 1973
- Nepal Trade Integration Strategy (NTIS), 2016
- WHO Traditional Medicine Strategy, 2014–2023
- Community Forestry Inventory Guidelines, 2004
- NWFPs Inventory Guidelines, 2012
- Approved Divisional Forest Management Plans of Respective Division Forest Offices



संरक्षणका प्रयासहरु

४.१ राष्ट्रिय तथा स्थानीयस्तरबाट भए गरेका संरक्षणका प्रयासहरु

- नेपाल सरकारले आर्थिक विकासका लागि प्राथमिकता प्राप्त ३३ वटा वनस्पति साथै खेती प्रविधि अनुसन्धान कार्यका लागि प्राथमिकता प्राप्त १३ वटा वनस्पतिमा जटामसीलाई पनि समावेश गरेको छ ।
- सङ्घटापन वन्यजन्तु तथा वनस्पति प्रजातिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारलाई नियन्त्रण गर्न नेपाल सन् १९७५ मा साईटिस महासन्धिको १२ औं सदस्यको रूपमा पक्ष राष्ट्र भएको थियो । यस महासन्धिले निर्दिष्ट गरे वमोजिमको कार्य गर्न तथा साईटिसको अनुसूची-२ मा सूचीकृत जटामसीको व्यापारलाई नियन्त्रण र नियमन गर्नको लागि नेपाल सरकारले सङ्घटापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण ऐन, २०७३ तथा सङ्घटापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण नियमावली, २०७६ कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।
- सङ्घटापन वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नियन्त्रण ऐन, २०७३ लाई वि.सं. २०७५ मा संशोधन गरिएको छ ।
- साईटिसको वनस्पतिको वैज्ञानिक निकाय वनस्पति विभागले अहानिकारक निष्कर्ष, २०१९ तयार गरेको छ ।
- नेपालमा साईटिसको वनस्पतिको व्यवस्थापन निकाय वन तथा भू-संरक्षण विभागले साईटिस सचिवालयबाट प्राप्त कोटाको आधारमा र वनस्पति विभागले तयार गरी साईटिस सचिवालयमा पेश गरेको अहानिकारक निष्कर्षहरुको आधारमा जिल्लागत सीमा तोकी, सङ्गलन गर्न लाग्ने समय, परिमाण, विधि आदि उल्लेखित विवरण सहितको निवेदनको आधारमा सम्बन्धित निवेदनकर्तालाई जटामसी सङ्गलन गर्न अनुमति दिने प्रावधान रहेको छ । यसको लागि व्यवस्थापन निकायले सूचना प्रकाशन गरी इच्छुक व्यक्ति तथा सघ संस्थाहरुबाट जटामसी सङ्गलनका लागि निवेदन माग गर्दछ ।
- वन नियमावली, २०७९ वमोजिम वनस्पति विभाग वा जडीबुटी उत्पादन तथा प्रशोधन कम्पनी लिमिटेडको सिफारिसमा (आफ्नो उत्पादनको हकमा बाहेक) वन तथा भू-संरक्षण विभागको स्वीकृति लिएर नेपालभित्र प्रशोधन गरी सारतत्व निकासी गर्न अनुमति पाएको अवस्थामा बाहेक जटामसीलाई विदेश निकासी गर्न प्रतिबन्ध लगाइएको छ ।
- वनस्पति विभाग र वन तथा भू-संरक्षण विभागबाट जटामसी लगायतका जडीबुटीहरुको खेती विस्तार कार्यका लागि जडीबुटी कृषकवर्गहरुलाई सहजीकरण गर्ने कार्य विगतमा भएका छन् (DPR, 2019; DoFSC, 2019 unpublished reports) ।
- वनस्पति विभाग, एन्साब तथा अन्य संघ, संस्थाहरुले समय समयमा स्थानीय समुदाय, व्यापारी वर्ग, सरोकारबाला निकायहरुलाई जटामसीको दिगो संरक्षण र सङ्गलन सम्बन्धमा सचेतना अभिवृद्धि गराउन गोष्ठी तथा अन्तरक्रिया कार्यक्रम आयोजना गर्दै आईरहेको छ ।
- वनस्पति विभागले साईटिस म्यानुअल, साईटिसमा सूचीकृत वनस्पति प्रजातिको पोष्ट्र प्रकाशन, नेपालका केही जिल्लामा प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसीको सांख्यिक स्थिति अध्ययन गर्ने कार्य गर्नुका साथै साईटिसमा सूचीकृत वनस्पति प्रजाति सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशन गर्ने कार्य गर्दै आईरहेको छ ।
- नेपालका जटामसी पाइने केही जिल्लाहरुमा यसको सांख्यिक स्थितिको बारेमा शिक्षण संस्था, विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी निकायबाट अध्ययन भइरहेको छ ।
- साईटिसको अनुसूची-२ मा सूचीकृत यस वनस्पतिको व्यवस्थापन निकाय वन तथा भू-संरक्षण विभागबाट जारी गरिएको इजाजतपत्र निकासी गर्ने नाकाको भन्सार कार्यालयबाट जाँच पश्चात् मात्र निकासी पैठारी गर्न दिने प्रावधान रहेको छ भने गैरकानूनी रूपमा निकासी गर्न लागेमा अभियुक्तलाई सजाय दिने व्यवस्था समेत रहेको छ ।
- डिभिजन वन कार्यालयको वन व्यवस्थापन योजनामा उक्त जिल्लाबाट वार्षिक रूपमा सङ्गलन गर्न सकिने जटामसी लगायतका अन्य जडीबुटीको परिमाण बारे उल्लेख गर्ने गरिएको छ ।
- सङ्गलन गरेको जटामसीको नापी मुचुल्का डिभिजन वन कार्यालयबाट भई त्यहाँको सिफारिसको आधारमा वन तथा भू-संरक्षण विभागले आन्तरिक ओसारपसारको लागि म्याद तोकी छोडपूर्णी प्रदान गर्ने गरिएकोमा वि. सं. २०८० बाट सम्बन्धित डिभिजन वन कार्यालयले सङ्गलन तथा ओसार पसारका लागि अनुमतिपत्र प्रदान गर्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ ।
- प्रशोधन पश्चात् प्रशोधनकर्ताले विदेश निकासी गर्न चाहेमा वनस्पति विभागको सिफारिसको आधारमा वन तथा भू-संरक्षण विभागले प्रति निकासी अनुमतिको लागि रु. १,००० (एक हजार) दस्तुर लिई विदेश निकासी अनुमति प्रदान गर्ने गरिएको छ ।
- एन्साब, नेपालले स्थापनाकालदेखिनै जटामसीको अध्ययन, अनुसन्धान, क्षमता विकास, दिगो व्यवस्थापन, स्रोत सर्वेक्षण,

मूल्य अभिवृद्धि र उत्तरदायी व्यापारमा सहयोग गर्दै आइरहेको छ ।

- यस्तैगरी सम्बन्धित स्थानीय तहहरु तथा सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरु, डिभिजन तथा सब-डिभिजन बनकार्यालयहरु, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संघ संस्थाहरुले जटामसीको संरक्षण, सम्बद्धनका लागि जनसहभागिता एवं जनचेतना अभिवृद्धि गर्ने कार्य गरिरहेका छन् ।

४.२ अन्तर्राष्ट्रियस्तरबाट भए गरेका संरक्षणका प्रयासहरु

साईटिस महासन्धिको उद्देश्य सङ्कटापन्न वन्यजन्तु तथा वनस्पतिलाई हरेक पक्ष राष्ट्रहरुले आफ्नो मुलुकमा यथाशक्य प्राकृतिक अवस्थामा नै संरक्षण गर्नु एवं सोको अन्तर्राष्ट्रिय

व्यापार नियमन गर्नु हो । जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारलाई नियन्त्रण तथा नियमन गर्न यो वनस्पतिलाई सन् १९९७ मा साईटिसको अनुसूची-२ मा समावेश गरिएको छ । संयुक्त राष्ट्र संघको जैविक विविधता महासन्धि, १९९२ ले समेत जैविक विविधताको दिग्गो उपयोगको लागि विश्वव्यापी रूपमा आष्टवान गरेकोले यस महासन्धिको पक्ष राष्ट्र भएका मुलुकहरुले लोपोन्मुख वनस्पतिलाई स्व-स्थानीय र पर-स्थानीय संरक्षणको लागि प्राथमिकतामा राखेका छन् ।

साईटिस सचिवालयले प्रत्येक तीन वर्षमा पक्ष राष्ट्रहरुको महासभा गर्ने गरेको छ । विभिन्न संघ संस्थाहरुको सहयोग र समन्वयमा साईटिस सचिवालयले नेपाल तथा विभिन्न देशका पदाधिकारीहरुलाई विभिन्न किसिमका क्षमता अभिवृद्धि गर्ने कार्यक्रम गर्दै आई रहेको छ ।



© T.B. Darij



© K. Sharma Dhakal

संरक्षण कार्ययोजना

५.१ लक्ष्य

यस संरक्षण कार्ययोजनाको प्रमुख लक्ष्य स्थानीय समुदायको सक्रिय सहयोग र सहभागितामा जटामसीको प्राकृतिक वासस्थानको संरक्षण, पुनःस्थापना, दिगो व्यवस्थापन गर्नुका साथै खेती प्रविधि विकास गरी खेती विस्तार र यसको मूल्य अभिवृद्धि तथा न्यायसंगत व्यापार मार्फत रोजगारी सिर्जना, जीविकोपार्जन र राष्ट्रको आर्थिक समृद्धिमा टेवा पुऱ्याउनु रहेको छ।

५.२ उद्देश्य, रणनीति र कार्यनीति

जटामसी संरक्षण कार्ययोजनाले जटामसी पाइने क्षेत्रहरूमा

स्थानीय समुदायको समन्वयमा स्व-स्थानीय संरक्षण तथा जटामसी खेतीको लागि उपयुक्त क्षेत्रहरूमा पर-स्थानीय संरक्षण गर्ने, जटामसीको पुनःस्थापना गर्ने, असल खेती प्रविधिको विकास गरी जटामसीको व्यावसायिक गुणस्तरीय उत्पादनमा जोड दिने, यसको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारलाई नियमन गर्ने, जटामसी संरक्षणका लागि सचेतना अभिवृद्धि गर्नुका साथै जटामसी केन्द्रित उद्यमको विकास गर्दै स्थानीय जीविकोपार्जनमा सहयोग पुऱ्याउने उद्देश्यहरू लिएको छ। यी उद्देश्यहरू हासिल गर्नका लागि देहाय बमोजिमका रणनीति र कार्यनीति/क्रियाकलापहरू अबलम्बन गरिएका छन्।

रणनीति १ : जटामसीको स्रोत सर्वेक्षण गर्ने।

आैचित्य :

जटामसी एक बहुमूल्य वनस्पति हुनका साथै यसको अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा पनि बढ्दो माग रहेको छ। तर यो वनस्पति पाइने क्षेत्रहरू र सो क्षेत्रमा यसको उपलब्ध परिमाण बारे विभिन्न सरकारी, गैरसरकारी, शिक्षण संस्थाहरूबाट सीमित मात्र अध्ययन, अनुसन्धान भइरहेको छ। तसर्थे यस सम्बन्धमा राष्ट्रियस्तरमा नै विस्तृत रूपमा अध्ययन गरिएमा यस वनस्पतिको अवस्था बारे जानकारी भई यसको संरक्षण र यसमा आश्रित स्थानीय समुदायको जीविकोपार्जनमा टेवा पुग्ने देखिन्छ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसी पाइने क्षेत्रको र सो क्षेत्रमा जटामसीको उपलब्ध परिमाणको विस्तृत अध्ययन, अनुसन्धान भई यस वनस्पतिको राष्ट्रिय अवस्थाको बारेमा अभिलेख रहनेछ।
- जटामसीको दिगो संरक्षण हुने तथा स्थानीय समुदायको आर्थिकस्तरमा टेवा पुगेको हुनेछ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|---|--|--|
| १.१ | जटामसीको स्रोत सर्वेक्षण निर्देशिका तयार गर्ने। | • ववि, वभूवि | • ववाम, वअप्रके, डिवका |
| १.२ | जटामसीको स्रोत सर्वेक्षण गर्ने। • राष्ट्रियस्तर • प्रादेशिकस्तर | • ववि, वअके, वभूवि • ववाम, प्रवम, डिवका | • प्रवम, डिवका • वभूवि, स्थाता, सावउस, वअप्रके, गैसस, विश्वविद्यालय |
| १.३ | जटामसी पाइने सामुदायिक वनहरूको स्रोत गणना र कार्ययोजना नवीकरण गर्ने (२०० हे. भन्दा माथि)। | • ववाम, प्रवम, डिवका | • वअप्रके, वभूवि, ववि |

रणनीति २ : जटामसी पाइने प्राकृतिक वासस्थानको संरक्षणका जोखिमहरु पहिचान तथा सोको न्युनीकरण गरी स्व-स्थानीय संरक्षण गर्ने ।

औचित्य :

जटामसी पाइने प्राकृतिक वासस्थानको वास्तविक समस्या र समाधानका उपायहरुको बारेमा वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसन्धान केही सरकारी, गैरसरकारी संस्था, विश्वविद्यालय जस्ता शिक्षण संस्थाहरूमा सीमित रहेको छ । सरकारी, गैरसरकारी तथा शिक्षण संस्थाहरूका साथै स्थानीय समुदाय र स्थानीय निकायहरूको सहयोग र समन्वयमा जटामसीको वासस्थान, उपलब्ध क्षेत्र तथा सो क्षेत्र संरक्षणका जोखिमहरुको समेत पहिचान गरेर सोको न्युनीकरण र निराकरण गर्न विस्तृत अध्ययन गरी सांख्यिक विवरण तथा वितरण वृद्धि गर्नुपर्ने र स्व-स्थानीय संरक्षण गर्नुपर्ने देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- प्राकृतिक वासस्थानमा जटामसी पाइने क्षेत्रको निर्धारण, जोखिम पहिचान र सांख्यिक स्थिति, फैलावट, पर्यावरण, पुनरुत्थान र पुनःउत्पादनको विस्तृत अध्ययन, अनुसन्धान भई सो क्षेत्रको जटामसी सम्बन्धी विवरण अद्यावधिक हुनेछ ।
- स्थानीय समुदाय र सम्बन्धित सरोकारवालाहरुको पहिचान भई निजहरूको सहभागितामा जटामसीको स्व-स्थानीय संरक्षण हुनेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|--|-------------------------------|---|
| २.१ | जटामसीको पुनरुत्थान र पुनःउत्पादन प्रक्रियाहरुको विस्तृत अध्ययन र अनुसन्धान गर्ने । | वअके, ववि, डिवका | प्रवम, स्थात, डिवका, सावउस, वउस, वअप्रके, गैसस, विश्वविद्यालय |
| २.२ | जटामसी पाइने स्थान र यसले ओगट्ने क्षेत्रफल निर्धारण गरी सो क्षेत्रको संरक्षणका जोखिमहरु पहिचान गर्ने र न्युनीकरणका उपायहरु अवलम्बन गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, सावउस | स्थात, वउस |
| २.३ | जटामसी पाइने क्षेत्रमा जटामसीको सांख्यिक अवस्थाको अध्ययन र अभिलेखीकरण गरी संख्याको आधारमा क्षेत्र वर्गीकरण गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, वअप्रके | स्थात, सावउस, प्रानि, विश्वविद्यालय |
| २.४ | जटामसीको उपलब्धताको हिसाबले महत्वपूर्ण बनस्पति क्षेत्र (Important Plant Area) पहिचान गरी सोको संरक्षण गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, ववाम, प्रवम | स्थात, सावउस |
| २.५ | स्व-स्थानीय संरक्षण कार्यका लागि स्वीकृत बन व्यवस्थापन योजना पुनरावलोकन गरी जटामसी संरक्षणका क्रियाकलापहरु समावेश गर्ने । | डिवका | प्रवम, डिवका, स्थात, सावउस, गैसस, स्थास |
| २.६ | जटामसीको स्व-स्थानीय संरक्षणका लागि जनचेतनामूलक सामग्री तयार गरी प्रचार प्रसार गर्ने । | वअके, ववि, डिवका | स्थात, सावउस, गैसस |
| २.७ | जटामसीको दिगो संरक्षण सम्बन्धी निर्देशिका तयार गर्ने । | ववि, वभूवि | ववाम, डिवका |

रणनीति ३ : जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गरी पर-स्थानीय संरक्षण तथा व्यावसायिक खेतीलाई प्रोत्साहन गर्ने ।

औचित्य :

प्राकृतिक वासस्थानबाट मात्र जथाभावी जटामसी सङ्कलन गर्दै जाँदा यसको उपलब्धतामा कमी आई यसको अस्तित्व नै जाखिममा पर्न जान्छ । प्रविधिको अभावमा नेपालमा हालसम्म जटामसीको खेती विस्तार तथा पर-स्थानीय संरक्षण भएको पाइदैन । तसर्थ, प्राकृतिक वासस्थानबाट लोप हुनु अगावै यस प्रजातिको सफलताका साथ दीर्घकालीन पर-स्थानीय संरक्षण गर्न आवश्यक छ । यसको लागि वनस्पति उद्यान तथा राष्ट्रिय वन एवं संरक्षण क्षेत्रमा जटामसीको जर्मप्लाज्म संरक्षण गर्न आवश्यक देखिन्छ । साथै जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गर्न सकेमा यसको व्यावसायिक खेती विस्तार भई स्थानीयको जीविकोपार्जनमा समेत योगदान पुग्ने देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- प्रजातिको विभिन्न स्थानबाट जर्मप्लाज्म सङ्कलन भई पर-स्थानीय संरक्षण हुनेछ ।
- वनस्पति उद्यान, सरकारद्वारा व्यवस्थित वन र सामुदायिक वनहरू तथा संरक्षण क्षेत्र लगायतका सम्भावित क्षेत्रमा जटामसीको संरक्षण भई यसको संख्यात्मक रूपमा वृद्धि हुनेछ ।
- जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास भएको हुनेछ ।
- व्यावसायिक खेतीलाई प्रोत्साहन गरी राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा व्यापार व्यवसाय अभिवृद्धि भई स्थानीय समुदायका साथै समग्र राष्ट्रकै आर्थिक विकासमा ठेवा पुग्नेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|---|---------------------------------------|--|
| ३.१ | वनस्पति उद्यान, राष्ट्रिय वन (सरकारद्वारा व्यवस्थित वन र सामुदायिक वन), संरक्षण क्षेत्रमा जटामसीको seed/rhizome germplasm, field germplasm को संरक्षण गर्ने field gene bank र सामुदायिक नर्सरीको स्थापना गरी पर-स्थानीय संरक्षण गर्ने । साथै seed bank मा बीउ संरक्षण गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, सावउस, रानिका, रावउ | प्रवम, स्थात |
| ३.२ | पहिले जटामसी पाइने स्थानमा यसको संख्या कम हुन गई सङ्कलनकर्ताहरू हाल सो भन्दा माथि उचाइमा सङ्कलनको लागि जाने गरेकोले पहिले जटामसी पाइने स्थानहरूमा यसको पुनःस्थापना गर्ने । | डिवका, वअके, सावउस | स्थात, ववि, वभूवि |
| ३.३ | तन्तु प्रजनन (Tissue culture) प्रविधिबाट प्रयोगशालाहरूमा यस प्रजातिको protocol विकास गर्ने वा आवश्यकता अनुसार परिमार्जन गरी in-vitro conservation, mass propagation गर्ने र उपयुक्त स्थानमा परीक्षण, प्रसारण तथा विस्तार गर्ने । | ववि | डिवका, वअके, सावउस, वभूवि, विश्वविद्यालय, निजी क्षेत्र, नेविप्रप्र |
| ३.४ | जटामसीको बीउ र काण्डबाट खेती गर्न अनुसन्धान गर्ने । | ववि, वअके | डिवका, सावउस, विश्वविद्यालय |
| ३.५ | जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गर्ने । | वअके | डिवका, ववि, वभूवि, सावउस, निजी क्षेत्र |
| ३.६ | जटामसीको असल खेती अभ्यास कार्यान्वयन गर्न सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कृषक समह, सहकारी समूह, स्थानीय समुदाय छन्नौट गरी तालिम प्रदान गर्ने । | वअके, वभूवि, ववि, डिवका, वअप्रके | स्थात, सावउस, गैसस |

रणनीति ४ : जटामसीको अवैध व्यापारको अनुगमन तथा नियन्त्रण गर्ने ।

आैचित्य :

प्राकृतिक वासस्थानमा रहेको जटामसीको अवैध रूपमा हुने गरेको व्यापारले यसको संख्यामा उल्लेख्य रूपमा कमी हुने हुँदा यसको समाधानको लागि जिल्लाको स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजनामा उल्लेखित परिमाण अनुसारको सङ्कलन, निकासी गर्नुका साथै असल सङ्कलन अभ्यासलाई प्रोत्साहन गर्नुपर्ने देखिन्छ । अनियमित तथा अवैध सङ्कलन, ओसारपसार तथा विदेश निकासी र पैठारीलाई निरुत्साहित गर्न र संलग्न व्यक्तिलाई कानूनी कारबाहीको दायरामा ल्याउन आवश्यक देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना बमोजिम मात्र सङ्कलन र निकासी हुनेछ ।
- असल सङ्कलन अभ्यासले जटामसीको दिगो व्यवस्थापन हुनेछ ।
- जटामसीको अवैध सङ्कलन, ओसारपसार तथा विदेश निकासी र पैठारी निरुत्साहित हुनेछ ।
- अनियमित र अवैध कारोबारमा संलग्न व्यक्ति र समुदायलाई कानून बमोजिम कारबाही हुनेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|--|--------------------------|--------------------------------------|
| ४.१ | जटामसीको दिगो संरक्षण तथा व्यवस्थापनका लागि अहानिकारक निष्कर्ष (NDF) तयार तथा परिमार्जन गर्ने । | ववि | डिवका, ववाम, प्रवम, वभूवि |
| ४.२ | जटामसीको सङ्कलन तथा आन्तरिक ओसारपसार, विदेश निकासी र पैठारी सम्बन्धी तथ्याङ्ग अद्यावधिक गर्ने । | ववि, वभूवि | भका, डिवका, रानिका |
| ४.३ | स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजनामा उल्लेखित परिमाण बमोजिम जटामसीको सङ्कलन, ओसारपसार र निकासी भए नभएको अनुगमन गर्ने । | डिवका, संक्षेका | भका, स्थात, सावउस, रानिका, गैसस |
| ४.४ | सूचना प्रविधिमा आधारित कम्प्युटर सफ्टवेयरद्वारा अनुमार्गणीय पद्धति (traceable system) को विकास गरी सम्पूर्ण कारोबारलाई पारदर्शी बनाउने । | वभूवि | ववि, डिवका |
| ४.५ | जटामसीको दिगो सङ्कलन बारे जडीबुटी सङ्कलनकर्ता, व्यापारी लगायतका सरोकारवालासँग अन्तरकिया गर्ने । | वअके, ववि, डिवका | सावउस, भका, गैसस, स्थास सावउस, स्थात |
| ४.६ | सरोकारवालालाई असल सङ्कलन अभ्यासको तालिम प्रदान गर्ने र फिल्डमा सो बमोजिम सङ्कलन भए नभएको बारे समय समयमा अनुगमन गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, अप्रके | सावउस, स्थास |
| ४.७ | साईटिसमा सूचीकृत वनस्पतिको व्यवस्थापन निकायले प्रदान गरेको निकासी अनुमति पत्रमा उल्लेखित परिमाण बमोजिम जटामसीको निकासी भए नभएको अनुगमन वैज्ञानिक निकायले गर्ने । | ववि | वअके, भका, वभूवि |
| ४.८ | जटामसीको व्यापार अवस्था सम्बन्धी वार्षिक प्रतिवेदन तयार गरी साईटिस सचिवालयमा पेश गर्ने । | वभूवि | ववि, डिवका, भका |
| ४.९ | साईटिसको वनस्पतिको वैज्ञानिक निकाय तथा व्यवस्थापन निकायबाट साईटिसको महासभा (CoP) मा सहभागी हुने । | ववि, वभूवि | ववाम |

रणनीति ५ : जटामसी संरक्षणका लागि सचेतना तथा जनसहभागिता अभिवृद्धि गर्ने ।

औचित्य :

प्रशोधन गरी सारतत्व निकासी गर्न अनुमति पाएको अवस्थामा बाहेक विदेश निकासी गर्न प्रतिबन्धित तथा साईट्सको अनुसूची-२ मा जटामसी सूचीकृत रहेता पनि यस प्रजातिको बढ्दो व्यापारिक मागले गर्दा प्राकृतिक वासस्थानबाट जथाभावी संकलन र विभिन्न नामबाट यसको अवैध रूपमा व्यापार हुन सक्ने देखिएकोले जथाभावी संकलन र अवैध व्यापारलाई नियन्त्रण गरी यसको दिगो संरक्षण तथा व्यापारमा सहजता ल्याउनका लागि भन्सार कार्यालय, स्थानीय सङ्गठनकर्ता, जडीबुटी व्यापारी, प्रहरी लगायत अन्य सरोकारवालाहरूलाई यस प्रजातिको महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था बारे जनचेतना तथा जनसहभागिता अभिवृद्धि गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- जटामसी पाइने क्षेत्रहरूको स्थानीय समुदाय तथा सरोकारवालाहरू साथै जटामसी निकासी हुने भन्सार नाकामा यसको सङ्गठन, स्व-स्थानीय एवं पर-स्थानीय संरक्षणका विधि, पहिचानका तरिका तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था विषयमा सचेतनाको अभिवृद्धि भई अवैध व्यापार समेत नियन्त्रण हुनेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|---|----------------------------------|--|
| ५.१ | स्थानीय सङ्गठनकर्ता, जडीबुटी व्यापारी, स्थानीय समुदाय, भन्सार कार्यालय, प्रहरी लगायत अन्य सरोकारवालाहरूका लागि यस प्रजातिको पहिचान गर्ने तरिका, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था बारे गोष्ठी तथा तालिम जस्ता सचेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, वभूवि, वअप्रके | प्रवम, स्थात |
| ५.२ | जटामसीको पहिचान, दिगो सङ्गठन, संरक्षण सम्बन्धी booklets, pamphlets, brochure, monograph, डिजिटल आदि प्रकाशन तथा प्रसारण गरी सचेतना अभिवृद्धि गर्ने । | वअके, ववि | स्थात, वभूवि, ववि |
| ५.३ | जटामसी पाइने क्षेत्रका विद्यालयहरूमा जटामसीको पहिचान, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था सम्बन्धमा सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, वभूवि, वअप्रके | डिवका, वअके, सावउस, वभूवि, विश्वविद्यालय, निजी क्षेत्र, नेविप्रप्र |
| ५.४ | स्व-स्थानीय एवं पर-स्थानीय संरक्षणका लागि स्थानीय समुदाय र सम्बन्धित सरोकारवालाहरूको पहिचान गरी तालिम प्रदान गर्ने । | वअके, ववि, डिवका, वभूवि, वअप्रके | डिवका, वअके, सावउस, वभूवि, विश्वविद्यालय, |
| ५.५ | जटामसी संरक्षण कार्ययोजना बारे सरोकारवालाहरू लाई अभिमुखीकरण गर्ने । | डिवका, वअके | डिवका, वभूवि, ववि, सावउस, निजी क्षेत्र, |

रणनीति ६ : जटामसीको संरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापनका लागि अध्ययन, अनुसन्धान तथा नवीनतम प्रविधि विकास गर्ने ।

औचित्य :

नेपालमा वनस्पतिको अध्ययन, अनुसन्धान तथा प्रविधि विकासको क्षेत्रमा सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रबाट प्राथमिकता दिइएतापनि लगानीको अभावमा नवीनतम प्रविधिको विकास र विस्तार हुन सकेको छैन । जटामसी नेपाल सरकारद्वारा आर्थिक विकासका लागि तथा खेती प्रविधि अनुसन्धान कार्यका लागि प्राथमिकता प्राप्त वनस्पतिको सूचीमा पर्नुका साथै अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा अत्याधिक माग रहेको लोपोन्मुख प्रजाति भएको हुँदा यसको संरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापनको लागि थप अध्ययन, अनुसन्धान र नवीनतम प्रविधिको विकास गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- अध्ययन, अनुसन्धानद्वारा नवीनतम प्रविधिको विकास भई जटामसीको संरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापन हुनेछ ।
- जटामसीको परम्परागत ज्ञानको अभिलेखीकरण हुनेछ ।
- भौगोलिक क्षेत्र अनुसार जटामसीमा पाइने रसायनिक तत्वहरूको विविधता सम्बन्धी विवरण तयार हुनेछ ।
- नवीनतम प्रविधिको विकास भई जटामसीको उत्पादकत्व वृद्धि, प्रशोधन, जैविक अन्वेषण तथा उत्पादन विविधिकरण एवं बजारीकरणमा सहयोग पुरेको हुनेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|---|------------------------------------|--|
| ६.१ | जटामसीमा लाग्न सक्ने रोग, कीरा सम्बन्धमा अध्ययन, अनुसन्धान गर्ने । | वअके, ववि, वभूवि | डिवका, प्रानि, राकृअके |
| ६.२ | जटामसीको दिगो व्यवस्थापनको लागि अध्ययन, अनुसन्धानद्वारा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रमा पाइने जटामसीको वाह्य संरचनागत विविधता (morphological variation), वंशाणुगत गुण तथा रसायनिक तत्वहरूको अन्वेषण गरी भौगोलिक क्षेत्र विशेष गुणस्तर मापदण्ड (Quality Standard) तयार गर्ने । | वअके, ववि | वभूवि, डिवका, प्रानि, गैसस, विश्वविद्यालय |
| ६.३ | जटामसी सम्बन्धी परम्परागत ज्ञानको अभिलेखीकरण र प्रमाणीकरण गरी सोको आधारमा जैविक अन्वेषण गर्ने । | वअके, ववि | डिवका, नेविप्रप्र, स्थात, स्थास, विश्वविद्यालय, निजी क्षेत्र |
| ६.४ | जटामसीको प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धि सम्बन्धमा अध्ययन, अनुसन्धान गर्ने । | वअके, नेविप्रप्र, ववि | निजी क्षेत्र, गैसस, विश्वविद्यालय, वभूवि |
| ६.५ | जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय बजार पहिचान र प्रवर्द्धन गर्ने । | निजी क्षेत्र, गैरसरकारी संघ संस्था | ववि, वभूवि |

रणनीति ७ : जटामसीको न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारको अभ्यासहरु (fair, responsible and ethical trade) लाई बढावा दिने ।

औचित्य :

न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारका अभ्यासहरुले जटामसीको दिगो व्यवस्थापन सुनिश्चित गर्न तथा सबै तहका सरोकारवालाहरुको सहभागिता र समुचित लाभको बाँडफाँडमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्छ । जटामसीको दिगो संरक्षणका लागि यस प्रजातिको सङ्गलन र व्यापारमा सङ्गलन सङ्गलक तथा व्यवसायीहरुले न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारका अभ्यासहरु अपनाउन आवश्यक देखिन्छ । यस रणनीति अन्तर्गत जटामसीको दिगो सङ्गलनको अभ्यासहरु र जटामसीको असल खेतीका दिशा निर्देशहरु पालना गर्नु आवश्यक देखिन्छ । यी नैतिक सिद्धान्तहरुलाई एकीकृत गरेर व्यवसायीहरुले जटामसीको संरक्षणमा योगदान पुऱ्याउन सक्ने देखिन्छ ।

अपेक्षित उपलब्धी :

- जटामसीको न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारको प्रवर्द्धन हुनेछ ।
- जटामसीको दिगो व्यवस्थापन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा प्रमाणीकरण गर्न सहयोग पुग्नेछ ।

| क्र.सं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | मुख्य जिम्मेवारी | समन्वय र सहयोग |
|---------|---|------------------|--|
| ७.१ | अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड बमोजिम नेपालको लागि मापदण्ड तयार गरी लागू गर्ने । | वअके, ववि | वभूवि, डिवका, स्थात, गैसस, विश्वविद्यालय |
| ७.२ | दिगो व्यवस्थापन, सामाजिक उत्तरदायित्व, न्यायोचित व्यापार र स्रोतको अनुसन्धानीय (traceability) सम्बन्धी निर्देशिका तयार गरी लागू गर्ने । | वअके, ववि, वभूवि | डिवका, स्थात, गैसस, विश्वविद्यालय |
| ७.३ | न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारका अभ्यास सम्बन्धमा कर्मचारी, समुदाय तथा अन्य सरोकारवालाहरुको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | वअके, ववि, वभूवि | डिवका, स्थात, गैसस, विश्वविद्यालय |
| ७.४ | मापदण्डको आधारमा जिल्लाको आवधिक वन व्यवस्थापन योजना तयारी गर्ने (IEE समेत) । | डिवका, वभूवि | स्थात, गैसस |
| ७.५ | मापदण्ड अनुसारको व्यापार प्रवर्द्धन तथा प्रमाणीकरणका लागि समुदाय र निजी क्षेत्रलाई सहयोग गर्ने । | डिवका, वभूवि | स्थात, गैसस, नेउवामसं |
| ७.६ | मापदण्डको आधारमा प्रमाणित वस्तुको व्यापार प्रवर्द्धनमा सहयोग गर्ने । | ववि, वभूवि | डिवका, स्थात, गैसस, निजी क्षेत्र |

दृष्टव्य : गैसस (गैर सरकारी संस्था), डिवका (डिभिजन वन कार्यालय), नेउवामसं (नेपाल उच्योग वाणिज्य महासंघ), नेविप्रप्र (नेपाल विज्ञान तथा प्रविधि प्रतिष्ठान), प्रका (प्रहरी कार्यालय), प्रवम (प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय), प्रानि (प्राज्ञिक निकाय), भका (भन्सार कार्यालय), वअके (वनस्पति अनुसन्धान केन्द्र), वअप्रके (वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र), वभूवि (वन तथा भू-संरक्षण विभाग), ववाम (वन तथा वातावरण मन्त्रालय), ववि (वनस्पति विभाग), राकृअके (राष्ट्रिय कृषि अनुसन्धान केन्द्र), रानिका (राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण कार्यालय), रावउ (राष्ट्रिय वनस्पति उच्यान), स्थात (स्थानीय तह), स्थास (स्थानीय समुदाय), सावउस (सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति), संक्षेका (संरक्षण क्षेत्र कार्यालय) ।

५.३ प्रस्तावित बजेट तथा कार्यक्रम

जटामसीको अध्ययन, अनुसन्धान, खेती प्रविधि विकास, अवैध व्यापार नियन्त्रण, संरक्षण र सचेतना अभिवृद्धि गर्न लगायतका कार्यका लागि यस कार्ययोजनाले प्रस्ताव गरेका ७ वटा रणनीति तथा ४१ वटा कार्यनीति/क्रियाकलापहरु सञ्चालन गर्न १० वर्षका लागि कुल बजेट रु. ४०,२५,००,०००/- (अक्षरूपी चालीस करोड पच्चीस लाख मात्र) को लागत अनुमान गरिएको छ ।

यसका लागि नेपाल सरकार, वन तथा वातावरण मन्त्रालय अन्तर्गतका वनस्पति विभाग, वन तथा भू-संरक्षण विभाग, प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय, प्रदेश वन निर्देशनालय, डिभिजन वन कार्यालय, स्थानीय निकाय, निजी क्षेत्रका साथै विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी निकायहरुले स्रोतको व्यवस्था गर्नेछन् ।

तालिका ६ : प्रस्तावित बजेट तथा कार्यक्रम

| क्र. सं. | क्रियाकलाप | इकाई | प्रथम वर्ष | | दोस्री वर्ष | | तेस्री वर्ष | | चौथी वर्ष | | पांचवीं वर्ष | | छठीं वर्ष | | सातीं वर्ष | | आठीं वर्ष | | नवीं वर्ष | | दशीं वर्ष | | जम्मा बजेट | | | | |
|--|---|------------------|------------|------|-------------|------|-------------|------|-----------|------|--------------|------|-----------|------|------------|------|-----------|------|-----------|------|-----------|------|------------|----------------|------------|----|-----|
| | | | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | जम्मा परिवर्तन | जम्मा बजेट | | |
| ट्रॅन्सफर : जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गरी पर-स्थानीय संरक्षण तथा व्यावसायिक खेतीलाई प्रोत्साहन गर्ने । | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ३.१ | बनस्पति उडान, राइट्रिय वन (सरकारद्वारा व्यवस्थित वन र समुदायिक वन), सरक्षण क्षेत्रमा जटामसीको seed / rhizome germplasm, field germplasm को संरक्षण गर्ने field gene bank र समुदायिक नस्तरीको स्थापना गरी पर-स्थानीय संरक्षण गर्ने । साथै seed bank मा चीउ संरक्षण गर्ने । | स्थान | - | - | ३० | ३ | १५ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ | ३ | १८ |
| ३.२ | पहाडे जटामसी पाइंटे स्थानमा यसको सख्ता कम हुन गई सड्कलानकोहरू हाल सो भन्दा मार्थि उचाइमा सड्कलानको लागि जाने गोकेले पहिले जटामसी पाइने स्थानहरूमा यसको पुनर्स्थापना गर्ने । | स्थान | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | १५ | | |
| ३.३ | तन्त्र प्रजनन (Tissue culture) प्रयोगिकाट प्रयोगशालाहरूमा यस प्रजातिको protocol निकास गर्ने बा आवश्यकता अनुसार परिसार्जन गरी In-vitro conservation, mass propagation गर्ने र उपयुक्त स्थानमा परीक्षण, प्रसारण तथा विस्तार गर्ने । | पटक | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ४ | - | ३० | |
| ३.४ | जटामसीको चीउ र काण्डवाट खेती अनुसन्धान गर्ने । | पटक | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | १० | - | ५० | |
| ३.५ | जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गर्ने । | जिल्ला (ज़िल्ला) | - | - | - | - | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ५ | १ | ३० | |
| ३.६ | जटामसीको असल खेती अभ्यास कर्यान्वयन गर्ने समुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कृषक समूह, सहकारी समूह स्थानीय समुदाय छोरीट गरी तालिम प्रदान गर्ने । | जिल्ला | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | ६४ | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ३६३ |

| | | | | |
|------|--|--------|-----|------|
| ४.६ | सरोकार वालालाई असल सझलन अभ्यासको तालिम प्रदान गर्ने र फिल्डमा सो बमोजिम सझलन भए नभएको बाटे समय समयमा अनुगमन गर्ने । | जिल्ला | १११ | २२२ |
| ४.७ | साईटिसमा सूचीकृत वनस्पतिको व्यवस्थापन निकायले प्रदान गरेको निकासी अनमिति पत्रमा उल्लेखित परिमाण बमोजिम जटामसीको निकासी भए नभएको अनुगमन वैज्ञानिक निकायले गर्ने । | पटक | ७८ | १११ |
| ४.८ | जटामसीको व्यापार अवस्था सम्बन्धी वार्षिक प्रतिवेदन तथार गरी साईटिस सञ्चिवालयमा पेश गर्ने । | पटक | ७९ | १११ |
| ४.९ | जटामसीको व्यापार अवस्था सम्बन्धी वार्षिक प्रतिवेदन तथार गरी साईटिस सञ्चिवालयमा पेश गर्ने । | पटक | ७० | १११ |
| ४.१० | साईटिसको वनस्पतिको वैज्ञानिक निकाय तथा व्यवस्थापन निकायबाट साईटिसको महासभा (CoP) मा सहभागी हुने । | जम्मा | ७७ | १२३१ |

| क्र. सं. | क्रियाकलाप | इकाई | प्रथम वर्ष | दोस्रो वर्ष | तेस्रो वर्ष | चौथो वर्ष | पांचौं वर्ष | छैठों वर्ष | सातौं वर्ष | आठौं वर्ष | नवौं वर्ष | दशौं वर्ष | जम्मा | जम्मा | बजेट | |
|---|---|---------------|------------|-------------|-------------|-----------|-------------|------------|------------|-----------|------------|-----------|------------|-------|------------|------------|
| | | | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परिवर्तन | |
| रणनीति ५ : जटामसी संरक्षणका लागि सचेतना तथा जनसहभागिता अभिवृद्धि गर्ने । | | | | | | | | | | | | | | | | |
| ५.१ | स्थानीय सङ्कलनकर्ता, जडीबुटी व्यापारी, स्थानीय समुदाय, भन्त्यार कार्यालय, प्रहरी लगायत अन्य सरोकारवालाहरूका लागि यस प्रजातिको परिवाचन गर्ने तरिका, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था बाटे रोच्छी तथा तालिम जस्ता सचेतना मूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | ५१ | ८२ | - | - | - | - | - | ४१ | ८२ | - | - | ४१ | ८२ | ३२८ | |
| ५.२ | जटामसीको परिवाचन, दिगो सङ्कलन, संरक्षण सम्बन्धी Booklets, Pamphlets, Brochure, Monograph डक्मेन्ट्ट आदि प्रकाशन तथा प्रसारण गरी सचेतना अभिवृद्धि गर्ने । | १२६ /११६५५ | - | १ | ५ | - | - | - | १ | ५ | - | - | १ | १५ | ३० | |
| ५.३ | जटामसी पाइने क्षेत्रका विद्यालयहरूमा जटामसीको परिवाचन, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था सम्बन्धमा सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | ३७ | १८ | ३७ | १८ | ३७ | १८ | ३७ | १८ | ३७ | १८ | ३७ | १८ | ३७ | १८५ | |
| ५.४ | स्व-स्थानीय एवं पर-स्थानीय संरक्षणका लागि स्थानीय समुदाय र सम्बन्धित सरोकारवालाहरूको परिवाचन गरी तालिम प्रदान गर्ने । | ५ | १० | ५ | १० | ५ | १० | ५ | १० | ५ | १० | ५ | १० | ५ | १०० | |
| ५.५ | जटामसी संरक्षण कार्ययोजना बाटे सरोकारवालाहरूलाई अभिमुखीकरण गर्ने । | ५८८ | १ | १० | - | - | - | - | - | - | - | - | १ | ५ | २० | |
| | जम्मा | | | | | | | | | | | | | | ५९१ | ६६३ |

रणनीति ६ : जटामसीको सरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापनका लाभ अद्ययन, अनुसन्धान तथा नवीनतम प्रविधि विकास गर्ने।

| क्र. सं. | क्रियाकलाप | इकाई | प्रथम वर्ष | दोस्रो वर्ष | तेस्रो वर्ष | चौथो वर्ष | पाचवे वर्ष | छठठो वर्ष | सातांशी वर्ष | आठवीं वर्ष | दशांशी वर्ष | जम्मा परिमाण | जम्मा बजेट | |
|---|---|--------------------------|------------|-------------|-------------|-----------|------------|-----------|--------------|------------|-------------|--------------|------------|------|
| | | | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | बजेट | परि माण | परि माण | परि माण | |
| रणनीति ७ : जटामसीको न्यायोचित, उत्तरदायी, नीतिक व्यापारको अभ्यासहरू (Fair, Responsible and Ethical Trade) लाई बढावा दिने । | | | | | | | | | | | | | | |
| ७.१ | अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्ड बर्माजिम नेपालको लागि मापदण्ड तयार गरी लाग्ने । | मापदण्ड | १ | १ | १ | १० | - | १ | २.५ | - | १ | २.५ | - | २१ |
| ७.२ | दिग्गो व्यवस्थापन, सामाजिक उत्तरदायित्व, न्यायोचित व्यापार र स्रोतको अनुमारणीय (traceability) सम्बन्धी निर्देशिका तयार गरी लाग्ने । | एकान्त्रिक / क्रान्त्रिक | - | - | १ | १० | ४ | १० | - | - | - | - | ५ | २० |
| ७.३ | न्यायोचित, उत्तरदायी र नीतिक व्यापारका अन्याय सम्बन्धमा कर्मचारी, समुदाय तथा अन्य सम्बन्धित संस्कारवालाहरुको क्षमता अधिवृद्धि गर्ने । | पटक | - | - | - | २ | १० | २ | १० | १ | ५ | १ | ५ | ५० |
| ७.४ | मापदण्डको आधारमा निल्ताको आवधिक बन व्यवस्थापन योजना तयारी गर्ने (IEE समेत) । | संख्या | - | - | - | - | - | २७ | २१६ | - | - | - | - | २७ |
| ७.५ | मापदण्ड अनुसारको व्यापार प्रवर्द्धन तथा प्रमाणीकरणका लागि समुदाय र निर्जी क्षेत्रलाई सहयोग गर्ने । | एकान्त्रिक / क्रान्त्रिक | - | - | - | - | - | - | १० | - | - | - | - | ३० |
| ७.६ | मापदण्डको आधारमा प्रमाणित वस्तुको व्यापार प्रवर्द्धनमा सहयोग गर्ने । | संख्या | - | - | - | - | - | - | १० | - | - | - | - | ३० |
| जम्मा | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | ४६ | ३६७ |
| | | | | | | | | | | | | | १६६९ | ३९२० |

कार्यान्वयन व्यवस्था

६.१ कार्यान्वयन

यस जटामसी संरक्षण कार्ययोजनाको कार्यान्वयन नेपाल सरकार, वन तथा वातावरण मन्त्रालय र यस अन्तर्गतका विभाग, कार्यालय, अनुसन्धान केन्द्र, प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय र यस अन्तर्गतका कार्यालयहरु मार्फत गरिनेछ । संरक्षण क्षेत्रको हकमा राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण विभागले यसको कार्यान्वयन गर्नेछ भने संरक्षण क्षेत्र बाहिर संघीय सरकार अन्तर्गतको वनस्पति विभाग, वनस्पति अनुसन्धान केन्द्र, वन तथा भू-संरक्षण विभाग, प्रदेश सरकार अन्तर्गतको डिभिजन वन कार्यालयले कार्यान्वयन गर्नेछ । जटामसीको स्व-स्थानीय र पर-स्थानीय संरक्षणका लागि वनस्पति विभाग, वनस्पति अनुसन्धान केन्द्र, डिभिजन वन कार्यालयले तथा अध्ययन, अनुसन्धानका क्रियाकलापहरुका साथै जनचेतनाका कार्यक्रमहरु वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र र वन तथा भू-संरक्षण विभागको समन्वयमा कार्यान्वयन गरिनेछ । यस कार्ययोजना कार्यान्वयनको चरणमा आवश्यकता अनुसार स्थानीय निकाय, विश्वविद्यालय एवं विभिन्न प्राङ्गिक निकाय, वन उपभोक्ता समूह, भन्सार कार्यालय, प्रहरी कार्यालय, स्थानीय समुदाय, व्यापारी वर्ग, निजी क्षेत्र, समुदायमा आधारित संघ संस्था तथा गैरसरकारी संघ संस्थाहरुसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ ।

६.२ वित्तीय व्यवस्था

यस जटामसी संरक्षण कार्ययोजनामा प्रस्तावित क्रियाकलापहरू कार्यान्वयन गर्न कार्ययोजना अवधिभरका लागि कुल बजेट रु. ४०,२५,००,०००/- (अक्षरूपी चालीस करोड पच्चीस लाख मात्र) को लागत अनुमान गरिएको छ । अनुमानित बजेटको प्रमुख स्रोत संघ अन्तर्गत वन तथा वातावरण मन्त्रालय र अन्तर्गतका निकायहरु साथै प्रदेशस्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय र सो अन्तर्गतका डिभिजन वन कार्यालयको साल बसाली रूपमा प्राप्त हुने बजेट रहेको छ । यसका विभिन्न कार्यहरु सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहले आफ्नो कोष परिचालन गरी गर्न सम्भेद्धन भने जडीबुटी तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको संरक्षण, सम्बद्धन तथा दिगो उपयोगका लागि गठन गरिएका जडीबुटी सञ्जाल, संघ, संगठनहरुले समेत लगानी गर्ने अपेक्षा लिईएको छ । उद्योग, वाणिज्यसँग संगठित संघ संस्थाहरुको समेत सहयोग, समन्वय र लगानीको अनुमान गरिएको छ । सरकारी बजेट बाहेक जैविक विविधता संरक्षणको क्षेत्रमा कार्य गर्ने

विभिन्न गैरसरकारी संस्थाहरुबाट समेत सहयोग प्राप्त हुने साथै स्थानीय निकाय र निजी क्षेत्रहरुले समेत आवश्यकता अनुसार स्रोतको व्यवस्था गर्ने अपेक्षा गरिएको छ ।

६.३ कार्ययोजना अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा समीक्षा

कुनै पनि नीति, कार्यनीति, कार्ययोजनाहरुको सफलता र लक्षित उद्देश्य यसको नियमित अनुगमन र मूल्याङ्कनमा निर्भर रहन्छ । यस कार्ययोजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयन भए नभएको सम्बन्धमा यस कार्ययोजनाको अनुसूची २ को अनुगमन तथा मूल्याङ्कन योजना बमोजिम गरिनेछ । यस कार्ययोजनामा उल्लेख गरिएका क्रियाकलापहरुको प्रभावकारिता र कार्यान्वयनका पक्षहरुको अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा समीक्षा सरोकारवालाहरुसँगको समन्वयमा क्रियाकलाप कार्यान्वयन गर्ने निकायहरुले गर्नेछ । अनुसूची २ मा उल्लेख भए बाहेकको सन्दर्भ सामान्यतः संरक्षण क्षेत्र बाहेकको स्थानमा प्रस्तावित क्रियाकलापहरुको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन डिभिजन वन कार्यालय र वनस्पति अनुसन्धान केन्द्रले गर्नेछ भने संरक्षण क्षेत्रको हकमा राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण विभाग अन्तर्गतको कार्यालयले गर्नेछ । यस कार्यको लागि वन तथा भू-संरक्षण विभाग, सामुदायिक वन समिति, भन्सार कार्यालय, स्थानीय तह तथा स्थानीय समुदायसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ । यस कार्ययोजनाका क्रियाकलापहरु कार्यान्वयन गर्ने निकायले सम्बन्धित सरोकारवालाहरुसँग समय समयमा समन्वय, छलफल तथा बैठकहरु गर्नुका साथै हरेक वर्ष नियमित रूपमा आफ्नो संगठनहरु मार्फत अनुगमन गर्नेछ । कार्ययोजनाको प्रभावकारिता हेरी कुनै विषय हेरफेर गर्नुपर्ने/नपर्ने निक्यौल गर्न प्रत्येक दुई वर्षमा वनस्पति विभागले समीक्षा गर्नेछ । यसरी समीक्षा पश्चात् आएका निष्कर्षहरुको आधारमा कार्ययोजना परिमार्जन गर्न सकिनेछ । कार्ययोजना कार्यान्वयनको अन्तिम वर्ष दश वर्षभरि गरिएका क्रियाकलापहरुको अनुगमन, मूल्याङ्कन तथा समीक्षा केन्द्रीय निकायहरु, प्रादेशिक निकायहरु तथा स्थानीय निकायहरु र सम्बन्धित सरोकारवालाहरुको सहभागितामा वनस्पति विभागले गर्नेछ । जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार र यसले जटामसीको दिगोपनामा पारेको प्रभावको बारेमा वन तथा भू-संरक्षण विभागले अनुगमन र मूल्याङ्कन गरी वर्षेनी वार्षिक प्रतिवेदन साईटिस सचिवालय र वन तथा वातावरण मन्त्रालयमा पेश गर्नुपर्नेछ ।

सन्दर्भ सामग्रीहरू

- Adhikari , S. (2018). *Essential Oils of Nepal*. Department of Plant Resources, Thapathali, Kathmandu, Nepal.
- Amatya, K. R., Shakya, P. R., Bajracharya, P., Chitrakar, B. R., & Tuladhar P. M. (1995). *A Study Report on the Policy and Institutional Support for Sustainable Utilisation of Medicinal and Aromatic Plants in Nepal Himalaya*. Report submitted to International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD), Kathmandu, Nepal.
- ANSAB. (2015). *Non-Timber Forest Products Resource Assessment in Mugu, Humla and Jumla Districts*. Asia Network for Sustainable Agriculture and Bioresources (ANSAB), Kathmandu, Nepal.
- Bagchi, A., Oshima Y., & Hikino H., (1991). Jatamols A and B: sesquiterpenoids of *Nardostachys jatamansi* roots. *Planta Medica*, 57, 282-283.
- Bagchi, A., Oshima, Y., & Hikino H., (1990). Spirojatomol, A new skeletal sesquiterpenoid of *Nardostachys jatamansi* roots. *Tetrahedron*, 46, 1523- 1530.
- Bose , B. C., Vijayvarngiya, R., & Bhatnagar, J. N. (1957). *Nardostachys jatamansi* DC.: A Phytochemical study of its active constituents, *Indian J Med Sci.*, 11(10), 799-802.
- CAMP(2001). *Conservation Assessment and Management Plan (CAMP) Prioritization Report*. International Development Research Centre (IDRC), Canada and Ministry of Forest and Soil Conservation, Kathmandu, Nepal.
- Chauhan, H.K. (2021). *Nardostachys jatamansi*. The IUCN Red List of Threatened Species 2021
- Chauhan, R. S., & Nautiyal, M. C. (2007). Seed germination and seed storage behaviour of *Nardostachys jatamansi* DC., an endangered medicinal herb of high-altitude Himalaya. *Current Science*, 92(11), 1620-1524.
- Chhetri, R., & Gautam, R. K. (2015). *Conservation of three threatened Medicinal Plant Species and their Habitats in Langtang National Park (Nepal) for Livelihood improvement*. A research report submitted to Rufford Small Grant for Nature Conservation. United Kingdom.
- Christenhusz, M. J. M., & Byng, J. W. (2016). The number of known plants species in the world and its annual increase. *Phytotaxa*, 261(3), 213. Magnolia press.
- Dhakal, K. Sharma, Maharjan, S., Rijal, G., & Pathak, M. L. (2021). Field Survey of *Nardostachys jatamansi* in Manedada, Gaurishankar Conservation Area, Ramechhap, Nepal. *Journal of Plant Resources*, 19 (1), 114-120.
- Dhiman, N., & Bhattacharya, A., (2020). *Nardostachys jatamansi* (D.Don) DC. Challenge and opportunities of harnessing the untapped medicinal plant from the Himalayas, *Journal of Ethnopharmacology*, 246, 112211.
- DoF. (2017). *Final report status study/mapping of important medicinal and aromatic plants (MAPs) of Nepal and preparation of document for Jadibuti Program*. Government of Nepal Ministry of Forests and Soil Conservation, Department of Forest, Babarmal, Kathmandu, Nepal.
- DoFSC., (2019) unpublished reports
- Don, D. (1825). *Prodromus Florae Nepalensis*. : sive *Enumeratio vegetabilium quae in itinere per Nepaliam proprie dictam et regiones conterminas*, ann. 1802-1803. Londini, J. Gale
- Don, D., & Hamilton, F. (1825). *Prodromus florae Nepalensis: sive Enumeratio vegetabilium quae in itinere per Nepaliam proprie dictam et regiones conterminas*, ann. 1802-1803. *Detexit atque legit dd Franciscus Hamilton, (olim Buchanan) Accedunt plantae ad Wallich nuperius missae*. J. Gale.
- DPR. (2018). *Plan Progress Report FY 2073/74 & 2074/75*. Government of Nepal Ministry of Forests and Soil Conservation, Department of Plant Resources (DPR), Thapathali, Kathmandu, Nepal.
- DPR. (2019). *Non-detrimental findings for Nardostachys grandiflora DC. from Nepal*. Issued by Scientific Authority of CITES, Department of Plant Resources, Ministry of Forests and Environment, 19 September 2019.
- DPR. (2020). Unpublished report on Marc definition and essential oil percentage range of *Nardostachys jatamansi* (D. Don) DC. Department of Plant Resources.
- Gautam, K., & Raina R. (2013). Review of *Nardostachys grandiflora*: An important endangered medicinal and aromatic plant of Western Himalaya. *Forest Product Journal*, 63 (1), 67-71.
- Ghimire, S. K., Gimenez, O., Pradel, R., McKey, D., & Aumeeruddy-Thomas, Y. (2008). Demographic variation and population viability in a threatened Himalayan medicinal and aromatic herb *Nardostachys grandiflora*: Matrix modelling of harvesting effects in two contrasting habitats. *Journal of Applied Ecology*, 45(1), 41-51.

- Ghimire, S. K., McKey, D., & Aumeeruddy-Thomas, Y. (2005). Conservation of himalayan medicinal plants harvesting patterns and ecology of two threatened species, *Nardostachys grandiflora* DC. and *Neopicrorhiza scrophulariiflora* (Penel) Hong. *Biological conservation*, 124, 463-475.
- Ghimire, S. K., Sah, J. P., Shrestha, K. K., & Bajracharya, D. (1999). Ecological study of some high altitude medicinal and aromatic plants in the Gyasumdo valley, Manang, Nepal. *Ecoprint*, 6(1), 17-25.
- GoN/MoC., (2016). Nepal Trade Integration Strategy. Executive summary and action matrix. Kathmandu: Government of Nepal, Ministry of Commerce.
- Joshi, N., & Joshi, S. K. (2019). *Newa: Nakha: wa Sanskarya Banaspati* (Culture and cultural plants in Newa: Sagarkrishna Joshi, Sundhara, Lalitpur.Nepal. (In Nepal bhasha).
- Joshi, N., & Siwakoti, M. (2020). Plants and culture of Newar community. In: M. Siwakoti, P. K. Jha, S. Rajbhandary, & S. K. Rai (Eds.) *Plant Diversity in Nepal*. Botanical Society of Nepal, Kathmandu, Nepal.
- Joshi, N., Dhakal, K. S., & Saud D. S. (2017). *Checklist of CITES Listed Flora of Nepal*. Department of Plant Resources (DPR), Thapathali, Kathmandu, Nepal.
- Lama, Y. C., Ghimire, S. K., & Aumeeruddy-Thomas, Y. (2001). *Medicinal Plants of Dolpo: Amchis' Knowledge and Conservation*. WWF Nepal Program, Kathmandu, Nepal.
- Mulliken , T. A., & Crofton, P. (2008). *Review of the status, harvest, trade and management of seven Asian CITES-listed medicinal and aromatic plant species*. Federal Agency for Nature Conservation, Bonn, Germany.
- Mulliken, T. A. (2000). Implementing CITES for Himalayan medicinal plants *Nardostachys grandiflora* and *Picrorhiza kurrooa*. : *TRAFFIC Bulletin*, 18, 63-72.
- Nautiyal, B. P., Chauhan, R. S., Prakash, V., Purohit, H., & Nautiyal, M. C. (2003). Population studies for the evaluation of germplasm and threat status of the alpine medicinal herb, *Nardostachys jatamansi*. *PGR Newsletter*, 136, 34-39.
- Nautiyal, M. C., & Nautiyal, B. P. (2004). *Agrotechniques for High Altitude Medicinal and Aromatic Plants*. 99-133. High Altitude Plant Physiology Research Centre, Srinagar, Uttaranchal & Bishen Singh Mahendra Pal Singh, Dehra Dun, Uttaranchal, India.
- Press, J. R., Shrestha, K. K., & Sutton D. A., (2000). *Annotated Checklist of the Flowering Plants of Nepal*. The Natural History Museum, London, UK.
- Purohit, V. K., Chauhan, R. S., Harish, C. H., Andola, P. P., Nautiyal, M.C., & Nautiyal, A. R. (2012). *Nardostachys jatamansi* DC.: Conservation, multiplication and policy issues. *Medicinal Plants*, 4(3), 162-166.
- Regmi , S., Bista, S., & Casey, M. (2000). Conservation and sustainable use of high value medicinal and aromatic plants in Jumla District of Nepal. *Proceeding of Nepal-Japan Joint Symposium on Conservation and Utilisation of Himalayan Medicinal Resources*, Nov. 6-11, 11, 305-312.
- Sahu, R., Dhongade, H. J., Pandey, A., Sahu, P., Sahu V., Patel D., & Kashyap, P. (2016). Medicinal Properties of *Nardostachys jatamansi* (A review). *Orient. J. Chem.*, 32(2), 859-866.
- Shrestha, T.B., & Joshi, R.M. (1996). Rare, Endemic and Endangered Plants of Nepal. WWF Nepal Program, Kathmandu.
- Shrestha, N., & Shrestha, K.K. (2012). Vulnerability assessment of high-valued medicinal plants in Langtang National Park, Central Nepal. *Biodiversity*, 13 (1)
- Subedi, B. P., & Shrestha, R. (1999). Plant profile: Jatamansi (*Nardostachys grandiflora*). *Himalayan Bioresources*, 3, 14-15.
- Ved, D., Saha, D., Ravikumar, K., & Haridasan, K. (2015). *Nardostachys jatamansi*. The IUCN Red List of Threatened Species.

<https://plants.jstor.org>

<https://powo.science.kew.org/>

अनुसूची १

जटामसीको दिगो सङ्कलन तथा व्यवस्थापनका उपायहरु

सङ्कलन इजाजत वा अनुमति लिने

- सङ्कलन कार्य गर्नुपर्व सम्बधित निकायबाट आवश्यक सङ्कलन अनुमति लिनु पर्दछ ।
- सम्बन्धित निकायहरु डिभिजन वन कार्यालय (डिविका) वा वन तथा भू-संरक्षण विभाग तथा सामुदायिक वन उपभोक्ता समिति (सावउस) सँग समन्वय गर्नु पर्दछ ।
- पर्याप्तता हेरी मात्रै सङ्कलन अनुमति दिने र लिने गर्नु पर्दछ । संरक्षण क्षेत्रबाट सङ्कलन गर्नु हुँदैन ।

सङ्कलन गरिने ठाउँ छनौट

- जटामसी प्रशस्त मात्रामा फैलावट भएको ठाउँबाट मात्र सङ्कलन गर्नु पर्दछ । पातलोसँग फैलिएको ठाउँबाट सङ्कलन गर्नु हुँदैन ।
- पहिले सङ्कलन गरिएको ठाउँबाट पुनरुत्पादन भई पुरानै अवस्थामा नआएसम्म सङ्कलन गर्नु हुँदैन । (प्रत्येक पाँच वर्षमा मात्र काण्ड सङ्कलन गर्नु पर्दछ) ।
- सङ्कलन गर्दा प्रदुषण कम भएका ठाउँको छनौट गर्नु पर्दछ ।
- पानीको मुहान नजिक भएको ठाउँको छनौट गर्नु हुँदैन ।
- जटामसी अन्य वनस्पतिसँग मिसावट नहुने सफा ठाउँको छनौट गर्नु पर्दछ ।

सङ्कलन गरिने वनस्पतिहरुको सही पहिचान

- जटामसी जस्तै देखिने अन्य वनस्पतिको सङ्कलन गर्नु हुँदैन ।
- जटामसी पहिचान गर्न नसकिएमा त्यस वनस्पतिको नमूना वा फोटो सहित सम्बन्धित विज्ञसँग परामर्श गरी पहिचान गर्नु पर्दछ ।
- संकलकहरुले जटामसी पहिचान गर्न जटामसी सम्बन्धी ज्ञान र अनुभव भएको व्यक्ति वा प्रशोधन केन्द्रबाट आवश्यक सल्लाह, सुझाव वा तालिम लिनु पर्दछ ।

सङ्कलन औजार

- सफा र खिया नलागेको औजार, कुटो वा ठूलो बाउसो प्रयोग गर्नु पर्दछ ।
- औजार काम गर्ने अवस्थामा राख्न समय समयमा आवश्यक मर्मत सम्भार गर्नु पर्दछ ।
- औजारका काट्ने भाग सफा गर्ने र अनावश्यक पदार्थ हटाउने गर्नु पर्दछ ।
- औजारमा कुनै वस्तु टाँसिएको भएमा हटाउनु पर्दछ ।
- सधैं सफा वा नयाँ बोरा वा डोकोको प्रयोग गर्नु पर्दछ । कुनै पनि रसायनिक मल वा विषादी बोक्न प्रयोग भएको बोरा वा डोको प्रयोग गर्नु हुँदैन ।

सङ्कलन समय

- गुणस्तरीय जटामसी काण्ड प्राप्त गर्न र दिगो रूपमा सङ्कलन गर्न समय र अवधि महत्वपूर्ण हुन्छ । सामान्यतया: जटामसीको काण्ड कार्तिक-मंसिरमा सङ्कलन गर्नु पर्दछ ।
- जटामसीको बीउ परिपक्व भई भुईमा भरेपछि र पात पहेलो भएपछि मात्र काण्ड सङ्कलन गर्नु पर्दछ ।

सङ्कलन प्रणाली

- सामुदायिक वनमा भएको जटामसीको दिगो संरक्षणका लागि सामुदायिक वनलाई कम्तीमा ५ वटा ब्लकमा विभाजन गरेर ५ वर्षे घुम्ती सङ्कलन प्रणाली अपनाउनु पर्दछ । यदी वनलाई ५ वटा ब्लकमा विभाजन गर्न सम्भव नभएमा उपलब्ध ब्लक भित्रै माउ विरुवाको पुनरोत्पादन र वृद्धिलाई ध्यान दिई ५ वर्षे घुम्ती सङ्कलन प्रणाली अपनाउनु पर्दछ ।
- जटामसी सङ्कलन गर्दा भएको खाल्डाहरु पुर्नु पर्दछ । अन्य वनस्पति वा वनस्पतिको वासस्थान नोक्सान गर्नु हुँदैन ।

वार्षिक सङ्कलन गरिने परिमाण

- जटामसीको वार्षिक सङ्कलन गरिने परिमाण यसको वासस्थानको किसिम अनुसार कुल मौज्दात विरुवाको १०-२५ प्रतिशतसम्म मात्र तोक्नु पर्दछ ।
- प्रत्येक वर्ष एउटा ब्लकबाट मात्र सङ्कलन गर्नु पर्दछ ।
- सङ्कलन गर्दा २०-२५ प्रतिशत काण्डको भाग माटोमा छोडेर पुर्दिनु पर्दछ ।

सङ्कलन गर्दा र गरे पश्चात् ध्यान दिनुपर्ने कुराहरु

- सङ्कलित काण्ड ढुवानी गर्नु अगावै गुणस्तर विग्रन नदिन, मिसावट हुन नदिन, किराहरु लाग्न नदिन, खाँदिएर विग्रन नदिन र चर्को घाम, पानीबाट बचाउन विशेष सतर्कता अपनाउनु पर्दछ ।
- काण्ड सङ्कलन गर्दा सकेसम्म सुक्खा दिनमा सङ्कलन गर्नु उपयुक्त हुन्छ । पानी परेको बेला, शीत परेको बेला र जमिन भिजेको बेला सङ्कलन गर्नु हुँदैन ।
- सम्भव भएसम्म काण्ड सङ्कलन गर्ना साथ सरसफाइ गरी सुकाउने व्यवस्था मिलाउनु पर्दछ ।
- सङ्कलित काण्डलाई डोको वा बोरामा राख्नु पर्दछ । सङ्कलन गरिएको काण्डलाई सिधै भुईमा राख्नु हुँदैन ।
- सङ्कलित काण्ड राख्ने बोरा वा डोको वा भाँडा सफा हुनु पर्दछ । पहिले विषादी राख्न प्रयोग गरिएको बोरा वा भाँडा प्रयोग गर्नु हुँदैन ।
- सङ्कलित जटामसीको काण्डलाई चरा, मुसा, किरा, जनावर र घाम, पानीको सिधा सम्पर्कबाट बचाउनु पर्दछ ।
- सङ्कलित जटामसीको काण्डलाई बोरा वा डोकोमा धेरै खाँदिर, एकमाथि अर्को गरी राख्नु हुँदैन ।
- सङ्कलित जटामसीको काण्ड राख्न जुटको बोराको प्रयोग गर्नु पर्दछ । प्लाष्टिकको बोराको प्रयोग गर्नु हुँदैन ।
- सङ्कलन पश्चात् जरा तथा काण्डको गुणस्तर विग्रन नदिने गरी व्यवस्थापनमा ध्यान दिनु पर्दछ ।



अनुसूची २

जटामसी संरक्षण कार्ययोजना कार्यालयनको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन योजना

| सि. नं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकहरू | प्रमाणीकरणका आधारहरू | अनुमान/जीविम | समयावधि | दीर्घित्व | बजेट (रु. लाखमा) |
|---------|--|--|--|--|------------------------|------------------------------------|------------------|
| १.१ | जटामसीको शोत सर्वेक्षण निर्देशिका तयार गर्ने । | • स्वीकृत शोत सर्वेक्षण निर्देशिका | • वन तथा भू-संरक्षण विभाग तथा वनस्पति विभागको वेभपेज | जटामसीसँग सम्बन्धित अध्ययनका लागि यथेच्छ वित्तीय सहयोग उपलब्ध हुने | पहिलो वर्ष | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलाग्ने |
| १.२ | जटामसीको शोत सर्वेक्षण गर्ने । (क) राष्ट्रियस्तरको शोत सर्वेक्षण ख) प्रादेशिकस्तर शोत सर्वेक्षण | • जटामसीको शोत सर्वेक्षण प्रतिवेदन | • वन तथा भू-संरक्षण विभागको वेभपेज • शोत सर्वेक्षण प्रतिवेदन / अभिलेख • वन व्यवस्थापन योजना | जटामसीसँग सम्बन्धित अध्ययनका लागि यथेच्छ वित्तीय सहयोग उपलब्ध हुने | दोस्रो वर्ष | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | ५ |
| १.३ | जटामसी पाइने सामुदायिक वनहरूको शोत गणना तथा कार्ययोजना नवीकरण गर्ने । (२०० हेक्टर भन्ना माथिका सामुदायिक वन) । | • सामुदायिक वनको शोत गणना संख्या • नवीकरण गरिएको कार्ययोजना संख्या | • सामुदायिक वनको प्रतिवेदन / अभिलेख • डिपिजन वन कार्यालयको प्रतिवेदन • सामुदायिक वनको कार्ययोजना | • शोत गणना प्रतिवेदन / अभिलेख • डिपिजन वन कार्यालयको प्रतिवेदन • सामुदायिक वनको कार्ययोजना | चौथो वर्ष देखि निरन्तर | प्रदेश स्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालय | ५ |
| | | | | | | जम्मा | १५ |

रणनीति २ : जटामसी पाइने प्राकृतिक वास्तुकलाको संरक्षणका जोखिमहरु पहिचान तथा सेको न्यूनीकरण गरी स्व-स्थानीय संरक्षण गर्ने

| सि. नं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकहरू | प्रमाणीकरणका आधारहरू | अनुमान/जोखिम | समयाबधि | दायित्व | बजेट (रु. लाखमा) |
|--------------|--|--|---|--|----------------------|--|------------------|
| २.१ | जटामसीको पुनरुत्थान र पुनः उत्पादन प्रक्रियाको अवध्ययन र अनुसन्धान गर्ने । | • पुनरुत्थान र पुनः उत्पादनको अनुसन्धान गराएको स्थान | • वाचि, वाथके प्रतिवेदन • जटामसी पुनरुत्थान र पुनः उत्पादन सामग्री अनुसन्धानका लाभ | वजेट र जनशक्तिको कमी | दोधो वपंदेखि निर्मार | वनस्पति विभाग | ५ |
| २.२ | जटामसी पाइने स्थान र यसले ओगट्ने क्षेत्रफल निर्धारण गरी सो क्षेत्रको संरक्षणका जोखिमहरु पहिचान गर्ने र न्यूनीकरणका उपायहरु अवलम्बन गर्ने । | • जोखिमहरुको सूची आंकडान • जोखिम न्यूनीकरणका लागि गरि एका अध्यायसहरु • नाक्सानोका विवरणहरू | • प्रतिवेदन • डिभिजन वन कार्यालयका प्रतिवेदन • तोक्सार्टी, दण्ड जारिवाना, वन मुदाको विवरण | दुर्गम भ्रगोलमा जोखिम न्यूनीकरणका कार्यक्रम सञ्चालन गर्न कठीन | दोधो वपंदेखि निर्मार | डिभिजन वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालय | ५ |
| २.३ | जटामसी पाइने क्षेत्रमा जटामसीको सामाल्यक अवस्थाको अध्ययन र अभिलेखीकरण गरी संख्याको आधारमा क्षेत्र वर्किकरण गर्ने । | • जटामसीको सामिक्ष्यक अवस्थाको विवरण • जटामसीको उपलब्धताको आधारमा जोनिङ् र कार्ययोजना | • सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको वन कार्ययोजना • डिभिजन वन कार्यालयको प्रतिवेदन | समुदायको साधारण सभा समयमा नवसंरेखी र सम्झूलको निक्षिक्यता हुन सक्ने । | २ वर्षमा १ पटक | डिभिजन वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालय | ५ |
| २.४ | जटामसीको उपलब्धताको हसावले महत्वपूर्ण वनस्पति क्षेत्र (Important Plant Area) पहिचान गरी सोको सरक्षण गर्ने । | • महत्वपूर्ण वनस्पति क्षेत्रको संख्या र घोषणा • व्यवस्थापन योजना | • मान्विकरिष्यदको निर्णय • वन तथा वातावरण मन्त्रालयको प्रतिवेदन • स्थलगात्र अवलोकन | नेपाल सरकार, मान्विकरिष्यदले प्राथमिकता नदिने सम्भावना नेपाल सरकार, मान्विकरिष्यदले कार्ययोजना पुनरावलोकनलाई प्राथमिकता नदिन सक्ने । | दोधो वपंदेखि निर्मार | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट निर्मार |
| २.५ | स्व-स्थानीय संरक्षण कार्यका लागि स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना पुनरावलोकन गरी जटामसी संरक्षणका क्रियाकलापहरु समावेश गर्ने । | • स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजना संख्या | • डिभिजन वन कार्यालयको प्रतिवेदन • स्थलगात्र अवलोकन | वन सम्हृ र डिभिजन वन कार्यालयदले कार्ययोजना पुनरावलोकनलाई प्राथमिकता नदिन सक्ने | वर्षनी | प्रदेश वन निर्देशनालय | बजेट निर्मार |
| २.६ | जटामसीको स्व-स्थानीय संरक्षणका लागि जनचेतनामूलक सामग्री तयार गरी प्रचार प्रसार गर्ने । | • जनचेतनामूलक सामग्रीको संख्या प्रचार प्रसार क्रियाकलापको संख्या | • डिभिजन वन कार्यालय, प्रदेश वन निर्देशनालय र वनस्पति विभागका प्रतिवेदनहरू | सरल र स्थानीय मानिसहरुले बुझ्ने भाषा र माध्यमबाट प्रचार प्रसार सामग्री तयार हुने | वर्षनी | वन तथा भू-संरक्षण विभाग | बजेट निर्मार |
| २.७ | जटामसीको दिगो संरक्षण सम्बन्धी निर्देशिका तयार गर्ने । | • स्वीकृत निर्देशिका | • वन तथा भू-संरक्षण विभाग र वनस्पति विभागको प्रतिवेदन • वन तथा भू-संरक्षण विभागको वेभेज | मन्त्रालयले निर्देशिका स्वीकृत तर्फ सक्ने | २ वर्षमा १ पटक | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट निर्मार |
| जम्मा | | | | | | | |
| १५ | | | | | | | |

राजनीति ३: जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गरी पर-स्थानीय संरक्षण तथा व्यावसायिक खेतीलाई प्रोत्साहन गर्ने ।

| सि. नं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकहरू | प्रमाणीकणका आधारहरू | अनुमान / जोखिम | समयावधि | दाखिल | बजेट (₹. लाखमा) |
|---------|---|---|---|---|----------------|--|-----------------|
| ३.१ | वनस्पति उद्यान, गणित्य वन संरक्षकद्वारा व्यवस्थित वन र सामुदायिक वन), संरक्षण क्षेत्रमा जटामसीको seed / rhizome झुर्रम्प्लास्ट, field germplasm का संरक्षण गर्ने field gene bank र सामुदायिक नसरिको स्थापना गरी पर-स्थानीय संरक्षण गर्ने। साथै seed bank मा भीउ संरक्षण गर्ने। | <ul style="list-style-type: none"> Field gene bank को संख्या सामुदायिक नसरिको संख्या खेती गारिएको स्थान | <ul style="list-style-type: none"> स्थलगत अवलोकन समूहको कार्ययोजना वारेके र वनस्पति विभागको प्रतिवेदन | जटामसीको असल खेती अभ्यास र प्रविधि विकास तर्फे परस्थानीय संरक्षण विफल हुने सम्भावना । | २ वर्षमा १ पटक | वन तथा भू-संरक्षण विभाग | ३ |
| ३.२ | पहिले जटामसी पाइने स्थानहरूमा यसको पुनःस्थापना गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> रोपण गरेको जटामसीको विरुद्धको संख्या जटामसीको प्राकृतिक पुनर्स्थापना भएको विवरण | <ul style="list-style-type: none"> स्थलगत अन्तरामन स्थानीयसँग सोध्यपुढ र अन्तरक्रिया डिभिजन वन कार्यालयको प्रतिवेदन | पर-स्थानीय संरक्षण विफल हुने सम्भावना । | २ वर्षमा १ पटक | वन तथा भू-संरक्षण विभाग | ५ |
| ३.३ | तनु प्रजनन (Tissue culture) प्रविधिवाट प्रयोगशालाहरूमा यस प्रक्रियाको protocol विकास गर्ने चा आवश्यकता अनुसुन्न परिमार्जन गरी in-vitro conservation, mass propagation गर्ने र उपयुक्त स्थानमा परिक्षण, प्रसारण तथा विस्तार गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> तयार भएको Protocol in-vitro conservation गरेको स्थान mass propagation को अवस्था परिक्षण, प्रसारण तथा विस्तार गरेको स्थान | <ul style="list-style-type: none"> स्थलगत अवलोकन वावि प्रतिवेदन | तन्तु प्रजननको प्रोटोकल विकासमा समय लाग्न सक्ने । | ३ वर्षमा १ पटक | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | ३ |
| ३.४ | जटामसीको बीउ र काणडवाट खेती गर्ने अनुसन्धान गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> अनुसन्धान गर्ने ल्लट संख्या अनुसन्धान विधि | <ul style="list-style-type: none"> स्थलगत अवलोकन वावि प्रतिवेदन | अनुसन्धानको परिणाम आउन समय लाग्न सक्ने । | २ वर्षमा १ पटक | डिभिजन वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालय | ५ |
| ३.५ | जटामसीको असल खेती अभ्यास तथा प्रविधिको विकास गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> अनुसन्धान गर्ने ल्लट संख्या असल खेती अभ्यास तथा प्रविधि | <ul style="list-style-type: none"> स्थलगत अवलोकन वावि प्रतिवेदन लेख शोधपत्र | अनुसन्धानको परिणाम आउन समय लाग्न सक्ने । | २ वर्षमा १ पटक | प्रदेश वन निर्देशनालय | ५ |
| ३.६ | जटामसीको असल खेती अभ्यास कार्यान्वयन गर्ने सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, क्षेत्रको समूह, सहकारी समूह, स्थानीय समुदाय छनाट गरी तालिम प्रदान गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> समुदाय छनौटको विवरण तालिममा सहभागीको संख्या तालिम प्रदान गरिएको स्थान | <ul style="list-style-type: none"> तालिमको लागि तयार गरेको सामगी तालिमको उपस्थिति तालिमबाट लाभान्वित समदायसँग सोध्यपुढ़ वावि, वारेके, डिवकाको प्रतिवेदन | यथेष्ट बजेट उपलब्ध नहुन सक्ने | वर्षी | प्रदेश वन प्रिवेशनालय | ५ |
| जम्मा | | | | | | | |
| ५० | | | | | | | |

रणनीति ४ : जटामसीको अवैध व्यापारको अनुमति तथा नियन्त्रण गर्ने ।

| सं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकहरू | प्रमाणीकरणका आधारहरू | अनुमति / जोखिम | समयावधि | दायित्व | बजेट (₹. लाखमा) |
|-----|---|---|---|--|---|--------------------------|--------------------|
| ४.१ | जटामसीको दिगो संरक्षण तथा व्यवस्थापनका लागि अहारिकारक नियर्क्ष (NDF) तयार तथा परिमार्जन गर्ने । | • तयार गरेको NDF • जटामसीको निश्चिरत केता • साईटस सञ्चालनपा भेष गरेको प्रतिवेदन | • विवि को निर्णय • साईटस सञ्चालनपा वेभपेज | जटामसीको स्रोत सर्वेक्षण भएको हुने | ३/३ वर्ष | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलान्ते |
| ४.२ | जटामसीको सङ्कलन तथा आन्तरिक ओसार पसार, विश्व निकासी र पैठारी सञ्चान्ती तथ्याहु अद्यार्थिक गर्ने । | • अद्यार्थिक तथ्याहु • अनुगमन सञ्चालन गर्ने । | • विवि, डिविका प्रतिवेदन • भन्तारका तथ्याहु • वन तथा भू-संरक्षण विभागको वेभपेज | विदेश निकासी तथा आन्तरिक ओसार पसार सुचारू भएको हुने । | प्रदेश वन निर्देशनालय र वन तथा भू-संरक्षण विभाग | २ | बजेट नलान्ते |
| ४.३ | स्वीकृत वन व्यवस्थापन योजनामा उल्लेखित परियापा वर्गमनिम जटामसीको सङ्कलन, ओसारपसार र निकासी भए तथाएकी अनुगमन गर्ने । | • अनुगमन सञ्चालन | • अनुगमन प्रतिवेदन • डिविका प्रतिवेदन • वन तथा भू-संरक्षण विभागको वेभपेज | विदेश निकासी तथा आन्तरिक ओसार पसार सुचारू भएको हुने । | प्रदेश वन निर्देशनालय र वन तथा भू-संरक्षण विभाग | २ | बजेट नलान्ते |
| ४.४ | सूचना प्रविधिमा अधारित कम्प्युटर सफ्टवेयरद्वारा अनुगमणीय पद्धति (traceable system) को विकास गरी समूही कोरोबार लाई पारदर्शी बनाउने । | • निर्माण भएको अनुगमणीय पद्धति • पारदर्शी कारोबार | • सफ्टवेयर अवलोकन • वन तथा भू-संरक्षण विभागको वेभपेज | बजेटको सिमितता र सफ्टवेयर सञ्चालनमा प्राविधिक जानको कमी हुन सक्ने । | तेस्रो वर्षदिवि निर्नार विभाग | वन तथा भू-संरक्षण विभाग | २ |
| ४.५ | जटामसीको दिगो सङ्कलन वारे जडीबैठी सङ्कलनकर्ता, व्यापारी लगायतका सरकार वालासंग अन्तर्किया गर्ने । | • अन्तर्किया संख्या • सरोकारवाला सञ्चालन | • अन्तर्किया मार्फत • डिविजन वन कार्यालय र वन तथा भू-संरक्षण विभागका प्रतिवेदनहरू | भौगोलिक विकटाले गर्दा द्याप्रमाणका सङ्कलकसंग अन्तर्किया गर्न अच्छो हुन सक्ने । | प्रदेश वन निर्देशनालय र वन तथा भू-संरक्षण विभाग | २ | बजेट नलान्ते |
| ४.६ | सरोकारवालालाई असल सङ्कलन आञ्चासको तालिम प्रदान गर्ने र किल्डमा सो वर्माइजम सङ्कलन मैं नमाझको बाट समय समयमा अनुगमन गर्ने । | • तालिममा सहभागी सख्या • अनुगमन सञ्चालन | • तालिमको लागि तयार गरेको सामग्री • अनुगमन प्रतिवेदन • विवि, वर्थके, डिविकाको प्रतिवेदन | तालिमको लागि तयार सम्बुद्धयस्ता सेवापुळ अनुगमन गर्ने सूचक र बजेटको कमी हुन सक्ने । | प्रदेश वन निर्देशनालय र वन तथा भू-संरक्षण विभाग | १ | बजेट नलान्ते |
| ४.७ | साईटसमा स्थावरकूल वनस्पतिका व्यवस्थापन निकायले प्रदान गरको निकासी अनुमति प्राप्ता उल्लेखित परिमाण वर्माइजम जटामसीको निकासी भए तथाएको अनुगमन वैज्ञानिक निकायले गर्ने । | • अनुमतिप्राप्ता उल्लेखित परिमाण • निकासी परिमाण • अनुगमन सञ्चालन | • व्यवस्थापन निकायको अनुमतिप्राप्ता भन्तारको निकासी तथ्याहु • वनस्पति विभागको अनुगमन प्रतिवेदन | सबै विवरण भन्तार कार्यालयबाट तत्कालै प्राप्त गर्न गाहो हुन सक्ने । | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | २ | बजेट नलान्ते |
| ४.८ | जटामसीको व्यापार अवस्था सञ्चारदर्ती वार्षिक प्रतिवेदन तयार गर्ने । | • वार्षिक प्रतिवेदन | • साईटस सञ्चालनपा वेभसाईट | व्यवस्थापन निकायले वार्षिक प्रतिवेदन तयार नारको हुन सक्ने । | वर्षनी | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलान्ते |
| ४.९ | साईटसको वनस्पति वैज्ञानिक निकाय तथा व्यवस्थापन निकायबाट साईटसको महासभा (COP) मा सहभागी हुने । | • साईटस सञ्चालनपा वेभसाईट • सहभागी सञ्चालन | • साईटस सञ्चालनपा वेभसाईट • सहभागी पश्चात जुँगाइएको प्रतिवेदन | सहभागिताको लागि बजेटको अमाव छुन सक्ने । | ३/३ वर्षमा | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलान्ते |

रणनीति ५: जटामसी संरक्षणका लागि सचेतना तथा जनसहभागिता अभिवृद्धि गर्ने ।

| रणनीति ५: जटामसी संरक्षणका लागि सचेतना तथा जनसहभागिता अभिवृद्धि गर्ने । | | | | | | |
|---|--|------------|--|--|---------------------------------|---------|
| सि. नं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकांकहरू | प्रमाणीकरणका आधारहरू | अनुमान/जोखिम | समयावधि | दायित्व |
| ५.१ | जटामसी पहिचान गर्ने तरिका, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण तथा यस सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था बारे गोष्ठी तथा तात्पत्रम जस्ता सचेतनामुलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | | <ul style="list-style-type: none"> • तालिम / गोष्ठीको लागि तथार गरेको सामग्री • तालिम / गोष्ठीको उपस्थिति • वाच, वाक्य, डिवकाको प्रतिवेदन | जटामसीसँग सम्बन्धित स्रोकारवाला, समदाय जटामसी संरक्षणमा सञ्चेत भई यसको दिग्गो व्यवस्थापनमा देवा पुर्ने | वर्षेनी वर्षना भू-संरक्षण विभाग | ५ |
| ५.२ | जटामसीको पहिचान, दिगो सङ्कलन, सरक्षण सम्बन्धी Booklets, Pamphlets, Brochure, Monograph, डक्मेन्ट्री आदि प्रकाशन तथा प्रसारण गरी सचेतना अभिवृद्धि गर्ने । | | <ul style="list-style-type: none"> • वाच, वाक्यको प्रतिवेदन • लेख • डक्मेन्ट्री | बजेटको अपर्याप्तता हुन सक्ने | वर्षेनी वर्षना भू-संरक्षण विभाग | २ |
| ५.३ | विद्यालयहरूमा जटामसीको पहिचान, महत्व, उपयोगिता, संरक्षण सम्बन्धी कानूनी व्यवस्था बारे सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने । | | <ul style="list-style-type: none"> • विद्यालय संख्या • उपस्थित विद्यार्थी संख्या | बजेटको अपर्याप्तता हुन सक्ने | वर्षेनी वर्षना भू-संरक्षण विभाग | २ |
| ५.४ | स्व-स्थानीय एवं पर-स्थानीय सरक्षणका लागि स्थानीय समदाय र सम्बन्धित स्रोकारवालाहरूको पहिचान गरी तालिम प्रदान गर्ने । | | <ul style="list-style-type: none"> • तालिमको लागि तथार गरेको सामग्री • तालिमको उपस्थिति • वाच, वाक्य, डिवकाको प्रतिवेदन | बजेटको अपर्याप्तता हुन सक्ने | वर्षेनी वर्षना भू-संरक्षण विभाग | ५ |
| ५.५ | जटामसी संरक्षण कार्ययोजना वारे सरोकारवाला हरूलाई अभिमुखीकरण गर्ने । | | <ul style="list-style-type: none"> • अभिमुखीकरणमा संलग्न सरोकारवाला संख्या • वाच, वाक्य, डिवकाको प्रतिवेदन | बजेटको अपर्याप्तता हुन सक्ने | वर्षेनी वर्षना भू-संरक्षण विभाग | २ |

| रणनीति ६: जटामसीको संरक्षण तथा दिगो व्यवस्थापनका लागि अध्ययन, अनुसन्धान तथा नवीनतम प्रविधि विकास गर्ने । | | | | | | |
|--|--|--|--|---|----------------|--------------------------|
| सि. नं. | कार्यनीति/क्रियाकलाप | सूचकहरू | प्रमाणीकरणका आधारहरू | अनुमान/जोखिम | समयावधि | दाखिल |
| ६.१ | जटामसीमा लाग्न सबै रोग, कीरा साक्षरत्मा अध्ययन, अनुसन्धान गर्ने । | • अनुसन्धान विधि • लाग्ने रोग, कीराको सूची | • वावि, वअके, वभूविको प्रतिवेदन • लेख | बजेटको अपर्याप्तता हुन सबै | वर्षना | वन तथा भू-संरक्षण विभाग |
| ६.२ | जटामसीको दिगो व्यवस्थापनको लागि अध्ययन, अनुसन्धानद्वारा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रमा पाइने जटामसीको वाह्य संरचनागत विविधता (morphological variation), वशाणगत गुण तथा रसायनिक तत्वहरूको अन्वेषण गरी भौगोलिक क्षेत्र विशेष गुणस्तर मापदण्ड तयार गर्ने । | • स्वीकृत गुणस्तर मापदण्ड | • वावि को प्रतिवेदन • वावि को वेभसाइट अवलोकन | मन्त्रालयबाट मापदण्ड स्वीकृत भएको हुने | चौथो वर्ष | वन तथा वातावरण मन्त्रालय |
| ६.३ | जटामसी सम्बन्धी परम्परागत ज्ञानको अभिलेखीकरण र प्रमाणीकरण गरी साक्षे आधारमा जैविक अन्वेषण गर्ने । | • अभिलेखीकरण सूची • प्रमाणीकरण सूची • जैविक अन्वेषण सूची | • वावि को प्रतिवेदन | स्थानको वारेमा अभिलेखीकरण गर्न सहयोग प्राप्ताउने अनुमान | २/२ वर्षमा | वन तथा वातावरण मन्त्रालय |
| ६.४ | जटामसीको प्रशोधन तथा मूल्य अभिवृद्धि साक्षरत्मा अध्ययन, अनुसन्धान गर्ने । | • प्रयोगशालाको SOP • प्रशोधन गरेको परिमाण | • प्रयोगशाला अवलोकन • अनुसन्धान प्रतिवेदन • वावि, वअके, नेचिप्रको प्रतिवेदन | उद्योग अनुगमन गर्ने उद्योगीले सहजीकरण गर्ने अनुमान | वर्षना | वन तथा भू-संरक्षण विभाग |
| ६.५ | जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय बजार पहिचान र प्रवर्द्धन गर्ने । | • अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारको विवरण • बजार विविधिकरणको विवरण | • वन तथा भू-संरक्षण विभाग २ वनस्पति विभागको प्रतिवेदन • व्यापार तथा निकासी प्रवर्द्धन केन्द्रको वेभपेज २ तथाङ्क | • साइरिट्स सञ्चिकालयबाट निरस्तर सहयोग पुगेको हुने • युरोपियन यूनियनबाट सकरात्मक सहयोग हुने | २ वर्षमा १ पटक | वन तथा भू-संरक्षण विभाग |

जम्मा

रणनीति ७ : जटामसीको न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारको अम्बासहरु (Fair, Responsible and Ethical Trade) लाई बढावा दिने ।

| सि. नं. | कार्यनीति / क्रियाकलाप | सूचकहरु | प्रमाणीकरणका आधारहरु | अनुमान / जोखिम | समयावधि | दाखिला | बजेट (लाखरुपा) |
|---------|---|--|--|---|-------------------------|--------------------------|----------------|
| ७.१ | अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड वर्मोजिम नेपालको लागि मापदण्ड तयार गरी लागू गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> अङ्गयन गरिएको अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्डको सूची नेपालको लागि स्वीकृत मापदण्ड नेपालको स्वीकृत मापदण्ड | <ul style="list-style-type: none"> वावि, वअके प्रतिवेदन र वेभपेज वावि, वअके प्रतिवेदन र वेभपेज | जटामसीको अन्तर्राष्ट्रिय बजार राम्रो हुने र नेपालको जटामसीले उच्च मूल्य प्राप्त गर्ने | वर्षेनी | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलागर्ने |
| ७.२ | दिग्गो व्यवस्थापन, सामाजिक उत्तर दायित्व, न्यायोचित व्यापार र सोइको अनुमागणीय (traceability) सम्बन्धी निर्देशका तयार गरी लागू गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> स्वीकृत निर्देशिका स्वीकृत निर्देशिका | <ul style="list-style-type: none"> वावि, वअके, वभूवि प्रतिवेदन र वेभपेज वावि, वअके, वभूवि प्रतिवेदन र वेभपेज | अन्तर्राष्ट्रिय बजार बढाउने र उच्च मूल्य प्राप्त गर्ने | वर्षेनी | वन तथा वातावरण मन्त्रालय | बजेट नलागर्ने |
| ७.३ | न्यायोचित, उत्तरदायी र नैतिक व्यापारका अभ्यास सञ्चालनमा सरकारी निकाय, समुदाय तथा अन्य सम्बन्धित सरकारवालाहरुको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> सरकारवालाको संख्या अन्तर्राष्ट्रिय तालिम संख्या सहभागी सरकारवालाहरुको संख्या | <ul style="list-style-type: none"> अन्तर्राष्ट्रिय तालिम माइन्युट वावि, वअके, वभूवि प्रतिवेदन | वर्षेनी | वन तथा भू-संरक्षण विभाग | ? | ? |
| ७.४ | मापदण्डको आधारमा जिल्लाको आवधिक वन व्यवस्थापन योजना संख्या गर्ने (IEE समेत) । | <ul style="list-style-type: none"> आवधिक वन व्यवस्थापन योजना संख्या स्वीकृत IEE प्रतिवेदन र गुणस्तर | <ul style="list-style-type: none"> आवधिक वन व्यवस्थापन योजना संख्या IEE स्वीकृत प्रतिवेदन प्रदेश स्थित वन सम्बन्धी मन्त्रालयको प्रतिवेदन | वातावरण संरक्षण ऐन तथा नियमावली बमोजिम वन व्यवस्थापन कार्ययोजनाको वातावरणीय परिक्षण भएका हुने | २ वर्षमा १ पटक | प्रदेश वन मन्त्रालय | ५ |
| ७.५ | मापदण्ड अनुसारको व्यापार प्रवर्द्धन तथा प्रमाणीकरणका लागि समुदाय र निझी क्षेत्रलाई सहयोग गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> पहिचान गरिएको समुदाय / निझी क्षेत्र सूची प्रदान गरिएको सहयोगको किसिम र परिमाण | <ul style="list-style-type: none"> पहिचान वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालयको प्रतिवेदन र वेभपेज डिपिजन वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालयको प्रतिवेदन र वेभपेज | यथेष्ट बजेट विनियोजन भएको हुने | २ वर्षमा १ पटक | प्रदेश वन मन्त्रालय | बजेट नलागर्ने |
| ७.६ | मापदण्डको आधारमा प्रमाणित वस्तुको व्यापार प्रवर्द्धनमा सहयोग गर्ने । | <ul style="list-style-type: none"> प्रदान गरिएको सहयोगको किसिम र परिमाण | <ul style="list-style-type: none"> डिपिजन वन कार्यालय र प्रदेश वन निर्देशनालयको प्रतिवेदन र वेभपेज | यथेष्ट बजेट विनियोजन भएको हुने | २ वर्षमा १ पटक | प्रदेश वन मन्त्रालय | बजेट नलागर्ने |
| जम्मा | | | | | | | |
| ९ | | | | | | | |
| १०५ | | | | | | | |



नेपाल सरकार
वन तथा वातावरण मन्त्रालय
बनस्पति विभाग
थापाथली, काठमाडौं
२०८०

